श्री कुलजम सरूप

निजनाम श्री जी साहिब जी, अनादि अछरातीत।
सो तो अब जाहेर भए, सब विध वतन सहीत।।

रास

श्री श्री श्री ग्रन्थ रास किताब अंजील वाणी पुरानी
प्रमोध पुरी हवसा मध्य उतरी सो शुरू हुई।। चाल।।

पारब्रह्म अक्षरातीत श्री राजजी महाराज तथा उनके आनन्द अंग श्री श्यामाजी महारानी व बारह हजार ब्रह्मसृष्टियों ने प्रेम की जो आनन्द लीला केवलब्रह्म के अन्दर की, उसका वर्णन इस रास ग्रन्थ में किया गया है। पुरानी इंजील वाणी को बाइबिल (New Testament) कहते हैं। इसमें प्रेम को पारब्रह्म का स्वरूप माना गया है, अर्थात् गॉड इज लव एण्ड लव इज गॉड (God is Love and Love is God)। इसमें छिपे भेदों को खोलने के लिए उस इंजील का नाम "रास" रखा है जिसमें आत्मा और परमात्मा का मिलन स्पष्ट बताया है। यह वाणी प्रमोध पुरी हवसा (नौतनपुरी–जामनगर में) उतरी, उसका वर्णन शुरू होता है।

धाम के धनी श्री प्राणनाथजी महाराज सम्वत् १७२२ में सुन्दरसाथ को जगाने के लिए जागनी यात्रा में दीपबन्दर में जयराम भाई कन्सारा के यहां पहुंचे तो देखा कि श्री देवचन्द्रजी द्वारा जगाई हुई आत्मा (जयराम कन्सारा) ज्यों का त्यों माया में भूला पड़ा है। यह पहले पांच रास के प्रकरण उसे माया में से निकाल कर धाम धनी और निज घर की याद कराने के लिए उतरे। यह उपदेश सब साथ के लिए मार्ग-दर्शन के वास्ते हैं। इन पांचों प्रकरणों के बाद में जयराम भाई की आत्मा को दुबारा जगाकर बतलाया है। इससे आगे की वाणी हवसा में उतरी, सो उनको सुनाई। हे साथजी! पहली बार ब्रज में तथा दूसरी बार रास खेलने के बाद जब परमधाम में हम जागृत हुए और धाम धनी से पूरी माया देखने की चाह की, तो तीसरी बार जागनी (कालमाया) के ब्रह्माण्ड में हम सब आकर निज घर की लीला, धनी धाम को भूल गए। तो सोई हुई आत्माओं को (१) भवसागर मोहजल की पहचान पहले प्रकरण में कराई, (२) दूसरे प्रकरण में माया से जागना कैसे है, बतलाया, (३) तीसरे प्रकरण में माया के हट जाने पर जीव को जगाने का रास्ता बताया (४) चौथे प्रकरण में अपने धनी श्री राजजी महाराज से माया में रहकर प्रेम करना बतलाया, तथा (५) पांचवें प्रकरण में कालमाया को छोड़कर धनी की मधुर ध्वनि सुनते हैं—कैसे हमें संसार को छोड़ना है, बतलाया है और आगे हवसा में श्री श्यामाजी के रास वाले शृंगार की अवतरित वाणी को सुनाकर आत्मा जागृत की।

हवे पेहेलां मोहजलनी कहूं वात, ते ता दुखरूपी दिन रात।
दावानल बले कई भांत, तेणी केटली कहूं विख्यात।। १ ।।

अब सबसे पहले भवसागर (मोहजल) की बात कहती हूं। वह (मोहजल) तो पल-पल, दिन-रात, दुःख ही दुःख का घर है। इसके अन्दर चारों ओर जंगल में दावानल (अग्नि)—जो दो लकड़ी की रगड़ से ही अपने आप लगती है और बुझती है, लगी हुई है। ईर्ष्या, द्वेष, काम, क्रोध, मोह, लोभ, मद, मत्सर,

Nijanand App

इत्यादि की आग में सब जल रहे हैं। इसकी हकीकत का कहां तक बयान करूं? यह आग हम अपने अन्दर लगा लेते हैं और जलते रहते हैं।

विस्वने लागी जाणे व्राध, माहें अगिन बले अगाध।
ते ता पीडे दुष्ट ने साध, नहीं अधखिणनी समाध।। २ ।।

यह मोहमाया संसार को न मिटने वाले रोग की तरह लगी है। इसके अन्दर न बुझने वाली काम, क्रोध, लोभ, मोह की अथाह, अपार अग्नि जल रही है। यह साधु, सन्त, पापी तथा दुष्ट सभी को सता रही है। इस कारण से आधे पल के लिए भी किसी को मानसिक शान्ति नहीं मिलती है।

कृपा करोछो अमज तणी, सिखामण देओ छो अतिघणी।
अहनिस लेओ छो अमारी सार, तो मोहजल उतरसूं पार।। ३ ।।

हे धाम के धनी ! आप हम सुन्दरसाथ पर कृपा करते हो और कई प्रकार से समझाते हो तथा दिन-रात पल-पल हमारी खबर लेते रहते हो, इसलिए हम भवसागर से पार उतर जाएंगे।

ए माया छे अति बलवंती, उपनी छे मूल धणी थकी।
मुनिजनने मनाव्या हार, सिव ब्रह्मादिक न लहे पार।। ४ ।।

यह माया बहुत शक्तिशाली है क्योंकि यह धाम धनी (अक्षरातीत) की आज्ञा से उत्पन्न हुई है (हमेशा माया अक्षर ब्रह्म के हुक्म से संसार बनाती है)। इस माया में ऋषि-मुनि भी हार गए। यहां तक कि शंकर (महादेव) भगवान तथा ब्रह्मा, आदि भी इसको नहीं जीत सके।

सुक सनकादिक ने नव टली, लखमी नारायण ने फरीवली।
विष्णु वैकुंठ लीधां माहें, सागर सिखर न मूक्या क्यांहें।। ५ ।।

शुकदेव मुनि तथा सनकादिक ऋषियों (सनक, सनन्दन, सनातन, सनत कुमार) को भी इसने नहीं छोड़ा। लक्ष्मी और नारायण जो जगत के परमात्मा हैं, को भी इस माया ने अपने फन्दे में फंसा रखा है। बैकुण्ठ में बैठे विष्णु भगवान को भी अपने अन्दर ले लिया है, अर्थात् समुद्र से पहाड़ की चोटी तक (पाताल से बैकुण्ठ व नारायण भगवान—सम्पूर्ण क्षर पुरुष) किसी को नहीं छोड़ा।

ए ऊपर हवे सूं कहूं, बीजा नाम ते केहेना लऊं।
एणे वचने सरवालो थयो, ब्रह्मांडनो धन सर्वे आवयो।। ६ ।।

इसके ऊपर अब क्या बाकी रहा जिसका नाम लूं। इन वचनों से सब कुछ आ गया और सारे क्षर पुरुष के ब्रह्माण्ड की शक्तियां आ गईं।

तत्व सहु एणीए जीती लीधां, चौद लोक पोतानां कीधां।
वली लीधो तत्व मोह, जे थकी उपन्या सहु कोए।। ७ ।।

इस माया ने सभी पांच तत्वों (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश) को जीत रखा है और चौदह लोकों की सृष्टि को भी अपने वश में कर रखा है, अर्थात् पाताल, रसातल, महातल, तलातल, सुतल, वितल, अतल, भूलोक, भुवर्लोक, स्वर्गलोक, महर्लोक, जनलोक, तपलोक व सतलोक अर्थात् बैकुण्ठ और फिर इसके ऊपर मोह तत्व (निराकार) जिससे सारे संसार की उत्पत्ति हुई है, को अपने फन्द में घेर रखा है।

साखी—
कहे इंद्रावती वल्लभा, ए माया छे अति छल।
हवे जुध मांड्यूं छे अमसूं, एहेनो कह्यो न जाय बल।। ८ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे धनी! यह माया बहुत ही छल, कपट वाली है। इसने हमसे लड़ाई छेड़ रखी है। इसकी ताकत का वर्णन किया नहीं जा सकता।

Nijanand App

एहना आउध अमृत रूप रस, छल बल वल अकल।
अगिन कुटिल ने कोमल, चंचल चतुर चपल।। ९ ।।

इसके छलने वाले मीठे वचन, सुन्दर रूप, रसीली वस्तुएं, कपटपूर्ण शक्ति, दाव-पेंच, बुद्धि की चतुराई, क्रोधाग्नि, दुष्टता, नर्म स्वभाव, चंचलता, चतुराई और चालाकी हथियार हैं।

चाल—
हवे एहनो केटलो कहूं विस्तार, जोरावर अति अपार।
मोसूं जुध मांड्यूं आसाधार, जुध करे छे वारंवार।। १० ।।

अब आप बताओ, इसका और कितना वर्णन करें? यह अति शक्तिशाली है। इसने मेरे से लगातार यूं लड़ाई ठान रखी है तथा बार-बार मुझ पर हमला करती है।

एहेने लाग्यो कोई एवो खार, मारो केड न मूके नार।
में बांध्यां सामां हथियार, तो जाण्यो जोपे एहेनो मार।। ११ ।।

इसको मेरे से ऐसी चिढ़ (ईर्ष्या) हो गई है कि यह माया मेरा पीछा नहीं छोड़ती है। इसलिए मैंने भी इससे लड़ने के लिए हथियार संभाले हैं, तो इस माया के (वार) चोट को अच्छी तरह समझ पाई हूं।

एणे समे जे अममां वीती, केटली कहूं तेह फजीती।
में तो रुडी रीते ग्रहीती, पण मूने लीधी जीती।। १२ ।।

इस युद्ध के समय जो मेरे ऊपर बीती, उस दुर्गति (फजीहत) का मैं कहां तक वर्णन करूं? मैंने तो सेवा का एक अच्छा रास्ता समझकर माया में कदम बढ़ाया था, परन्तु फिर भी इसने मुझे जीत लिया। (सही रास्ते पर नहीं चलने दिया)

बाहें ग्रही लई निसरी, में त्रण जुध कीधां फरी फरी।
पछे गत मत मारी हरी, लई वस पोताने करी।। १३ ।।

इस माया ने मेरा बाजू पकड़कर खींच लिया मैंने भी बार-बार तीन युद्ध किए। पहला—अरब में खेता भाई के काम को जाना और लौटने पर धनी देवचन्द्रजी का प्रणाम स्वीकार न करना, दूसरा—श्री फूलबाईजी का सुन्दरसाथ के लिए त्याग करना, तीसरा—सुन्दरसाथ को इकट्ठा करके उनकी सेवा करने का उपाय करना और जिसके फलस्वरूप हबसा में जाना पड़ा। अन्त में प्रेम दरवाजा अहमदाबाद से भेष बदलकर बाहर निकलना पड़ा और इस माया ने मुझे भुला दिया और अपने अधीन किया।

तमे अनेक सिखामण कही, पण भरम आडे में कांई नव ग्रही।
मोसूं एवी तोहज थई, जो वाणी तमारी में नव लही।। १४ ।।

हे धाम धनी ! आपने तो अनेक तरह से समझाया, पर माया के जाल के कारण मैं आपके ज्ञान को ग्रहण नहीं कर सकी। मुझसे फिर भी इतनी भूल हुई कि मैं आपके वचनों को समझ न सकी।

तमे पेरे पेरे समझावी, मूने तोहे बुध न आवी।
जुगते करीने जगावी, लई तारतमे लगावी।। १५ ।।

आपने अनेक प्रकार से समझाया, किन्तु मुझे फिर भी समझ नहीं आई। आपने कई प्रकार के उपाय करके मुझे जगाया (अर्थात् शास्त्रों-पुराणों की गवाहियां दे देकर समझाया) पर मैं न समझ पाई। अन्त में आपने जागृत बुद्धि तारतम ज्ञान में लगा लिया।

Nijanand App

तमे अंतरगते दीधां द्रष्टांत, त्यारे भागी मारा मननी भ्रांत।
हवे तमे आव्या एकांत, संसार दसा थई स्वांत।। १६ ।।

आपने दृष्टान्तों के बातूनी अर्थ समझाए, तब मेरे मन की शंकाएं दूर हुई। अब आप मेरे हृदय में विराजमान हो गए हैं, इस कारण से मायावी झंझटों से मैं छूट गई।

ज्यारे धणी धणवट करे, त्यारे बल वेरी ना हरे।
वली गया काम सराडे चढ़े, मन चितव्या कारज सरे।। १७ ।।

हे धनी ! जब आप पतिपना निभाते हैं, तब यह माया जो हमारी दुश्मन है, इसकी सब शक्तियां नष्ट हो जाती हैं और हमारे सब बिगड़े काम सीधे हो जाते, अर्थात् संभल जाते हैं तथा हमारे मन के चाहे समस्त काम पूरे हो जाते हैं।

साखी–
मायाना मुख माहें थी, जुगते काढी जोर।
दई तजारक अतिघणी, माया कीधी पाधरी दोर।। १८ ।।

हे धनी ! आपने अच्छे ढंग से माया के फन्द से मुझे निकाला और माया के सिर पर ऐसी चोट मारी कि माया मुझे छोड़कर भाग गई।

धणीना जेम धणवट, लीधी भली पेरे सार।
आ दुख रूपणीना मुख माहें थी, बीजो कोण काढे बिना आधार।। १९ ।।

हे धनी ! जैसा एक पति को पतिपना निभाना चाहिए, ठीक उसी प्रकार आपने मेरी संभाल की। हे धनी! इस दुःखरूपी माया में से आपके बिना दूसरा कौन निकाल सकता था ?

चाल–
तमे कृपा कीधी अति घणी, जाणी मूल सगाई घरतणी।
माया पाडी पडताले हणी, बल दीधूं मूने मारे धणी।। २० ।।

आपने मूल परमधाम की अंगना का सम्बन्ध जानकर अत्यन्त कृपा की जो मेरे अन्दर बैठकर इतनी शक्ति दे दी कि इतनी बलवती माया को मैंने पैर से ठोकर मारकर कुचलकर नाश कर दिया।

वली गत मत आवी सुधसार, छल छूटो ने थयो करार।
दयानो नव लाधे पार, त्यारे अलगो थयो संसार।। २१ ।।

अब फिर से माया छूट गई और मैं निश्चिन्त हो गई जिससे मेरी भूली हुई सुध-बुध आ गई। आपकी इस महान् कृपा से ही मैं संसार के झंझटों से मुक्त हो गई।

हवे आव्यूं धन अविनासी, दुख दावानल गयूं नासी।
रुदे ग्रहूं लीला विलासी, हवे ते हूं करूं प्रकासी।। २२ ।।

अब अखण्ड धन (पच्चीस पक्षों की अखण्ड वाणी) सदा सत्य रहने वाला आ गया और जंगल की अग्नि (दावानल) के समान माया का दुःख दूर हो गया। अब हृदय में परमधाम की प्रेममयी लीला को लेकर संसार में ज़ाहिर करती हूं।

हवे ए धन में जोपे जाण्यूं, जिभ्याए न जाय वखाण्यूं।
मारा हैडामां आण्यूं, अम विना कोणे न माण्यूं।। २३ ।।

अब इस वाणी रूपी धन को मैंने अच्छी तरह समझ लिया। इसका इस जिह्वा से वर्णन सम्भव नहीं है। इसको मैंने अपने हृदय में धारण कर लिया है, इसको मेरे बिना कोई नहीं जान सका।

Nijanand App

साखी— बल नथी आंहीं अमतणूं, नहीं अमारे वस।
ए निध आवी तम थकी, ते में चित कीधूं चोकस।। २४ ।।

मुझे यह विश्वास हो गया है कि मेरे पास अपनी कोई शक्ति नहीं थी और न कोई हमारे वश की ही बात थी। यह सब न्यामत का खजाना आपने ही दिया है।

में चित मांहें चितव्यूं, जाण्यूं करसूं सेवा सार।
मल्यो धणी मूने धामनो, सुफल करूं अवतार।। २५ ।।

(हबसा जाने से पहले) यह जानकर कि मुझे धाम के धनी मिल गए हैं, मैंने अपना जीवन सफल करने के लिए सुन्दरसाथ की सेवा करने का विचार मन में लिया।

जे मनोरथ मनमां रह्यो, मारा धणी श्रीराज।
खरुं करतां खोटा मांहेंथी, पण नव सिध्यूं एके काज।। २६ ।।

मेरे मन में झूठे संसार में से पैसा कमाकर सेवा करने का जो शुभ विचार आया था, हे धनी ! उन सब विचारों में से एक भी कार्य न हो सका।

में मारूं बल जाण्यूं, हूं तो छूं अति मूढ।
ए थाय सर्वे धणी थकी, ते में कीधूं दृढ।। २७ ।।

मुझे अब यह विश्वास हो गया है कि यहां जो भी होना है, धनी की आज्ञा से ही होना है। मैंने जो यह सोचा था कि अपने बल से सेवा करूं, वह केवल मेरा भ्रम था।

ढाल— मूने दुख साले ए मन मांहें, नव जाय कह्यो ते क्यांहें।
गमे तमने तेहज थाय, बीजे सामूं कोणे न जोवाय।। २८ ।।

वह बात मेरे मन में खटकती रहती है और कहनी में नहीं आती। हे धनी ! यहां वही होता है जो आप चाहते हैं। आप जैसा समर्थ दूसरा कोई दिखाई नहीं देता, क्योंकि कोई है ही नहीं।

ए दुख लाग्यूं मूने सही, ए उत्कंठा मारा मनमां रही।
एणी दाझे ते मूने दही, निध हाथथी निसरी गई।। २९ ।।

सुन्दरसाथ की सेवा करने का जो अवसर हाथ से निकल गया इसका मुझे बहुत दुःख है। मेरे मन की चाहना (सुन्दरसाथ की सेवा) मेरे मन में रह गई, जिसकी जलन से मैं दुःखी हूं।

जाण्यूं लाभ मायानो लेसूं, निद्राने वांसो देसूं।
धणीने चरणे रेहेसूं, माया केहेसे ते सर्वे सेहेसूं।। ३० ।।

मैंने सोचा था कि सुन्दरसाथ की सेवा का लाभ माया में लूंगी और धनी के चरणों में रहूंगी, माया से विमुख होने में जो भी संकट आएंगे उन्हें सहन करूंगी।

एणे समे वली फेरवी लीधी मायाए सिखामण दीधी।
धणी थकी विमुख कीधी, पाणीना जेम पीधी।। ३१ ।।

इस समय माया ने ऐसी चोट मारी कि मुझे धनी से विमुख कर फिर से अपने फन्दे में फंसाकर पानी की तरह पी गई।

Nijanand App

एहेवो छल करी छेतरी, मन मूल माहेंथी फेरी।
एणे तो आप सरीखी करी, चित्त चितवणी बहुविध धरी।। ३२ ।।

इस प्रकार का कपट कर माया ने ठगा और सुन्दरसाथ की सेवा से मन फिराकर अपने समान बना लिया तथा मेरे मन की इच्छा मन में ही रह गई।

मन मांहें सवलुं देखे, जाणे माया सुख अलेखे।
धणीना सुख न पेखे, विख अमृत लागे विसेखे।। ३३ ।।

मैंने सब विचार करके सोचा था कि माया में सुन्दरसाथ की सेवा से सम्मान प्राप्त करने का सुख ही सबसे बड़ा है और इस तरह से धनी के अखण्ड सुखों को छोड़कर झूठे सम्मान के सुख को अच्छा समझा था।

जुओ भूलवी छेतरे केम, आगे छेतरी मूने जेम।
सुकजी तो पुकारे एम, जे छल पुरी ए भरम।। ३४ ।।

देखो! यह माया किस तरह से भुलाकर ठगती है, जैसा कि इसने मुझे पहले भी ठगा है। इस बात की गवाही शुकदेव मुनि भी देते हुए कहते हैं कि माया छल और भ्रम से भरी हुई है।

आंहीं सोहेली थई तम थकी, एहेने ओलखतूं कोय नथी।
सुकदेवें तो कांईक कथी, बीजा रह्या मथी मथी।। ३५ ।।

हे धनी ! यह माया जिसको आज दिन तक कोई पहचान नहीं पाया है, यह आपकी कृपा से अब सरल हो गई, क्योंकि हमने इसे पहचान लिया। शुकदेव जी ने तो इसकी कुछ पहचान कराई भी है पर दूसरे तो इसका मन्थन ही करते रहे, कुछ भी बोल नहीं पाये।

एहेने निरमूल करी नाखी तमे, हजी जोपे जाणी नथी अमे।
एहेना रमाड्यां सहु रमे, मांहें बंधाणां सहु को भमे।। ३६ ।।

इस माया को आपने जड़ से ही नष्ट कर डाला है, फिर भी हमने इसको अच्छी तरह से नहीं जाना कि माया अब हमारा कुछ नहीं बिगाड़ सकती। इस संसार के जीव माया के चक्कर में ही घूमते हैं और इसके बन्धन में ही बंधे हुए फिरते हैं।

ए वचन तो आंहीं केहेवाय, जे अमे न बंधाऊं मायाय।
एहना बंध पड्या सहु कायाय, अमे छूट्या धणीनी दयाय।। ३७ ।।

यह वचन मैं इसलिए कह रही हूं कि अब मैं धनी की कृपा से माया के बन्धन से छूट गई हूं, अन्यथा सारे जगत के मानव शरीरों को इसने अपने जाल में बांध रखा है।

एम चौद लोकमां कोई नव कहे, जे पार मायानों आ लहे।
मोटी मत धणीमां रहे, बीजा भार पुस्तक केरा वहे।। ३८ ।।

इस चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में ऐसा कोई नहीं कहता है कि उसने माया को जीत लिया है, क्योंकि जागृत बुद्धि का ज्ञान तो केवल धाम धनी श्री राजजी महाराज के पास ही है। बाकी दूसरे लोग संसार में पुस्तकों का बोझा ही ढो रहे हैं, क्योंकि बाकी सब ग्रन्थ स्वप्न की बुद्धि के हैं।

Nijanand App

साखी– सास्त्र पुराण वेदांत जो, भागवत पूरे साख।
नहीं कथा ए दंतनी, सत वाणी ए वाक।। ३९ ।।

६ शास्त्र १८ पुराण जिसमें भागवत भी शामिल है, इस बात की गवाही दे रहे हैं कि अक्षरातीत पारब्रह्म की सतवाणी तारतम ज्ञान से ही माया के बन्धन से छूट सकते हैं, जिसको पढ़कर मैं छूटी हूं। यह सत्य है। यह दन्तकथा नहीं है, पर बाकी सब दन्तकथाएं हैं।

आ वेराट माहें दीसे नहीं, पार वचन सुध जेह।
लवो मुख बोलाय नहीं, तो केम पार पामे तेह।। ४० ।।

इस चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में अक्षर और अक्षरातीत की पहचान कराने वाला कोई नहीं है। एक शब्द भी बेहद का नहीं बताते हैं तो सम्पूर्ण ज्ञान का पार कैसे बता सकते हैं?

चाल– हवे मायानों जे पामसे पार, तारतम करसे तेह विचार।
ब्रह्मांड मांहें तारतम सार, एणे टाल्यो सहुनो अंधकार।। ४१ ।।

अब जो तारतम वाणी को पहचानता है वही माया से पार जा सकेगा, अन्यथा नहीं। इस ब्रह्माण्ड में जागृत बुद्धि, तारतम ज्ञान ही सबसे श्रेष्ठ है, जिसने सारे जगत के अज्ञान के अन्धकार मिटाकर जागृत बुद्धि पराशक्ति का उजाला कर दिया, जो शास्त्रों में लिखा था—**तारतम्येन जानाति सच्चिदानन्द लक्षणं।**

लोक चौद मायानों फंद, सहु छलतणा ए बंध।
समझ्या बिना सहुए अंध, तारतम केहेसे सहु सनंध।। ४२ ।।

तारतम ज्ञान से ही सब भेद खुलते हैं कि चौदह लोकों का ब्रह्माण्ड ही माया का फन्दा है, जिससे छल व कपट से सब बिना समझे अन्धों की तरह बंधे जा रहे हैं।

नहीं राखूं संदेह एक, पैया कादूं सहुना छेक।
आ वाणी थासे अति विसेक, कहूं पारना पार विवेक।। ४३ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि यह तारतम वाणी ही खासकर श्रेष्ठ है जिससे शुरू से अन्त तक के सारे संशय मिट जाते हैं और उस पारब्रह्म अक्षरातीत, जो क्षर से पार अक्षर, अक्षर के भी पार परमधाम में हैं, का सही ज्ञान मिलता है।

न केहेवाय माया मांहें आ वाणी, पण साथ माटे कहेवाणी।
साथ आवसे रुदे आंणी, ते में नेहेचे कहूं जाणी।। ४४ ।।

वास्तव में इन चौदह लोकों का ब्रह्माण्ड इस वाणी के लेने का पात्र ही नहीं है, पर सुन्दरसाथ जो खेल देखने परमधाम से आये हैं, उनके लिए कहनी पड़ती है। यह मैं निश्चित रूप से जानती हूं कि सुन्दरसाथ के हृदय में जब यह वाणी उतरेगी तब ही (चरणों तले) आएंगे।

भारे वचन छे निरधार, साथ करसे एह विचार।
जो न कहूं सतनो सार, तो केम साथ पोहोंचसे पार।। ४५ ।।

यह वाणी जो साथ के लिए कह रही हूं, बहुत भारी वचन हैं, क्योंकि यह हद के पार बेहद और उसके पार अक्षर-अक्षरातीत के निज घर की वाणी है और उसका विचार भी ब्रह्मसृष्टि सुन्दरसाथ ही करेगा। यदि इस सत्य वाणी का सार (परमधाम पच्चीस पक्षों की पहचान) मैं न कहूं तो सुन्दरसाथ (ब्रह्मसृष्टि) अपने मूल घर कैसे वापस आएंगे?

Nijanand App

साखी– साथ मलीने सांभलो, जागी करो विचार।
जेणे अजवालूं आ कर्यूं, परखो पुरुख ए पार।। ४६ ।।

हे सुन्दरसाथजी ! सब मिलकर सुनो और होश में आकर के विचार करो कि जिसने यह जागृत बुद्धि का ज्ञान देकर अन्धकार हटाया, उस पारपुरुष अक्षरातीत धाम के धनी की पहचान करो।

आपण हजी नथी ओलख्या, जुओ विचारी मन।
विविध पेरे समझावियां, अने कही निध तारतम।। ४७ ।।

मन में विचार करके देखो कि हमने अभी तक भी (प्राणनाथ धाम के धनी) को पहचाना नहीं। धाम धनी ने तरह-तरह से समझाया तथा अपने और परमधाम की पहचान के लिए तारतम की अमूल्य न्यामत (ज्ञान) दी।

नित प्रते सहु साथने, वालो जी दिए छे ए सार।
दया करीने वरणवे, आपण आगल आधार।। ४८ ।।

सदा ही सब सुन्दरसाथ को वालाजी (श्री प्राणनाथजी महाराज धनी श्री देवचन्द्रजी के तन से) ने अति कृपा करके हमें सार वस्तु (अखण्ड) ज्ञान देते थे।

वृजतणी लीला कही, वली विसेखे रास।
श्रीधाम तणा सुख वरणवे, दिए निध प्राणनाथ।। ४९ ।।

ब्रज की लीला का वर्णन किया और खासकर रास की लीला का वर्णन किया तथा (श्री प्राणनाथजी श्री देवचन्द्रजी के तन से) परमधाम के सुखों का वर्णन करते थे।

हवे एह धणी केम मूकिए, वली वली करो विचार।
मूल बुध चेतन करी, धणी ओलखो आ वार।। ५० ।।

हे सुन्दरसाथजी ! बारम्बार विचार करो कि जिस धनी ने हमारी सोई हुई आत्मा को जागृत बुद्धि से जगाया है, उनकी इस बार पहचान करो। ऐसे धनी को हम कैसे छोड़ सकते हैं ?

आ जोगवाई छे जाग्या तणी, अने विचार माहें समझण।
जे समझो ते जागजो, पण आ अवसर अरधो खिण।। ५१ ।।

यह मनुष्य तन जागृत होने के लिए तथा विचार कर समझने के लिए मिला है। इसलिए समझ कर जागो, क्योंकि यह अवसर आधे पल के लिए ही है।

आगे धणी पधार्या अममां, अमे करी न सक्या ओलखांण।
ए निखरपणे निध निगमी, थई ते अति घणी हांण।। ५२ ।।

आगे धनी हमारे बीच तन धारण करके आए थे (श्री देवचन्द्रजी के तन में) जिनकी हम पहचान नहीं कर सके। हमने लापरवाही से इनको खो दिया जिससे अपना बहुत नुकसान हुआ।

आव्या धणी न ओलख्या, अमे भूल्या एणी भांत।
विना विचारे न समझ्या, निगमी निध साख्यात।। ५३ ।।

धनी आए, पर हमने पहचाना नहीं। इस बात की बड़ी भूल की और साक्षात् धाम धनी को बिना विचार किए खो दिया (अर्थात् श्री देवचन्द्रजी के तन को छोड़कर चले गए।)

Nijanand App

चाल— जो ए विचारिए एक वचन, तो अलगां थैए पासेथी केम।
दीजे प्रदखिणा रात ने दिन, कीजे फेरो सुफल धन धन।।५४ ।।

यदि हम उनके एक वचन पर भी विचार करते तो उनसे अलग नहीं होते। हम दिन-रात उनकी परिक्रमा देकर अपना जीवन सफल बनाते।

दीवे टाल्यो ज्यारे सुंन सोहाग, त्यारे पतंग पाम्यो वेराग।
कां झंपावी ओलवे आग, कां कायानो करे त्याग।।५५ ।।

यहां एक दृष्टान्त है कि पतंगे का सुहाग (पति) अंधेरा है। दीपक जलने पर अंधेरा मिट जाता है तो पतंगे को पति का विरह सताता है, इसलिए झांप मारकर दीपक को बुझाता है या अपने आपको उस पर मिटा देता है।

जुओ जीवतणी ए रीत, नव मूके अंधेरनी प्रीत।
धणी अमारो अछरातीत, अमे तोहे न समझ्या पतीत।।५६ ।।

हे सुन्दरसाथजी ! संसार का एक जीव अपने पति का वियोग (अन्धकार का) नहीं सहन कर सकता। अपने पति तो साक्षात् अक्षरातीत धाम के धनी हैं, पर हम इतने नीच हो गए कि धनी का वियोग सहन कर लिया।

हवे घर मांहें ऊंचूं केम जोसूं, हंसी कही वात न करी वर सूं।
ए धणी विना केने अनुसरसूं, हवे अमे रोई रोईने मरसूं।।५७ ।।

अब परमधाम जाने पर उस धनी के सामने कैसे मुंह ऊंचा करके देखूंगी, क्योंकि मैंने अपने धनी से कभी हंसकर मीठी-मीठी बातें नहीं कीं। अब उस धनी के बिना किसकी बात मानें? अब तो तड़फ-तड़फ कर ही मरना है।

ए अमारी वीतकनी विध, मूने मरडी कीधी बेसुध।
अमने छेतर्‍या एणी बुध, तो गई अखंड अमारी निध।।५८ ।।

यह मेरी बीतक (गाथा) है, जिसने मुझे जिन्दा ही मुरदा कर दिया। हमारी बुद्धि इस प्रकार से ठगी गई कि बेसुधी में धनी को खो दिया।

जो पाणीवल अलगां जाय, तो खिनमात्र वरसां सो थाय।
धणी विना केम रहेवाय, जो कांईक निध ओलखाय।।५९ ।।

यदि हमें अपने धनी की पहचान हो जाती, तो एक पल की जुदायी बरसों के समान लगती और हम प्रीतम के बिना कैसे रहते?

मीन जल विना जेणी अदाय, अंतर व्रह न खमाय।
तो व्रह आपण केम सेहेवाय, जो एक लवो समझाय।।६० ।।

जिस प्रकार मछली की हालत बिना पानी के होती है, वह पानी से बिछुड़ना सहन नहीं कर पाती, उसी प्रकार यदि एक भी वचन से हमने धनी की पहचान कर ली होती तो उनका अलग होना हमसे सहन न होता।

अमे व्रह धणीनो खम्या, जे दिन वृथा निगम्या।
अमे भरम मांहें भम्या, जो अगनी व्रह न दम्या।।६१ ।।

हम माया में भटक गए जिस कारण इतने दिन तक व्यर्थ में धनी का वियोग सहन किया। हमें तो उस समय ही विरह की अग्नि में तन छोड़ देना था।

Nijanand App

साखी–
एणे मोहे माहूं कर्या, करी न सक्या विचार।
सुनाई आवी सहुने, तो आडो आव्यो संसार।। ६२ ।।

इस भूल ने मुझे दुःखी कर रखा है, जिस भूल के कारण कुछ भी विचार न कर सकी। मैं तो क्या, सभी सुन्दरसाथ को माया ने भटका दिया, इसलिए हम संसार छोड़कर धनी के साथ न चल सके। माया आड़े आ गई।

जो विध लहुं वचननी, तो संसार अमने सूं।
एनुं कांई चाले नहीं, जो ओलखूं आपोपूं।। ६३ ।।

यदि मैं एक ही वचन का विचार कर अपनी पहचान कर लेती, (कि मैं धनी की अंगना हूं) तो माया हमारा क्या बिगाड़ लेती?

आगल एम कह्युं छे, जे आंधलो चाले सही।
ज्यारे भटके भीत निलाटमां, तिहां लगे देखे नहीं।। ६४ ।।

कहावत कही जाती है कि अन्धा मनुष्य भी चलता जाता है, पर सामने से जब तक दीवार की ठोकर नहीं लगती तब तक संभलता नहीं है।

ते तां अमने अनभव्युं, अमे तोहे न जाणी सनंध।
घन लाग्यो कपालमां, अमे तोहे अंधना अंध।। ६५ ।।

इसका हमने अनुभव किया, तो भी हम हकीकत न समझ पाए। हम अन्धों से भी अन्धे हो गए। माथे में चोट लगने पर भी हम संभल नहीं पाए।

आंखां तोहे न उघड़ी, वाले कही अनेक विध।
अंध अमे एवां थयां, निगमी बेठा निध।। ६६ ।।

पिया ने मुझे अनेक तरह से समझाया तो भी मेरी अन्दर की आंखें नहीं खुलीं। मैं ऐसी अन्धी हो गई कि अपने धनी को ही खो बैठी।

अंधने आंख रुदे तणी, पण अमने मांहें न बाहेर।
तो निध खोई हाथथी, जो कीधो नहीं विचार।। ६७ ।।

अन्धे की अन्दर की आंखें खुली होती हैं, किन्तु मैं बाहर व अन्दर से अन्धी हो गई। इस कारण बिना विचार किए हुए आए धनी को खो दिया।

चाल–
अंधने आंख रुदे तणी होय, पण अमने नव दीसे कोय।
अमे तो रह्या निध खोय, टांणे भूल्या सूं थाय रोय।। ६८ ।।

अन्धे की अन्दर की आंख होती है जिससे वह संभला रहता है, परन्तु हमारी दोनों आंखें फूट गईं जिस कारण धनी को गंवा बैठी। समय हाथ से निकल गया। अब रोने से क्या फायदा?

गए अवसर सूं थाय पछे, धन गए हाथ सहु घसे।
मांहें हांण बाहेर सहु हसे, ते तो मांहेंनी मांहे रडसे।। ६९ ।।

जब समय (अवसर) हाथ से निकल जाता है तो पीछे पछताने से क्या फायदा? धन की हानि पर सब पछताते हैं। नुकसान अपना होता है। संसार वाले हंसते हैं। ऐसा व्यक्ति अन्दर ही अन्दर रोया करता है।

Nijanand App

साथ ए पेर अमसूं थई, निध हाथ आवी करी गई।
दिन घणां अम मांहें रही, पण अमे दुष्टें जाणी नहीं।। ७० ।।

हे सुन्दरसाथजी ! मेरी भी यही हालत हुई। धनी आए और चले गए। हमारे साथ बहुत दिन रहे भी, पर हम इतने दुष्ट निकले कि उनकी पहचान न कर सके।

दुरमती करे तेम कीधुं, अमृत ढोलीने विख पीधूं।
धणी सेहेजे आव्या सुख न लीधूं, कारज कोई नव सिध्धूं।। ७१ ।।

मूर्ख की तरह हमने भी किया। अमृत के समान धनी को गवां दिया और जहर के समान माया को ग्रहण किया। सरलता से (अक्षरातीत) धाम के धनी मिलने पर भी हम अपना कोई भी कार्य सिद्ध नहीं कर सके।

हवे ए दुख केणे कहिए, अंग मांहें आतम सहिए।
कीधूं पोतानुं लहिए, हवे दोष कोणे दैए।। ७२ ।।

इस भूल का दुःख अब मैं किससे कहूं? अब तो अन्दर ही अन्दर सहन कर अपनी की हुई भूल का फल भुगतना पड़ेगा। इस भूल का दोष किसको दें?

तोहे धणिए हाथथी मूकी नहीं, तो वली आपणमां आव्या सही।
ए निध मुखथी न जाय कही, जे आंहीं अम ऊपर दया थई।। ७३ ।।

इतनी भूल करने पर भी धनी ने अपनी अंगना जानकर मेरा हाथ नहीं छोड़ा और फिर से अपने में (मेरे तन में आकर बैठ गए) आ गए। अब इस कृपा का, जो मेरे ऊपर की है तथा इस सुख का वर्णन मेरे मुख से नहीं किया जाता।

धन गयूं ते आव्यूं वली, गयो अंधकार सह्नु टली।
सुखना सागर मांहें गली, एने बीजो न सके कोए कली।। ७४ ।।

गए धनी फिर से आ गए। अज्ञान का सब अन्धकार (माया) हट गया और अब मैं सुख के सागर में आनन्द लेने लगी। इसको मुझसे कोई ले नहीं सकता, क्योंकि यह सुख मेरा है।

हवे में सुख अखंड लीधां, मनना मनोरथ सीधां।
वाले आप सरीखडा कीधां, फल वांछाथी अधिक दीधां।। ७५ ।।

अब मैंने अखण्ड सुख को प्राप्त कर लिया। मन के मनोरथ पूर्ण हो गए। धाम धनी ने मुझे अपने समान बना लिया। मेरी चाहनाओं से भी अधिक सुख मुझे दिए।

साखी–
कृपा कीधी अति घणी, वली आव्या तत्काल।
तेहज वाणी ने तेहज चरचा, प्रेम तणी रसाल।। ७६ ।।

धनी अपार कृपा करके तुरन्त ही आ गए और उसी तरह रस-भरी वाणी से रसीली चर्चा का आनन्द देने लगे हैं।

वली वचन सोहामणां, वली वरणव नी विध विध।
आव्या ते आनन्द अति घणे, ल्याव्या ते नेहेचल निध।। ७७ ।।

फिर से वही मन को भाने वाले मीठे वचन, फिर से तरह-तरह की चर्चा तथा अखण्ड वाणी लाकर अत्यन्त आनन्द देने लगे।

Nijanand App

ए निध निरमल अति घणी, दिए साथने सार।
कोमल चित करी लीजिए, जेम रुदे रहे निरधार।।७८ ।।

अब यह बेशक वाणी सुन्दरसाथ को सम्पूर्ण जानकारी देती है। इसलिए हे सुन्दरसाथजी ! चित्त को सरल बनाकर ग्रहण करें, जिससे उनकी वाणी हृदय में ठहरे।

पचवीस पख छे आपणा, तेमा कीजे रंग विलास।
प्रगट कह्या छे पाधरा, तमे ग्रहजो सहु साथ।।७९ ।।

हे साथजी ! परम धाम के पच्चीस पक्ष अपने हैं। इसमें सदा चितवन करके आनन्द लें। धनी ने परमधाम का सीधा मार्ग बतला दिया है, जिसको हृदय में उतारें।

आपणू धन तां एह छे, जे दिए छे आधार।
रखे अधखिण तमें मूकतां, वालो कहे छे वारंवार।।८० ।।

वास्तव में अपनी सम्पत्ति परमधाम के पच्चीस पक्षों का सुख धनी हमें दे रहे हैं। धनी तो बार-बार कह रहे हैं कि आधे पल के लिए भी इस सुख को न छोड़ो।

पख पचवीस छे अति भला, पण ए छे आपणो धरम।
साख्यात तणी सेवा कीजिए, ए रुदे राखजो मरम।।८१ ।।

पच्चीस पक्षों का सुख अति सुखदायी तो है, परन्तु अब अपना कर्तव्य है कि साक्षात् धनी की सेवा में मग्न हो जाएं और इस भेद को अपने हृदय में रखें।

चित ऊपर वली चालिए, धणी तणे वचन।
ए वाणी तमे चित धरो, हूं कहूं छूं द्रढ करी मन।।८२ ।।

धनी के वचनों को हृदय में लेकर फिर से रहनी में आकर उसके अनुसार चलें। इस बात को हृदय में ले लो, मैं बार-बार समझाकर दृढ़ता से कहती हूं।

दई प्रदखिणा अति घणी, करूं दंडवत परणाम।
सहु साथना मनोरथ पूरजो, मारा धणी श्री धाम।।८३ ।।

परमधाम के पच्चीस पक्षों की बार-बार परिक्रमा करके धनी के चरणों में दण्डवत् प्रणाम कर विनती करती हूं कि हे धाम के धनी ! सब सुन्दरसाथ की मन की चाहनाओं को पूर्ण करो।

मनना मनोरथ पूरण कीधां, मारा अनेक वार।
वारणे जाय इंद्रावती, मारा आतमना आधार।।८४ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि हे मेरी आत्मा के आधार धाम के धनी ! आपने सदा हमारी मनोकामना को पूर्ण किया है। मैं आपके चरणों पर बलिहारी (न्यौछावर) जाती हूं।

।। प्रकरण ।। १ ।। चौपाई ।। ९० ।।

माया गई पोताने घेर, हवे आतम तूं जाग्यानी केर।
तो मायानो थयो नास, जो धणिए कीधो प्रकास।। १ ।।

धनी दुबारा कृपा कर आ गए। परमधाम के पच्चीस पक्षों का सुख देने लगे हैं। इसके सामने माया टिक नहीं सकती। माया अपने हृदय से हट गई है, इसलिए हे मेरी आत्मा ! अब तू जागने का प्रयत्न कर। धनी ने आकर जागृत बुद्धि का ज्ञान दिया तो माया नष्ट हो गई है।

Nijanand App

केम जाणिए माया गई, अंतर जोत ते प्रगट थई।
हवे आतम करे कांई बल, तो वाणी गाऊं नेहेचल।। २ ।।

कैसे हम समझें कि माया ने हमें छोड़ दिया है? यह मेरी आत्मा गवाही (साक्षी) दे रही है। अब आत्मा थोड़ा-सा भी साहस करे तो अखण्ड वाणी का उच्चारण करूं।

लघु दीरघ पिंगल चतुराई, एह तो किवने छे बडाई।
एनो अर्थ हूं जाणू सही, पण आ निधमां ते सोभे नहीं।। ३ ।।

कविता की कला में कवि लोग छोटी-बड़ी मात्राएं बड़ी चतुराई से प्रयोग में लाते हैं। इसका सही अर्थ भी मैं समझती हूं, परन्तु इस वाणी में कविता की कला शोभा नहीं देती।

मारे तो नथी कांई किवनुं काम, वचन कहेवा मारे धणी श्री धाम।
जे आंहीं आवीने कह्या, गजा सारूं मारे चितमां रह्यां।। ४ ।।

मैं कोई कविता लिखने वाला कवि नहीं हूं। मुझे तो अपने धाम के धनी की वाणी का गान करना है, जो यहां आकर उन्होंने कही और मैंने अपनी बुद्धि अनुसार चित्त में ग्रहण की।

साथ आगल कहीस हूं तेह, पहेलां फेराना सनेह।
धणिए जे कह्यां अमने, सांभलो साथ कहूं तमने।। ५ ।।

अब पहले फेरे ब्रज में आकर हमारा आपस में कैसा अधिक प्रेम था, वह धनी ने हमें अब बताया। हे सुन्दरसाथजी ! मैं आपको कहती हूं, आप सुनो।

तमे जोपे ग्रहजो द्रढ मन करी, हूं तमने कहूं फरी फरी।
साथ सकल लेजो चित धरी, हूं वालोजी देखाडूं प्रगट करी।। ६ ।।

मैं बारम्बार आपसे कहती हूं कि हे सुन्दरसाथजी ! आप दृढ़ता से यह बात मन में रख लो कि मैं आपके सामने साक्षात् राजजी महाराज के दर्शन कराती हूं। जिसको आप चित्त में धारण कर लेना।

श्री देवचंदजी ने लागूं पाय, जेम आ दुस्तर जोपे ओलखाय।
दई प्रदखिणा करूं परणाम, जेम पोहोंचे मारा मननी हाम।। ७ ।।

इस कठिन माया की अच्छी तरह से पहचान करने के लिए और मन की सभी चाहनाओं की पूर्ति के लिए सतगुरु श्री देवचन्द्रजी की परिक्रमा लगाकर चरणों में प्रणाम करती हूं।

जेटली सनंध कही छे तमे, ते द्रढ करी सर्वे जोइए अमे।
लीला तमे कही अपार, तेह तणो नव लाधे पार।। ८ ।।

रहस्य की जो बातें आपने कही, उन सबको दृढ़ता के साथ मैंने देखा और परमधाम ब्रज रास की जिन लीलाओं का आपने वर्णन किया, उसका तो कोई शुमार ही नहीं है।

चौद भवन माया अंधार, पार नहीं मोटो विस्तार।
तमने पूछूं समरथ सार, हूं केणी पेरे करूं विचार।। ९ ।।

इस चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में माया का ही अंधेरा है जिसका पारावार नहीं है। इसलिए, हे मेरे धनी! ऐसा कौन-सा ठोस मार्ग है, जिस पर मैं विचार करके पार उतर सकूं।

Nijanand App

तमे तारतमना दातार, अजवालूं कीधूं अपार।
साथ तणां मनोरथ जेह, सर्वे पूरण कीधां तेह।। १० ।।

आप जागृत बुद्धि के ज्ञान के दाता हैं और आपने इससे बेशुमार (अनन्त) प्रकाश किया है। सुन्दरसाथ की इच्छाओं को सब प्रकार से आपने पूर्ण किया है।

तारतम तणे अजवास, पूरण मनोरथ कीधां साथ।
तम तणे चरण पसाय, जे उत्कंठा मनमां थाय।। ११ ।।

आपने चरण कमल की कृपा से तथा तारतम वाणी के प्रकाश से सुन्दरसाथ की चाहनाओं को आपने पूर्ण किया है।

जेटली मनमां उपजे वात, ते सहु आतम पूरे साख।
मन जीवने पूछे जेह, त्यारे जीव सहु भाजे संदेह।। १२ ।।

मेरे मन में जो बातें उपजती हैं, उन सबका उत्तर अन्दर आत्मा से ही मिल जाता है। मन में जो संशय उठता है, उन सबका उत्तर जीव ही दे देता है।

ए निध बीजे कोणे न अपाय, धणी विना केहेने सामूं न जोवाय।
एणें अजवाले थए सूं थाय, आ पोहोरा मां धणी ओलखाय।। १३ ।।

यह न्यामत (जागृत बुद्धि का ज्ञान) दूसरे को नहीं दी जाती है। धनी के बिना न तो कोई इसे दे सकता है और न ही कोई दिखा ही सकता है। ऐसा विश्वास करने से इस कठिन समय में भी धनी की पहचान हो जाती है।

आप तणी पण खबर पडे, घर पर आतम रुदे चढे।
ए अजवालूं ज्यारे थयूं, त्यारे वली पाछूं सूं रह्यूं।। १४ ।।

इस जागृत बुद्धि से जब ज्ञान मिला तो अपने घर परमधाम की मूल-मिलावा में बैठी परआतम की तथा अपने घर के पच्चीस पक्षों की पहचान हो गई । फिर बाकी क्या रहा ?

ए सूं माया करे बल, फेरवे कल करे विकल।
अजवालामां ना रहे चोर, जागतां नव चाले जोर।। १५ ।।

यह माया अपने बल से क्या करती है ? बुद्धि को फेरकर बेसुध करती है। जैसे उजाले में तथा जब घर का मालिक जाग रहा हो, तो चोर चोरी नहीं कर सकता, इसी प्रकार माया भी हमारी जागृत अवस्था में तारतम ज्ञान के प्रकाश में हमें बेसुध नहीं कर सकती।

जदिप ते जीते विद्याए, पण एने अजाण्यूं नव जाय।
ज्यारे वालोजी सहाय थाय, झख मारे त्यारे मायाय।। १६ ।।

माया के ब्रह्माण्ड के अन्दर शास्त्रों की चतुराई से संसार के लोगों को जीता जा सकता है, परन्तु इससे उस पारब्रह्म जो अनजाना है, की पहचान नहीं होती, परन्तु जब स्वयं धनी मददगार हो जाते हैं तो फिर वहां माया की कुछ भी चतुराई नहीं चल सकती (झख मारकर रह जाती है)।

ते माटे तमे सुणजो साथ, एक कहूं अनुपम वात।
चरचा सुणजो दिन ने रात, आपणने त्रूठा प्राणनाथ।। १७ ।।

इसलिए प्यारे सुन्दरसाथजी ! एक अनोखी (अनुपम) बात कहती हूं उसे सुनो, कि इस ब्रह्माण्ड में धनी अपने ऊपर फिदा हो गए हैं, इसलिए इनकी मीठी-मीठी बातें (चर्चा) रात-दिन सुनो।

Nijanand App

वचन कह्या ते मनमां धरो, रखे अधखिण पाछा ओसरो।
आ पोहोरो छे कठण अपार, रखे विलंब करो आ वार।। १८ ।।

धनी जो वचन कहते हैं उनको हृदय में धारण करो और आधा पल के लिए भी उनके वचनों से विमुख मत होना। यह समय बड़ा कठिन है, सावधान रहने का है। इसलिए इस बार अब देर मत करो क्योंकि धनी दूसरी बार आये हैं।

आ जोगवाई छे जो घणी, सहाय आपणने थया धणी।
बेठ्या आपण मांहें कहे, पण साथ मांहें कोई विरलो लहे।। १९ ।।

यह सुन्दर समय (चर्चा, कलियुग, मनुष्य तन, भारत खण्ड तारतम ज्ञान, आदि) प्राप्त हुआ है और धनी भी अपने मददगार हो गए हैं। वह अपने बीच बैठकर (मेहराज ठाकुर के तन में) चर्चा सुनाते हैं, किन्तु साथ में से कोई-कोई ही ग्रहण करते हैं।

साथ मांहें अजवालूं थयूं, पण भरम तणूं अंधारूं रह्यूं।
ते टाल्यानो करूं उपाय, तो मनोरथ पूरण थाय।। २० ।।

सुन्दरसाथ ने तो चर्चा सुनकर धनी की पहचान कर ली, परन्तु शास्त्रों के तर्क में ज्ञानी लोगों को, विद्वानों को अन्धकार ही रहा, उसको भी टालने का मैं उपाय करती हूं, जिससे उनको भी धनी की पहचान होकर उनकी मनोकामना पूर्ण हो जाय।

जे मनोरथ मनमां थाय, ततखिण कीजे तेणें ताय।
आ जोगवाई छे पाणीवल, आपण करी बेठा नेहेचल।। २१ ।।

यह सुन्दर अवसर जिसे हम अखण्ड समझ बैठे हैं, पल भर का है, इसलिए मन में जिस शुभ कार्य की इच्छा आए उसे तुरन्त कर डालें।

नेहेचल जोगवाई नहीं एणे ठाम, अधखिणमां थाय कई काम।
इंद्रावती कहे आ वार, निद्रा नव कीजे निरधार।। २२ ।।

यह सुन्दर अवसर (मनुष्य तन) अखण्ड नहीं है। आधे ही पल में हालात बदल जाते हैं, इसलिए श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि इस बार आराम से मत बैठो, अर्थात् सोते मत रहो (जागो अणे जगाओ)

|| प्रकरण || २ || चौपाई || ११२ ||

राग मारू

भूडां जीव जागजे रे
कांई धणी तणें चरण पसाय, तू भरम उड़ाडजे रे।। टेक १ ।।

मोहजल (माया का ब्रह्माण्ड) तथा माया की पहचान कर उससे बचने का उपाय बताने के बाद अब इस पापी जीव को जागने का रास्ता दिखाया जा रहा है। उसे सम्बोधन किया गया है कि धनी के चरणों की कृपा से बेशकी का ज्ञान मिल गया है, इसलिए इस वाणी से अपनी शंकाओं का निवारण कर जाग जा।

आपण निद्रा केम करूं, निद्रानो नथी लाग।
भरमनी निद्रा जे करे, कांई तेहेनो ते मोटो अभाग।। २ ।।

हे सुन्दरसाथजी! वाणी मिलने पर भी यदि हमारे संशय मिटे नहीं तो यह हमारी बदनसीबी है। अब हमारे भूलने का समय नहीं है, इसलिए अब हमें माया में नहीं भूलना चाहिए।

Nijanand App

आ जोगवाई छे जो आपणी, नहीं आवे बीजी वार।
हाथ ताली दीधे जाय छे, भूंडा कां न करे हजी सार।। ३ ।।

यह शुभ अवसर जो अब हमें प्राप्त हुआ है यह दुबारा मिलने वाला नहीं है। पल मात्र में समय निकल जाएगा, इसलिए हे पापी जीव ! तू अभी भी विचार (अपनी संभाल) क्यों नहीं करता ?

धणी रे आपणमां आवियां, भूंडा कां नव जागे जीव।
फेरे फेरे तूंने प्रीछव्यो, तूं हजी करे कां ढील।। ४ ।।

हे पापी जीव! धनी अपने बीच में आए हैं, तू क्यों नहीं जागता। तुझे बार-बार समझाया जा रहा है, फिर तू क्यों ढील कर रहा है ?

धणिऐ धणवट जे करी, तू तां जोने विचारी तेह।
आ पापनी ने परहरी, तू कां न करे सनेह।। ५ ।।

श्री राजजी महाराज ने अपना धनीपना किया है, इसलिए तू जरा विचार करके देख कि इस दुष्ट माया को छोड़कर अपने धनी से प्यार क्यों नहीं करता ?

आपण ने तेडवा आविया, आ दुस्तर माया मांहें।
ओलखी ने कां ओसरे, भूंडा एम थयो तू कांए।। ६ ।।

ऐसी दुष्ट माया में से निकालने के लिए धनी अपने बीच में पधारे हैं। हे पापी जीव! तू पहचान करने के बाद भी ऐसा क्यों हो गया है और क्यों भूल गया है ?

धणिए आपणसूं जे करी रे, तू तां जोने विचारी मन।
कोडी ते हाथथी परी करी, तूने दीधूं छे हाथ रतन।। ७ ।।

प्रियतम ने अपने ऊपर जो कृपा की है जरा उसे मन से विचार करके देख। कोडी (माया) से छुड़ाकर तेरे हाथ में अनमोल रत्न (मूल घर परमधाम के पच्चीस पक्ष) दिया है।

जीवडा तू धारण केही करे, भूंडा घूट्यो दिन अनेक।
जोवंतां जोगवाई गई, भूंडा हजिए तू कांय नव चेत।। ८ ।।

हे पापी जीव ! तू गहरी नींद (माया में लिप्त) में क्यों पड़ा है ? तूने बहुत समय व्यर्थ में गंवा दिया। देखते-देखते अनमोल समय निकल गया है। फिर भी तूं क्यों सावधान नहीं होता है ?

आपण ऊपर अति घणी रे, दया करे छे आधार।
आपणे काजे देह धरया, भूंडा हजीए तूं कां न विचार।। ९ ।।

हे पापी जीव! अपने धनी ने अपने ऊपर अपार कृपा करके अपने लिए माया में तन धारण किया है। इसका तू क्यों विचार नहीं करता ?

भरम भूंडो तमे परहरो, जेम थाय अजवालुं अपार।
वचन वालाजी तणे, तू मूलगां सुख संभार।। १० ।।

हे पापी जीव ! तू संशय छोड़ दे ताकि तुझे ज्ञान प्राप्त हो जाए (धनी की पहचान हो जाए)। तू धनी के वचनों से, जो वाणी में कहे हैं, अखण्ड परमधाम के सुखों को याद कर।

Nijanand App

आ वालो ते आविया, ए सुखतणा दातार।
आपण मांहें तेहज बेठा, जोई अजवालुं संभार॥ ११ ॥

सदा सत सुख के देने वाले धाम धनी दूसरी बार आए हैं और अपने बीच में (मेहराज ठाकुर के तन में) बैठे हैं। इनकी वाणी से इनकी पहचान कर।

दुर्मती तू कां थयो, हूं तो पाडूं ते बुंब अपार।
आंहीं आव्या न ओलख्या, पछे केही पेरे मोंहों उपाड॥ १२ ॥

हे मूर्ख ! तू ऐसा क्यों हो गया है? मैं तो ऊंचे स्वर से पुकार रही हूं कि धनी यहां आए हैं। तूने उनकी पहचान क्यों नहीं की? उनके चले जाने पर बाद में कैसे मुंह ऊंचा करेगा?

आंख उघाडी जो जुए, जीव लीजे ते लाभ अनेक।
आंही पण सुख घणां माणिए, अने आगल थाय वसेक॥ १३ ॥

अन्दर की आंख खोलकर विचार करो तो बहुत लाभ मिलने वाला है। यहां पर बैठे-बैठे बहुत सुखों का अनुभव मिलेगा तथा आगे और भी अधिक सुख मिलेंगे।

आ अजवालूं जो जोइए, जीव तारतम मोटो सार।
वालाजीने ओलखे, तो तू नव मूके निरधार॥ १४ ॥

इस जागृत बुद्धि के ज्ञान को यदि विचार कर देखा जाय तो तारतम (धनी की पहचान) ही सबसे बड़ा सार है। तू धनी की पहचान करके इन्हें कभी भी न छोड़ना।

वालो वदेसी आवी मल्या, कांई आपणने आ वार।
दुख मांहें सुख माणिए, जो तू भरमनी निद्रा निवार॥ १५ ॥

धनी हमें इस बार दूसरे देश (माया के ब्रह्माण्ड) में आकर मिले हैं, इसलिए तू शंका को मिटाकर इस दुःख के संसार में भी अखण्ड सुखों का अनुभव कर।

आ जोगवाई छे खिण पाणीवल, केटलूं तूने केहेवाय।
पण अचरज मूने एह थाय छे, जे जाण्यूं धन केम जाय॥ १६ ॥

यह सुन्दर अवसर (मानव तन) पल भर का है। यह तुझे कितनी बार समझाएं, मुझे तो बड़ी हैरानी हो रही है कि जानकर भी हम अखण्ड धन को गंवा रहे हैं।

आगल आपणे सूं कर्यूं, ज्यारे अजवाले थई रात।
आ तां वालेजीए वली कृपा करी, त्यारे तरत थयो प्रभात॥ १७ ॥

पहले मुझ से क्या भूल हुई जिसके कारण ज्ञान का उजाला होने पर भी अन्धकार हो गया (श्री देवचन्दजी का धामगमन हो गया) यह तो धनी ने दूसरी बार कृपा की है और तत्काल ही ज्ञान का उजाला कर दिया (श्री मेहराज ठाकुर के तन में आ बैठे)।

एवडी वात देखी करी, ते तां जोयूं तारी दृष्ट।
हजी तू भरममां भूलियो, तूने केटलूं कहूं पापिष्ट॥ १८ ॥

इतनी बड़ी बात जो तूने अपनी आंख से देखी है, फिर भी तू संशय में भूला पड़ा है। तुझे कितना बड़ा पापी (नीच-दुष्ट) कहूं?

Nijanand App

अजवाले वालो ओलख्या, त्यारे पाछल रह्यूं सूं।
जाणी बूझीने मूढ थयो, भूंडा एम थयो कां तूं।।१९।।

ज्ञान के उजाले से तूने धनी की पहचान कर ली। अब पीछे क्या बाकी रहा? तू जान-बूझकर मूर्ख बनता है। तू ऐसा नीच क्यों हो गया?

फेरे फेरे में तूने कह्यूं रे, सुण रे धणीना वचन।
अधखिण वालो न बीसरे, जो तू जुए विचारी मन।।२०।।

मैंने तुझे धनी की वाणी सुनने के लिए अनेक प्रकार से कहा। अब तू यदि मन से विचार कर देखे तो तू धनी को एक पल भी भुला नहीं सकेगा।

अनेक वचन तूने कह्या, मान एकनो करे विचार।
अर्ध लवे तारो अर्थ सरे, भूंडा एवडो तू कां केहेवराव।।२१।।

तुझे मैंने अनेक वचन कहकर समझाया। तू उनमें से एक वचन का भी विचार कर ले तो उसके आधे शब्द से ही तेरा कार्य सिद्ध हो जाएगा (जन्म सफल हो जाएगा)। हे पापी ! तू फिर इतना अधिक क्यों कहलवाता है?

हवे रे तूने हूं जे कहूं, ते तू सांभल दृढ करी मन।
पचवीस पख छे आपणा, तेमां झीलजे रात ने दिन।।२२।।

अब मैं तुमसे जो कहती हूं उसे मन में दृढ़ता लाकर सुनो। पच्चीस पक्षों का परमधाम अपना घर है। रात-दिन उसी का चिन्तन करो।

ए मांहेंथी रखे नीसरे, पल मात्र अलगो एक।
मनना मनोरथ पूरण थासे, उपजसे सुख अनेक।।२३।।

एक पल भर के लिए भी इन पच्चीस पक्षों में से चित्त को मत हटाओ। तुम्हारा मनोरथ पूर्ण हो जाएगा और अनेक सुखों की प्राप्ति होगी।

साख्यात तणी सेवा कर रे ओलखीने अंग।
श्री धाम तणा धणी जाणजे, तू तां रखे करे तेमां भंग।।२४।।

इनके तन को ही धाम का धनी जानकर साक्षात् सेवा करो और इनसे अपने चित्त को मत हटने दो।

मुख थी सेवा तूने सी कहूं, जो तूं अन्तर आडो टाल।
अनेक विध सेवा तणी, तूंने उपजसे तत्काल।।२५।।

यदि तू अपने मन की भ्रान्ति हटाकर पहचान कर ले तो तुझे अपने आप ही धनी की सेवा करने की चाह उत्पन्न हो जाएगी। मुझे सेवा करने के लिए कहने की आवश्यकता नहीं रहेगी।

पेहेले फेरे आपण आवियां, ते तो वाले कह्यूं छे विवेक।
ते तां लाभ लईने जागियां, हवे आपण करूं रे विसेक।।२६।।

पहली बार हम ब्रज में आए थे। उसका वर्णन श्री देवचन्द्रजी ने (वालाजी ने) किया, जिससे हम होश में आए। अब उससे भी अधिक हम करके बताएंगे (माया को छोड़ने का उद्यम)।

Nijanand App

पेहेले फेरे थयूं आपणने, गौपद वछ संसार।
एणे पगले चालिए, जो तू पहेलो फेरो संभार।। २७ ।।

पहली बार ब्रज से रास में जाने के लिए हम भवसागर को एक छोटे-से गड्ढे के समान समझकर पार कर गए (घर, परिवार, सगे सम्बन्धियों को त्यागकर चले गए)। उसी प्रकार उसका ध्यान करते हुए हम इस बार भी भवसागर से पार चलें।

एटला माटे आ अजवालूं, वालेजीए कीधूं आ वार।
नरसैयां वचन प्रगट कीधां, कांई वृज तणा विचार।। २८ ।।

इतने के वास्ते ही धनी ने इस बार याद दिलाई है कि संसार कैसे छोड़ना है। नरसैयां के वचनों में भी ब्रज की लीला के विचार प्रगट किए हैं।

कहे इंद्रावती नरसैयां वचन, जो जोइए करीने चित।
धणिए जे धन आपियूं, कांई करी आपणने हित।। २९ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि नरसैयां के वचनों को भी यदि चित्त में विचार कर देखें तो धाम धनी ने अपनी भलाई के लिए ज्ञान का अमूल्य धन दिया है।

।। प्रकरण ।। ३ ।। चौपाई ।। १४१ ।।

मोहजल से सावधान कर, माया से छूटने का उपाय बताकर, जीव को जागने का ज्ञान देकर अब क्या करना है, बतलाया जा रहा है।

राग धनाश्री

प्रेम सेवा वाले प्रगट कीधी, वृज तणी आ वार।
वचन विचारीने जोइए, कांई नरसैयां तणा निरधार।। १ ।।

ब्रज में हमने वालाजी को प्रेम से कैसे रिझाया था, वह ढंग इस बार बतलाया है। यदि नरसैयां के वचनों को देखें तो हमें यह निश्चय हो जायेगा।

श्रीधाम तणां साथ सांभलो, हूं तो कहूं छूं लागीने पाय।
जे रे मनोरथ कीधां आपणे, ते पूरण एणी पेरे थाय।। २ ।।

हे मेरे धाम के सुन्दरसाथ ! मैं आपके चरणों में लगकर कहती हूं, उसे सुनो। आपने जो चाह की थी वह सब प्रेम और सेवा से ही पूर्ण होगी।

वृजमां कीधी आपण वातडी, ते तां सघली मांहें सनेह।
काम करतां अति घणों, पण खिण नव छोड्यो नेह।। ३ ।।

ब्रज के अन्दर हम सब गोपियों के तन में थे और आपस में अपार प्रेम था। हमने माया के सब काम करते हुए भी अपने धनी से एक पल के लिए भी प्यार नहीं छोड़ा।

विविध पेरे सिणगार जो करतां, मन उलासज थाय।
मनना मनोरथ पूरण करतां, रंगभर रैणी विहाय।। ४ ।।

अपने धनी को रिझाने के लिए अपने मन में उमंग भरकर तरह-तरह से श्रृंगार करते थे और अपनी मनोकामना पूर्ण करने के लिए आनन्द से रातें बिताते थे।

Nijanand App

उठतां बेसतां रमता, वालो चितथी ते अलगो न थाय।
ज्यारे वन पधारतां, त्यारे खिण वरसां सो थाय।।५।।

ब्रज में उठते, बैठते, खेलते समय भी हम धनी को अपने चित्त से भुलाते नहीं थे। जिस दिन वालाजी गायों के साथ वन में जाते थे, उस दिन एक पल बिछुड़ना वर्षों के समान लगता था।

मांहोंमांहें विचारज करतां, वातज करतां एह।
आतम सहुनी एकज दीसे, जुजवी ते दीसे देह।।६।।

जब वालाजी वन में चले जाते थे, तो उनके वियोग की बातें हमारी आपस में एकसी ही होती थीं, जिससे यह दीखता था कि हमारे तन ही अलग-अलग हैं, पर आत्मा सबकी एक है।

निस दिवस वालाजीसों वातो, रामत करतां जाय।
खिणमात्र जो अलगा थैए, तो विछोडो खिण न खमाय।।७।।

रात-दिन हम वालाजी के साथ ही बातें करते थे तथा खेल खेलते थे। इसलिए उनसे एक पल का भी वियोग हमसे सहन नहीं होता था।

विविध विलास वालाजीसों करतां, पूरण मनोरथ थाय।
ज्यारे वाछरडा लई वन पधारे, त्यारे रोवंतां दिन जाय।।८।।

हम तरह-तरह से आनन्द की लीला वालाजी के साथ करके अपने मन की इच्छा पूरी करते थे, पर जब वालाजी बछड़ों के साथ वन में जाते थे, तो वह दिन हमारा रोते-रोते बीतता था।

दाण लीला नी रामत करतां, माथे मही माखणनो भार।
वचन रंगनां उथला वालतां, रमतां वन मंझार।।९।।

हम अपने सिर पर दही और माखन की मटकी लेकर दान-लीला का खेल खेलते थे तथा वन के अन्दर अटपटे वचन बोलकर आनन्द लेते थे।

वृज नरसैए प्रगट कीधूं, अति घणे वचन विवेक।
ए वचन जोईने चालिए, तो आपण थैए विसेक।।१०।।

नरसैयां ने अपने वचनों में ब्रजलीला का विस्तार से वर्णन किया है और उन वचनों को देखकर यदि हम सोचें तो हम उससे भी अधिक वालाजी से प्रेम करेंगे।

वृजलीला अति मोटी छे, जो जो नरसैयां वचन प्रमाण।
ए पगलां सर्वे आपणां, तमे जाणी सको ते जाण।।११।।

नरसैयां के वचनों में ब्रज की लीला की बड़ी महिमा है। यदि समझ सको तो समझो। यह प्रेम का मार्ग अपना है (जो हमारे बिना कोई जानता नहीं है)।

कहे इंद्रावती सुणो रे साथ जी, इहां विलंब कीधांनी नहीं वार।
ए अजवालूं सर्वे कीधूं मारे वाले, आपणने आ वार।।१२।।

श्री इन्द्रावतीजी सब सुन्दरसाथ से कहती हैं कि अपने धनी ने इस बार ज्ञान से पूरा प्रकाश कर दिया है और अब देर करने का समय नहीं है।

।। प्रकरण ।। ४ ।। चौपाई ।। १५३ ।।

Nijanand App

प्रेम का मार्ग बतलाने के बाद, उस पर अब चलना कैसे है? इस प्रकरण में बताया है।

राग धनाश्री

एणे पगले आपण चालिए, कांई पगलां ए रे प्रमाण, सुन्दरसाथजी।
पेहेले फेरे आपण जेम नीसर्स्थां, तमे जाण थाओ ते चित आण।
चित आणीने रंग माणो, सुन्दरसाथजी।। १ ।।

श्री इन्द्रावतीजी सुन्दरसाथ से कहती हैं कि हम ब्रज में अपने धनी से जैसा प्रेम करते थे, वही सही मार्ग है और उसी पर हमें चलना है। पहली बार ब्रज को छोड़कर हम रास में जैसे गए, वह समझ कर उसे चित्त में धारण करो तथा आनन्द का अनुभव करो।

रास नरसैए रे न वरणव्यो, मारे मन उत्कंठा एह।
चरण पसाय रे वालातणे, तमे सांभलो कहूं हूं तेह।। २ ।।

नरसैयां ने रास का वर्णन नहीं किया। इसे जानने की मेरे मन में इच्छा थी। अब वालाजी के चरणों की कृपा से मैं कहती हूं, उसे तुम सुनो।

श्री धणिए जे रे वचन कह्यां, ते में सांभलयां रे अनेक।
पण में रे मारा गजा सारूं, कांई ग्रह्या छे लवलेस।। ३ ।।

धनीजी ने तो अनेक वचन कहे जिन्हें मैंने सुना और अपनी बुद्धि की शक्ति के अनुसार ग्रहण किया।

सरद निसा रे पूनम तणी, आव्यो ते आसो रे मास।
सकल कलानो चंद्रमा, एणी रजनीए कीधो रे रास।। ४ ।।

शरद ऋतु के आश्विन के महीने (कुंवार) की पूर्णमासी की रात्रि पूर्ण कला के चन्द्रमा से प्रकाशमान थी। जिस रात्रि में वालाजी के साथ रास की लीला की।

रास तणी रे लीला कहूं, जे भरियां आपणे पाय।
निमख न कीधी रे निसरतां, कांई ततखिण तेणे रे ताय।। ५ ।।

रास की लीला में जाने के लिए हमने ब्रज से निकलने में एक पल की भी देरी नहीं की। तुरन्त ही निकल भागे।

संझाने समें रे वेण वाईयो, कांई वृंदावन मुन्झार।
एणे ने समे सहु ऊभूं मूकियूं, तेहने आडो न आव्यो रे संसार।। ६ ।।

जब नित्य वृन्दावन में (सन्ध्या) के समय वालाजी ने बांसुरी बजाई उसी समय हम सबने खड़े-खड़े (तुरन्त ही) संसार को छोड़ दिया (माया आड़े नहीं आई तथा किसी को कुछ नहीं समझा)।

नहीं तो कुलाहल एवडो हुतो, पण चितडां वेध्यां रे प्रमाण।
साथ सहुए रे वेण सांभल्यो, बीजो श्रवण तणो गुण जांण।। ७ ।।

नहीं तो संसार छोड़ते समय बड़ा कोलाहल (शोर) था। हमारा चित्त वालाजी में लग गया था। हम सबने बंसी की आवाज सुनी (हमने जाना कि धनी हमें नाम ले-लेकर बुला रहे हैं)। संसार के सब जीवों ने बांसुरी की मधुर तान का ही अनुभव किया।

कोई सखी रे हुती गाय दोहती, दूध घोणियो रे हाथ माहें।
एणे समे वेण थई वल्लभनी, पडी गयो घोणियो रे तेणे ताए।। ८ ।।

जिस समय वृन्दावन में वालाजी ने बांसुरी बजाई, उस समय जो सखी गाय दुह रही थी, उसके हाथ से दूध का बर्तन वहीं गिर गया।

Nijanand App

कोई सखी रे काम करे घर मधे, आडो ऊभो ससरो पति जेह।
वेण सुणी ने पाटू दई निसरी, एणी दृष्टमां सरूप सनेह।। ९ ।।

कोई सखी घर में काम कर रही थी और दरवाजे पर ससुर और पति खड़े थे। उनको भी ठोकर मारकर वह घर से निकल गई, क्योंकि उसके ध्यान में वालाजी का ही प्रेम समाया था।

कोई सखी रे वात करे पतिसूं, ऊभी धवरावे रे बाल।
एणे समे वेण थई वल्लभनी, पडी गयो बाल तेणे ताल।। १० ।।

कोई सखी अपने पति से बात कर रही थी और खड़ी-खड़ी बालक को भी दूध पिला रही थी। बांसुरी की आवाज सुनते ही बालक उसके हाथ से छूटकर गिर गया (मोह ने सताया नहीं)।

कोई सखी रे हुती प्रीसणे, हाथ थाली प्रीसे छे धान।
एणे समे वेण थई वल्लभनी, पडी गई थाली ते तान।। ११ ।।

कोई सखी अपने हाथ में थाली लेकर भोजन परोस रही थी। वालाजी की बांसुरी सुनते ही उसके हाथों से थाली गिर गई।

कोई सखी रे एणे समे निसरतां, एक पग भांणां रे मांहें।
बीजो पग पति न रुदे पर, एणी दृष्टे न आव्यूं रे कोई क्यांहें।। १२ ।।

कुछ सखियों का घर से निकलते समय एक पैर थाली में पड़ा और दूसरा पति की छाती पर, क्योंकि उन्हें कुछ दिखाई ही नहीं दे रहा था (सूझ नहीं रहा था)।

कोई सखी रे वेगे वछूटतां, पड्यो हडफटे ससरो त्यांहें।
आकार वहे रे घणवे उतावला, चित जई बेठूं वालाजी मांहें।। १३ ।।

कुछ सखियों के हड़बड़ाकर भागते समय रास्ते में ससुर आ गया, वह गिर पड़ा। सखियाँ जल्दी में भाग रही थीं, क्योंकि चित्त में वालाजी समा गए थे।

माता पिता रे पति सासु ससरो, रोतां न सुणियां रे बाल।
वाएने वेगे रे वछुटियो, वेण सांभलतां तत्काल।। १४ ।।

वे सखियाँ माता, पिता, पति, सास, ससुर तथा रोते हुए बच्चों की तरफ ध्यान न देकर हवा की तरह बांसुरी सुनते ही तुरन्त भाग उठीं।

वस्तर विना सखी जे नहाती, तेणे नव संभारियां रे अंग।
वेण सांभलतां रे वाला तणी, एणे वेगमां न कीधो रे भंग।। १५ ।।

जो सखियाँ बिना वस्त्र स्नान कर रही थीं उन्होंने बांसुरी की आवाज जैसे ही सुनी, तुरन्त भाग उठीं। उन्हें अपने अंगों को संभालने की भी सुध नहीं रही।

कोई सखी रे हुती नवरावती, हाथ लोटो नामे छे जल।
सुणी स्वर पड्यो लोटो अंग ऊपर, न बोलानूं चितडे व्याकुल।। १६ ।।

कोई सखी लोटा लेकर नहला रही थी, जैसे ही बांसुरी की आवाज सुनी तो हाथ से लोटा नहाने वाले के अंग पर पड़ा और वह चित्त की बेचैनी से कुछ बोल नहीं सकी।

Nijanand App

गौपद वछ रे एणे समे, सुकजीए निरधारियो ते सार।
त्राटकडे रे त्रटका करियां, कांई बंध हता जे संसार।। १७ ।।

शुकदेवजी ने संसार सागर को गाय के बछड़े के पैर (खुर) में जितनी जगह आती है, उतना छोटा सखियों के लिए हो गया, ऐसा बतलाया है, जैसे एक घास के तिनके के टुकड़े करने में कोई कष्ट नहीं होता, वैसे ही सखियों ने संसार के बन्धनों को बिना किसी कष्ट के तोड़ दिया।

संसार तणा रे काम सर्वे करतां, पण चितमां न भेद्यो रे पास।
विलंब न कीधी रे वछूटतां, ए तामसियोना प्रकास।। १८ ।।

संसार के सब काम करते हुए मन में जरा भी माया का रंग नहीं चढ़ा और वृन्दावन जाते समय संसार को छोड़ने में पलभर की भी देर नहीं की, ऐसे स्वभाव वाली तामसी सखी कहलाती है।

कोई सखी रे सिणगार करतां, सुणी तेणे वेण श्रवण।
पायना भूखण काने पहेरिया, कान तणा रे चरण।। १९ ।।

कुछ सखियां जो शृंगार कर रही थीं, उन्होंने बंसी की आवाज सुनकर उतावले में पैर के भूषण कान में पहने और कान के भूषण चरण में पहने।

एक नैणे रे अंजन करियूं, अने बीजो रह्यूं रे एम।
वेणनो स्वर सांभल्या पछी, राजसियो रहे रे केम।। २० ।।

उन्होंने एक आंख में काजल लगाया और दूसरी आंख बिना काजल के ही रह गई, बांसुरी की आवाज सुनने के बाद राजसी स्वभाव वाली सखी पीछे कैसे रह सकती है?

राजसिए रे कांइक नैणे डीठो, पण विचार करे तो थाय वेड।
तामसियो रे मोहोवड थैयो, राजसिए न मूक्यो तेहेनो केड।। २१ ।।

राजसियों ने अपनी आंख से अपने अधूरे शृंगार को देखा, यदि पूरा करने का विचार करें तो देरी होती थी। तामसियां पहले निकल चुकी थीं। राजसियों ने भी उनका पीछा नहीं छोड़ा और तुरन्त वह भी भाग निकलीं।

स्वांतसिए रे विचार करियो, तेने आडा देवराणा रे बार।
कुटम सगा रे सहु टोले मली, फरीने वल्या रे भरतार।। २२ ।।

स्वांतसी सखियां विचार करने लगीं इतने में बाहर जाने का दरवाजा बन्द कर दिया गया, सब सगे सम्बन्धी तथा पति एक साथ इकट्ठे हो गए।

त्यारे मन मांहें विचार करियो, ए कां आडा थाय दुरिजन।
ए सूं जाणे छे वर नहीं एनो वालैयो, तो जातां वारे छे वन।। २३ ।।

तब स्वांतसी सखियों ने मन में सोचा कि यह दुष्ट लोग क्यों रुकावट डाल रहे हैं? क्या यह नहीं जानते कि वालाजी हमारी आत्मा के धनी हैं और इसलिए वन में जाने से रोक रहे हैं?

धिक धिक पडो रे आ संसारने, कां न उठे रे अगिन।
विरह तामस रे भेलो थयो, त्यारे अंगडा थयां रे पतन।। २४ ।।

संसार के सगे सम्बन्धियों को स्वांतसी गोपियां धिक्कारती हैं कि इनको आग क्यों नहीं लग जाती? उनके हृदय में विरह और तामस का जोश आया और उन्होंने अपने शरीर त्याग दिए।

Nijanand App

वास्ना वहियो रे अति वेग मां, वार न लगी रे लगार।
वस्त खरी ते केम रहे वाला विना, तेणे साथ समो कीधो सिणगार।। २५ ।।

स्वांतसी सखियां भी तेजी से भागीं उन्हें जरा भी देर नहीं हुई। जो परमधाम की आत्माएं हैं, वह अपने धनी के बिना नहीं रह सकतीं। उन्होंने भी सबके साथ ही मिलकर शृंगार किए (योगमाया के तन धारण किए)।

वृजवधू कुमारकाओ नी, कही नहीं सुकजीए विगत।
ते केम संसे राखूं मारा साथने, तेनी करी दऊं जुजवी जुगत।। २६ ।।

शुकदेव मुनि ने भी ब्रजवधुओं की लड़कियों का (कुमारिकाओं का) वर्णन नहीं किया है। सुन्दरसाथ को कोई संशय न रह जाए, इसीलिए मैं उसका अलग से बयान करती हूं।

जेटली नहाती कार्तिक कुमारिका, ए वास्ना नहीं उतपन।
एनी लज्या लोपावी हरीने वस्तर, तेसूं कीधो वायदो वचन।। २७ ।।

कार्तिक के महीने में जो कुमारिका सखियां स्नान करती थीं, परमधाम में उनके तन नहीं हैं। वस्त्रहरणलीला में उनकी शर्म छुड़ाने के लिए ही वस्त्रों को हरण किया और उनके मांगने पर लीला करने का वायदा किया।

जे सखी हुती कुमारका, घर नहीं तेहेना अंग।
सनेह बल दया लीधी धणीतणी, ते मलीने भली साथने रंग।। २८ ।।

जो ब्रज में कुमारिका सखियां थीं उनके परमधाम में तन नहीं हैं। उनके अटूट प्रेम के कारण ही उन पर धनी की कृपा हुई, जिससे वह भी तन छोड़कर योगमाया में ब्रह्मसृष्टियों के साथ मिल गईं।

साथ दोडे रे घणवे आकलो, मननी न पोहोंती हाम।
जोगमाया आवी सामी जुगत सों, सिणगार कीधो एणे ठाम।। २९ ।।

सब आत्माएं व्याकुल होकर दौड़ीं क्योंकि विरह के बाद मिलन की इच्छा पूरी नहीं हुई थी। अब योगमाया का ब्रह्माण्ड सामने आ गया, इसलिए सबने कालमाया के तनों को छोड़कर योगमाया के नए शृंगार किए (तन धारण किए)।

सुणोजी साथ कहे इंद्रावती, जोगमाया नो जुओ विचार।
ए केणी पेरे हूं वरणवुं, मारा साथ तणो सिणगार।। ३० ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे साथजी! (हे जयराम भाई) अब योगमाया का विचार करके देखो, मैं अपने सुन्दरसाथ के शृंगार का किस तरह से वर्णन करूं?

वचन धणी तणां में साभल्यां, मारा गजा सारूं रे प्रमाण।
एक स्यामाजीने वरणवुं, बीजो साथ सकल एणी पेरे जाण।। ३१ ।।

श्री जयराम भाई को समझाते हुए श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि हवसा में मैंने धनी के मुखारबिन्द से जो सुना और अपनी बुद्धि के अनुसार ग्रहण किया है, उसी के अनुसार केवल श्री श्यामाजी के शृंगार का वर्णन करती हूं। बाकी सब सुन्दरसाथ का भी शृंगार ऐसा ही समझना।

।। प्रकरण ।। ५ ।। चौपाई ।। १८४ ।।

Nijanand App

श्री ठकुराणीजीनो सिणगार

राग धनाश्री

अखंड सरूपनी अस्थिर आकारे, सोभा कहूं घणवे करीने सनेह।
जोई जोई वचन आंणूं कै ऊंचा, पण न आवे वाणी मांहें तेह।
सोभा सिणगार, स्यामाजीनो निरखूंजी।। १ ।।

मैं अपने मिटने वाले शरीर से, सदा सत सरूप श्री श्यामाजी के श्रृंगार की शोभा का बड़े प्रेम के साथ वर्णन करती हूं, परन्तु फिर भी एक जैसा श्रृंगार का वर्णन यहां की जिह्वा से करना आसान नहीं है, इसलिए मैं श्री श्यामाजी के श्रृंगार की शोभा को देखती हूं।

ए सोभा न आवे वाणी मांहें, पण साथ माटे कहेवाणी।
ए लीला साथना रुदेमां रमाडवा, तो में सबदमां आणी।। २ ।।

इस श्रृंगार की शोभा का वर्णन यहां की वाणी में करना सम्भव नहीं है, पर इसे सुन्दरसाथ के वास्ते कहा है, ताकि यह लीला सुन्दरसाथ के हृदय में बैठ जाए, इसलिए इसे शब्दों में पिरोया है। ऐसे अखण्ड स्वरूप को बार-बार देखकर जो ऊंचे-से-ऊंचे शब्दों का प्रयोग हो गया है, उसका वर्णन यहां के शब्दों से नहीं किया जा सकता।

चरण अंगूठा अति भला, पासे कोमल आंगलियो सार।
रंग तो अति रलियामणो दीसे, नख हीरा तणां झलकार।। ३ ।।

श्री श्यामाजी महारानी के चरण कमलों का अंगूठा अति सुन्दर है। लगती हुई उंगलियाँ भी अति कोमल और सुन्दर हैं। इनका रंग भी बड़ा लुभावना है। नाखून तो हीरे की तरह चमक रहे हैं।

हीरा ते पण तेहज भोमना, आ जिभ्या तिहां न पोहोंचाय।
आणी जिभ्याए जो न कहूं साथने, तो रुदे प्रकास केम थाय।। ४ ।।

हीरे की उपमा में भी योगमाया का हीरा समझना, संसार का मिटने वाला हीरा नहीं। यहां के शब्द वहां नहीं पहुंच सकते। इस जिह्वा से यदि न कहूं तो सुन्दरसाथ के हृदय में जानकारी कैसे आएगी?

फणा तो रंग पतंग छे, कांकसा नसो निरमल निरधार।
कूकम रंगे पानी सोभे, चरण तली वली सार।। ५ ।।

चरण के पंजे का रंग लाल है और उंगलियों के बीच की नसें अति निर्मल हैं। एड़ी का रंग लाल है और चरणों की तली और भी सुन्दर है।

लांक तो दीसे अति लेहेकतो, रेखा सोभित अति पायजी।
टांकण घूंटीने कांडा कोमल, पीडी ते वरणवी न जायजी।। ६ ।।

चरणों के नीचे की गहराई (लांक) अति झलक रही है और पैरों के नीचे की रेखाएं अति शोभायमान हो रही हैं। एड़ी के ऊपर का हिस्सा (टांकन), टांकन के पास में गोल घुण्डी (घूंटी) तथा पायल पहनने वाला भाग (काण्डा) नरम है तथा पिंडली का तो वर्णन करना आसान नहीं है।

कुन्दन केरा अनवट सोहे, विछुडा करे ठमकार।
माणक मोती ने नीला पाना, जुगते अति जडाव।। ७ ।।

अंगूठे की खरे सोने (कुन्दन) की मुद्रिका (मुन्दरी, अनवट) शोभायमान है तथा उंगलियों के बिछुए चलने पर बजते हैं। इनमें माणिक, मोती, नीलवी, पन्ना के नग भलीभांति जड़े हैं।

Nijanand App

कांबी कडला रणझण बाजे, घुंघरी तणां घमकार।
हेम तणां वाला मांहें गठिया, मांहें झांझर तणो झमकार।। ८ ।।

काम्बी (पायजेब), कड़ला, (चूड़ा, कड़ा) आपस में टकराते हैं तो रण-झण की आवाज आती है और घुंघरी की (जो तीसरा आभूषण है) आवाज घम-घम की आती है। वह घुंघरियां सोने के तार में बांधी गई हैं। इसी आवाज में चौथे आभूषण झांझरी की झन-झन की आवाज आती है।

कांबिए नंग आसमानी फूल वेल, जुगते कुन्दन जडाव।
जडाव लाल नंग नीला पीला, कडले सोभा अति थाए।। ९ ।।

काम्बी में फूल-बेल की तरह आसमानी रंग के नग अच्छे ढंग से सोने में जड़े हैं। लाल, नीले, पीले, नग कड़ले में जड़े होने से शोभायमान हो रहे हैं।

घूंघरडीनो घाट जुगतनो, कोरे करडा कुन्दन।
मांहें मोती फरतां दीसे, मध्य जडिया नीला नंग।। १० ।।

घुंघरी एक नए रूप से बनी है, जिसकी किनार पर सोने के दाने जड़े हैं। चारों ओर मोती जड़े हैं और बीच में नीला नग जड़ा है।

झांझरिया एक जुई जुगतना, कोरे लाल जडाव कांगरी।
एक हार बे हीरा तणी, बीजी मध्य दरपण रंग दोरी।। ११ ।।

झांझरी की बनावट भी एक अलग ढंग की है, जिसके किनारे पर कांगरी जैसे लाल नग जड़े हैं और एक हार दो हीरों की तथा दोनों हीरों के हार के बीच में दर्पण की तरह चमकती एक डोरी है।

भूखन चरणे सोभंता, अने बोलंता रसाल।
जुजवी जुगतना जवेर ज दीसे, करे ते अति झलकार।। १२ ।।

इस प्रकार के आभूषण चरणों में शोभा दे रहे हैं। इनमें से रसीली मनमोहक आवाज निकलती है। अलग-अलग किस्म के जवेर (जवाहरात) जड़े हैं जो बहुत ही झलक रहे हैं।

वस्तर केणी पेरे वरणवूं, ए तां सायर अति सरूप।
मारा जीवनी खेवना भाजवा, हूं तो कहूं गजा सारूं कूप।। १३ ।।

सागर के समान श्री श्यामाजी के स्वरूप के वस्त्रों का वर्णन किस तरह से करूं? मैं अपने मन की चाह मिटाने के लिए कुएं के समान छोटी सी बुद्धि से वर्णन करती हूं।

नीली ते लाहिनो चरणिया, अने मांहें कसवनी भांत।
कोरे कोरे कांगरी, इंद्रावती जुए करी खांत।। १४ ।।

नीले रंग के चमकदार कपड़े का लहंगा (घाघरा) है, जिसमें कसीदा किया गया है (भरत काम) तथा जिसके किनारे पर कांगरी बनी है। श्री इन्द्रावतीजी मन लगाकर देख रही हैं।

कांगरी केरी जुगत जोइए, दृढ करीने मन।
माणक मोती हीरा कुन्दन, नीला ते पाच रतन।। १५ ।।

कांगरी की बनावट को ध्यान से देखें तो माणिक, मोती, हीरा, नीलवी तथा पन्ना के नग सोने के तार में जड़े दिखाई देते हैं।

Nijanand App

भांत तो भली पेरे वरणवुं, मांहें वेल सुनेरी सार जी।
वस्तर समियल बणियल दीसे, नव सूझे कोए तार जी।। १६ ।।

कढ़ाई (भरत काम) का अच्छी तरह से वर्णन करती हूं। उसमें सुनहरी बेल शोभा देती है जो एक समान बनी है और कपड़े का धागा दिखाई नहीं देता।

अनेक विध ना फूलज दीसे, मांहें जवेर तणां झलकार जी।
नाडी तो अति सोभा धरे, जेमां रंग दीसे अग्यार जी।। १७ ।।

लहंगे की कढ़ाई में अनेक प्रकार के फूल बने हैं। फूलों की बनावट में जवेर (जवाहरात) झलक रहे हैं। ग्यारह रंग के धागे से नाड़ा (नाला) बना है, जो अति शोभायमान है।

नीलो पीलो सेत सेंदुरियो, मांहें कसवनी भांत जी।
स्याम गुलालियो अने केसरियो, मांहें जांबू ते रंगनी जात जी।। १८ ।।

नीला, पीला, सफेद, सेंदुरिया, काला, गुलाल, केसरिया, जाम्बू रंग का कसीदा किया है (भरत काम)।

जुगत एक वली जुई छे, ऊभी लाखी लिबोईनी दोर।
मानकदे दृढ करीने जुए, सोभित बंने कोर।। १९ ।।

नाड़े की बनावट में एक और शोभा दीखती है। लाखी और नीबू के रंग की खड़ी धाराएं शोभा देती हैं। "मानकदे" नाड़े के दोनों किनारे की शोभा को बड़ी गौर से देख रही हैं।

चीण चरणिए जोइए, मांहें वेल मोती झलकंत।
राती नीली चुन्नी कुन्दनमां, भली पेरे मांहें भलंत।। २० ।।

घाघरे की चुन्नट को देखो। उसमें मोतियों की बेल झलक रही है तथा लाल, नीले जवाहरात सोने में भली-भांति जड़े दीखते हैं, जैसे उसमें मिल ही गए हों।

ए ऊपर जे सोभा धरे, कांई तेहेनो न लाभे पार।
अंग चरणियो प्रगट दीसे, साडी मांहें सिणगार।। २१ ।।

घाघरे के ऊपर की शोभा अपरम्पार है। अंग के ऊपर पहना हुआ घाघरा साड़ी में से झलक रहा है।

छूटक छापा कुन्दन केरा, साडी सेंदुरिए रंग।
हीरा माणक मोती लसणिया, मध्य पांच वानिना नंग।। २२ ।।

सेंदुरिया रंग की साड़ी में अलग-अलग सोने की छपाई दिखाई देती है। हीरा, माणिक, मोती, लसनिया तथा बीच में पन्ना के नगों की बनावट शोभा दे रही है।

सोभा तो घणुए सोहामणी, जो दृढ करी जोइए मन।
झीणा वस्तर ने अति उत्तम, कानिए दोरी त्रण।। २३ ।।

मन को स्थिर करके (एकाग्रता) देखें तो यह शोभा अति लुभावनी है। साड़ी का कपड़ा बहुत बारीक और उत्तम है, जिसकी किनारी पर तीन डोरी की बनावट है।

मांहें मोती कोरे कसवी, त्रीजी नीली चुंनी सार।
अनेक विधनी वेल जो सोभे, छेडे करे झलकार।। २४ ।।

बीच में मोती, किनारे पर कसीदा, तीजी नीले रंग के दाने की शोभा है। साड़ी में अनेक प्रकार की बेलें शोभा देती हैं और साड़ी के पल्ले झलक रहे हैं।

Nijanand App

सुन्दर लांक सोहामणो, वांसो दीसे साडीमां अंग।
वेंण तले कंचुलीनी कसो, जुगते सोहे बंध।। २५ ।।

पीठ की गहराई (रीढ़ की हड्डी वाली जगह) की जगह साड़ी में से दिखाई दे रही है और चोटी के नीचे चोली के बन्ध बड़ी युक्ति से बंधे दिखाई देते हैं।

अंगनो रंग निरख्यो न जाय, क्यांहें न माय क्रण क्रांत।
पेट पांसा उर कंठ निरखतां, इंद्रावती पामे स्वांत।। २६ ।।

श्री श्यामाजी के अंग के रंग की किरणों की रोशनी देखी नहीं जा सकती (आंखें चकाचौंध हो जाती हैं)। श्री इन्द्रावतीजी पेट, पसलियां, सीना, कण्ठ को देखकर चैन पाती हैं।

अंगनो रंग अजवास धरे, तिहां स्याम चोली सोभावे।
सुन्दर सर्व सिणगार सोहावे, तिहां लेहेर भूखण क्रण आवे।। २७ ।।

श्री श्यामाजी के गौर रंग पर काले रंग की चोली अति शोभा देती है और सब श्रृंगार इतना सुन्दर है कि भूषणों की किरणें लहरा रही हैं।

कसकसती चोली ने कठण पयोधर, पीला खडपा सोभंत।
कस ठामे जे कांगरी, तिहां नीला जवेर झलकंत।। २८ ।।

काले रंग की चुस्त चोली (ब्लाऊज) पर पीले रंग के खडपे चुस्त स्तनों पर शोभा दे रहे हैं। पीठ पर जहां तनी लगी हैं, वहां नीले रंग के जवाहरात झलकते हैं।

भरत भली पेरे सोभित, कांई पचरंग चुन्नी सार।
अनेक विध ना फूल वेल, खुसबोए तणा वेहेकार।। २९ ।।

चोली के नीचे वाले हिस्से में जो भराव भरा है उसमें पांच रंग के नगों की तरह-तरह से चुन्नट शोभा देती है, जिसमें अनेक प्रकार की फूल-बेल हैं और उस फूल-बेल में से सुगन्ध आ रही है।

कंचुकी जडाव छे जुगत जुजवी, ऊपर आभ्रण भली भांत।
सुन्दर सरूप जोई जोईने, मारो जीव थाय निरांत।। ३० ।।

चोली के जड़ाव की युक्ति अति सुन्दर है और उसके ऊपर की ओढ़नी अच्छी तरह से ओढ़ी है। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि ऐसे सुन्दर स्वरूप को देख-देखकर मेरे जीव को करार मिलता है।

कंठ केणी पेरे वरणवु, मारा जीवने नथी कांई बल।
पांच हार तिहां प्रगट दीसे, सोभित दोरे वल।। ३१ ।।

श्री श्यामाजी के गले का वर्णन किस तरह करूं? मेरे जीव के अन्दर शक्ति नहीं है। गले में पांच हार सामने डोरियों से बंधे दिखाई देते हैं।

एक हार हीरा तणो, बीजो पाच वरण रतन।
त्रीजो हार मोती निरमल नो, कांई चौथो हेम कंचन।। ३२ ।।

एक हार हीरे का है, दूसरा हार हरे रंग के रत्न का है, तीसरा हार स्वच्छ मोतियों का है, चौथा हार शुद्ध सोने (कंचन) का है।

Nijanand App

हेम तणो हार जुई रे जुगत नो, नवसर नव पाटली।
जडाव हीरा पाच रतन मोती, मांहें माणक ने नीलवी।। ३३ ।।

पांचवां हार सोने का एक नए डिजाइन का है जो नौ लड़ियों का है, जिसमें जगह-जगह पर नौ पटलियां लगी हैं (रानी हार है)। उसमें हीरा, पाच, मोती, माणिक तथा नीलवी नग जड़े हैं।

उतरी त्रण सर सोभंती, कांई दोरो जडित अचंभ।
हूं केणी पेरे वरणवुं, मारी जिभ्या आणे अंग।। ३४ ।।

सबसे नीचे वाले उतरी हार में तीन लड़ें शोभा दे रही हैं। जिनकी डोरियों में अद्भुत जड़ाव है। मैं अपनी इस झूठी जुबान (नश्वर जिह्वा) से इसका कैसे वर्णन करूँ?

कंचुकी ना कांठला ऊपर कोरे, कांई दोरे तेज अपार।
सात रंगना नंग पाधरा, जोत करे झलकार।। ३५ ।।

चोली के गले की किनारी पर अनेक तेजोमयी डोरी बनी हैं, जिनमें सात रंग के नग जड़े हैं जो चमक रहे हैं।

मांहें मोती माणक हीरा, पाना ने पुखराज जी।
कुन्दन मांहें रतन नंग झलके, रमवा सुन्दरी करे साज जी।। ३६ ।।

चोली के गले की किनारी पर जो डोरियाँ हैं उनमें मोती, माणिक, हीरा, पन्ना, पुखराज के नग कुन्दन (सोने) में जड़े चमक रहे हैं। ऐसे श्रृंगार से खेलने के लिए श्री श्यामाजी शोभायमान हैं।

कांठले माणक ने वली मोती, कुन्दन मांहें पाना नंग।
चीड तणी चारे सर सोभें, कोई धात वसेकना रंग।। ३७ ।।

गले में जो चीड का हार चार लड़ियों का शोभा देता है, वह कोई विशेष ही धातु का बना है। उसके किनारे पर माणिक, मोती, पन्ना के नग सोने में जड़े हैं।

ए ऊपर वली निरखी ने जोइए, तो कंठसरी भली गई अंग।
कंठसरी केरी कली जुजवी, कांई जुजवा छे तेहेना नंग।। ३८ ।।

इस चीड के हार के ऊपर देखें तो कण्ठसरी (विचौली) का हार गले से चिपका हुआ है। उसकी कलियां अलग-अलग बनी हैं और उनमें अनेक प्रकार के नग जड़े हैं।

कंठसरी जडाव जुगतनी, मांहें राती नीली जवेरो नी हार।
सकल सिणगार स्यामाजीने सोभे, कुन्दन मां मोती झलकार।। ३९ ।।

कण्ठसरी की कलियों के जड़ाव में लाल, नीले जवाहरातों की हार आई है तथा सोने के तार में मोती झलक रहा है। श्री श्यामाजी का ऐसा सम्पूर्ण श्रृंगार शोभायमान है।

नख थकी कर वरणवुं, एह जुगत अति सारजी।
आंगलियो अंगूठा कोमल, नख हीरा तणा झलकार जी।। ४० ।।

हाथ के नाखून से हाथ तक का वर्णन करती हूं जो अति उत्तम हैं। उंगलियों में अंगूठा कोमल है तथा नाखून हीरे की तरह झलक रहे हैं।

Nijanand App

झीणी रेखा हथेलिए दीसे, पोहोंचा सोभित पतंग जी।
आंगलिए वीसा वीस दीसे, कोमल कलाई अति रंग जी।। ४१ ।।

हथेली में बारीक रेखाएं दिखाई देती हैं और पंजा (पोहोंचा) लाल रंग का शोभा देता है। पांचों उंगलियों के बीसों पोरे दिखाई पड़ते हैं। कोमल कलाई अच्छे रंग की है।

वीटी जडाव छे छ आंगलिए, सातमी अंगूठी अति सार जी।
आभलियोने फरतां पाना, दरपण मां मुख झलकार।। ४२ ।।

छः उंगलियों में जड़ाव की अंगूठियां हैं। सातवीं अंगूठी अति शोभा ले रही है जिसमें शीशा जड़ा है। चारों ओर पन्ना के नग जड़े हैं। उसमें श्री श्यामाजी महारानी अपने मुखारबिन्द का शृंगार देखती हैं।

बे वीटी ने हीरा मोती, बीजी बे रंग बे रतन।
पांच रंगनी पाच एकने, एकने करडा कंचन।। ४३ ।।

दो अंगूठी हीरा और मोती की हैं। दूसरी दो अलग दो रंगों के रत्नों की हैं। एक पाच की है। इस प्रकार पांच रंग हुए। एक सोने की जिसमें छोटे-छोटे दाने हैं, ऐसी बनी है।

पोहोंची ने नवघरी दीसे, ऊपर ऊंचा नंग।
माणक मोती पाना कुन्दन, ए सोभे पोहोंची ना नंग।। ४४ ।।

पोहोंची और नवघरी कलाई में शोभायमान है जिनके ऊपर माणिक, मोती, पन्ना के नग सोने में जड़े हैं। यह नग पोहोंची में जड़े हैं।

नवघरी ने निरमल मोती, हीरा ने रतन।
कुन्दन मांहें पाना पुखराज, चूड मांहें नव रंग।। ४५ ।।

नवघरी में सुन्दर मोती और हीरे जड़े हैं और नौ रंग की चूड़ियों में पन्ना और पुखराज के नग सोने में जड़े हैं।

नव रंगना नंग जुजवा, तेहेना ते जुजवा रूप।
हूं मारी बुध सारूं वरणवुं, पण एह छे अदभूत।। ४६ ।।

नौ रंग की चूड़ियों में अलग-अलग तरह के नग जड़े हैं, जिनकी अलग-अलग बनावट है। यह अति विचित्र हैं, पर मैं तो अपनी आत्म दृष्टि से वर्णन कर रही हूं।

नीलवी ने लसणियां सोभित, पाना ने वली लाल।
माणक मोती ने हीरा कुन्दन, मांहें रतन तणां झलकार।। ४७ ।।

नीलवी, लसनियां, पन्ना, लाल, माणिक, मोती, हीरा, कुन्दन में जड़े झलकते हैं।

कोणी आगल कांकणी, जांबू रंग नंग जडाव।
कुन्दन ना करकरियां सोभे, जोत करे अपार।। ४८ ।।

कोहनी के ऊपर कंकनी पहनी है जिसमें जामुनी रंग के नग जड़े हैं तथा कुन्दन में दाना लगा है, जो बहुत चमक रहे हैं।

Nijanand App

मोहोलिए मोती ने वली कांगरी, नीली राती चुन्नी कुन्दन।
वेल मांहें हीरा हार दीसे, इंद्रावती जुए दृढ मन।। ४९ ।।

कंकनी के मुख के ऊपर कंगूरे की बनावट में मोती जड़े हैं। नीले, लाल दाने सोने में शोभा देते हैं तथा हीरे के हार की बेल बनी है, जिसे श्री इन्द्रावतीजी ध्यान से देखती हैं।

सुंदरने सोभे एक जुगते, झण बाजे रसाल।
चूड केरा छापा अति सोभे, उर पर लटके माल।। ५० ।।

चूड़ियों के ऊपर की छपाई की बनावट मनमोहक है। चूड़ियों के टकराव से निकलने वाले स्वर अति मधुर हैं। गले में माला शोभा दे रही है।

गाल तणो रंग कह्यो न जाय, अधुर परवाली नी भांत।
दंत सोभे रंग दाडिम नी कलियो, हरवटी अधुर वचे लांक।। ५१ ।।

श्री श्यामाजी के गालो के रंग की शोभा का वर्णन नही हो सकता। होंठ मूंगे के रंग जैसे सुन्दर हैं। दांत अनार के दानों के रंग की कलियों की भांति हैं। होंठ और ठोडी के बीच की गहराई (लांक) शोभा देती है।

मुख चौक सोभित अति मांडनी, अने झलके काने झाल।
जडाव माणक मोती ने हीरा, कुन्दन मां पाना लाल।। ५२ ।।

श्री श्यामाजी का मुखारबिन्द अत्यन्त सुन्दर है। कानों में झुमकियां लटक रही हैं जिसमें माणिक, मोती, हीरा, पन्ना तथा लाल नग सोने में जड़े हैं।

नासिका बेसर लाल मोती लटके, आंखडिए अंजन सोहे।
पापण चलवे ने पिउजीने पेखे, चतुराईए मन मोहे।। ५३ ।।

नाक में बेसर (बुलाक) पहनी है, जिसमें लाल और मोती लटकते हैं। आंखों में काजल शोभा देता है। पलकों को चतुराई से चलाकर अपने धनी का मन मोहती हैं।

नेंणा चपल अति अणियाला, ने रेखा सोभे मांहें लाल।
बेहुगम्मा भ्रकुटीनी सोभा, टीलडी ते मध्य गुलाल।। ५४ ।।

श्री श्यामाजी की आंखे मृगनयनी हैं, जिनमें लाल-लाल रेखाएं शोभा देती हैं। दोनों तरफ भौंहों की शोभा है, जिनके बीचोंबीच गुलाल की बिन्दी है।

मारा साथ सुणो एक वातडी, आ सरूप ते केम वरणवाय।
एक भूखण तणी जो भांत तमे जुओ, तो आणे देह जीव न खमाय।। ५५ ।।

मेरे प्यारे सुन्दरसाथजी ! एक बात सुनो, इस स्वरूप की शोभा का वर्णन करना आसान नहीं है। श्रृंगार के एक ही भूषण को आप देखोगे तो शरीर से देखा नहीं जायेगा। (सहन नहीं करेगा)।

एक बेसर ऊपर लालज दीसे, ते लालक नो न लाभे पार।
जेटला मांहें मीट फरी वले, एटले दीसे झलकार।। ५६ ।।

बेसर के ऊपर जो लाल लगा है, उस लाल की लालिमा की शोभा अपार है। जहां तक नजर जाती है, वहां तक उसी का तेज दिखाई देता है।

Nijanand App

खीटलडी जडाव भली पेरे, मांहें लाल हीरा सुचंग।
माणक मोती नीला पाना, मांहें पांच वानि ना नंग।।५७ ।।

नाक की खूंटी (कोका, कील, पुंगरिया, जड़) का जड़ाव सुन्दर है जिसमें लाल, हीरा, माणिक, मोती, नीलम, पन्ना तथा पांच तरह की बनावट के नग जड़े हैं।

करण लवने जे सोभा धरे, ऊपर साडी नी कोरे।
सणगटडा मांहें पिउजीने पेखे, आडी दृष्टें हेरे।।५८ ।।

कानों की झुमकी के ऊपर साड़ी का किनारा शोभा देता है और घूंघट में तिरछी नजर से धनी को देखती हैं।

निलवट वेणा चोकडो, पांच मोती तिहां सोभे।
लाल पाच कुन्दन मांहें सोभित, जोई जोईने जीव थोभे।।५९ ।।

माथे के ऊपर टीका (बेंदा) शोभा देता है, जिसमें पांच मोती शोभा देते हैं। लाल, हरा, सोने में जड़े हैं, जिसे देखते ही नजर वहीं टिक जाती है।

पटली सामी छ फूली सोभे, मध्य सेंदुरनी रेखे।
बेहू गमा मोती सर सोभे, इन्द्रावती खांत करी पेखे।।६० ।।

माथे पर जो पट्टी बंधी है, उसमें छः फूलों की बनावट है। मांग में सिंदूर की रेखा शोभायमान है। दोनों ओर मोतियों की लड़ियां शोभा देती हैं, जिनको श्री इन्द्रावतीजी अति चाहना से देखती हैं।

चार फूली ते फरती दीसे, बे फूली अणियाली।
मध्य लाल मोती फरतां पाना, ए जुगत क्यांहे न भाली।।६१ ।।

पटली के छः फूलों में से चार गोल बने हैं और दो नोंकदार हैं। इनके मध्य में लाल, मोती, पन्ना घेर कर आए हैं। ऐसी सुन्दर शोभा कहीं दिखाई नहीं दी।

राखडली मां रतन नंग झलके, हीरा पाना बेहू भांत।
माणक मोती फरतां दीसे, वेण चुए गूंथी अख्यात।।६२ ।।

राखड़ी (बीज) माथे के एक जेवर का नाम, में जड़े नग झलक रहे हैं। हीरा और पन्ना, माणिक, मोती घेर के आए हैं। चोटी को अति सुगन्धित तेल लगाकर गूंथा है।

पांच रंगना पांचे फुमक, सोहे मूल वेणनें बंध।
गोफणडे फुमक जे दीसे, तेहेनो स्याम कसबी रंग।।६३ ।।

चोटी में पांच रंग के पांच फुमक मूलबन्ध में शोभा देते हैं। चोटी के नीचे के भाग गोफण्डा (फुन्दरिया) में काला और लाल (कसबी) रंग के फुमक शोभा देते हैं।

गोफणडे घूंघरडी फरती, अने बोलंती रसाल।
फरता पाना दोरी बंध सोभे, वेण लेहेके जेम व्याल।।६४ ।।

गोफण्डा में घूंघरी लगी है जो मधुर आवाज करती है, उनमें पन्ना के नग एक लाइन में जड़े दिखाई देते हैं, चोटी सर्प की भांति हिलती (लहराती) है।

Nijanand App

मुख मांहें बीडी तंबोलनी, मंद मरकलडो सोभे।
इंद्रावती नेंणेसूं निरखे, अति घणूं करीने लोभे।। ६५ ।।

श्री श्यामाजी के मुखारबिन्द में पान का बीड़ा शोभा देता है, जिससे श्री श्यामाजी के मुस्कराने पर मुखारबिन्द के अन्दर की शोभा और सुन्दर हो जाती है। श्री इन्द्रावतीजी में अधिक प्यार से देखने की ललसा होती है।

मुखडूं निहाले अंगूठीमां, सोभा धरे सर्वा अंग।
सणगटडो सिणगार सोभावे, श्री कृष्णजी केरी अरधंग।। ६६ ।।

श्री श्यामाजी महारानी अपने सब अंगों की शोभा अगूंठी वाले दर्पण में देखती हैं। श्री कृष्णजी की अर्द्धांगनी के घूंघट की अत्यन्त शोभा है।

मुखथी वाणी जे ओचरे, कांई ए स्वर अति रसाल।
एक मात्र कणका जो रुदे आवे, तो थाय फेरो सुफल संसार।। ६७ ।।

श्री श्यामाजी अपने मुखारबिन्द से जो वचन कहती हैं वह अति रसीले होते हैं। उनमें से एक जरा (कण) मात्र भी ह्रदय में आ जाए तो जीवन सफल हो जाए।

सूच्छम सरूप ने उनमद अंगे, केणी पेरे ए वरणवाय।
मारी बुध सारूं हूं वरणवुं, इंद्रावती लागे पाय।। ६८ ।।

श्री श्यामाजी का (योगमाया वाला तन) सूक्ष्म तन मस्ती से भरा हुआ है, जिसका वर्णन कैसे हो? श्री इन्द्रावतीजी चरणों में लगकर अपनी आत्मा की शक्ति के अनुसार वर्णन करती हैं।

पांउं भरे एक भांतसूं, स्यामाजी सोभे एणी चाल।
जीव निरखीने नेत्र ठरे, इंद्रावती लिए रंग लाल।।। ६९ ।।

श्री श्यामाजी निराली लटकनी चाल से चलती हैं। जिस चाल को देखकर श्री इन्द्रावतीजी की आंखें ठर जाती हैं (तृप्त हो जाती हैं) और मन प्रसन्नता से भर जाता है।

ए सिणगार जोइए ज्यारे निरखी, त्यारे सूं करे मायानो पास।
साथ सकल तमे जो जो विचारी, वली स्यामा ते आव्या साख्यात।। ७० ।।

ऐसी खिंचावट वाले श्रृंगार को देखते ही माया कोसों दूर भागती है। हे सुन्दरसाथजी! तुम सब विचार करके देखो तो ऐसा लगेगा जैसे श्री श्यामाजी साक्षात् आ गई हैं।

सुन्दर सोभा स्यामाजी केरी, निरखी निरखी ने निरखूं जी।
अंतर टाली ने एक थया, इंद्रावती कहे हूं हरखूं जी।। ७१ ।।

श्री श्यामाजी के ऊपर कहे श्रृंगार की शोभा और सुन्दरता को टिक टिकी बांधकर देखती ही रहूं। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि इस स्वरूप को देखकर अन्तर आड़ा टल गया और हम एक हो गए जिससे मैं आत्म विभोर हो गई।

।। प्रकरण ।। ६ ।। चौपाई ।। २५५ ।।

Nijanand App

श्रीसाथनो सिणगार
राग धनाश्री

जोगमाया नो देह धरीने, श्री स्यामाजी थया तैयार।
ततखिण तिहां तेणे ठामे, मारे साथे कीधो सिणगार।। १ ।।

कालमाया का तन छोड़कर योगमाया का तन धारण कर श्री श्यामाजी (इस तरह का शृंगार कर) तैयार हो गईं। तुरन्त उसी समय उसी स्थान पर सब साथ ने भी उसी प्रकार का शृंगार धारण किया।

सोभा सागर साथ तणी, सखी केणी पेरे ए वरणवाय।
हूं रे अबूझ कांई घणूं नव लहूं, एनो निरमाण केम करी थाय।। २ ।।

सुन्दरसाथ की शोभा सागर के समान है। मैं अबूझ हूं ज्यादा ग्रहण नहीं कर सकती। तो फिर पूरे समूह के रूप का वर्णन कैसे करूं?

कोटान कोट जाणे सूरज उदया, ब्रह्मांड न माय झलकार।
प्रघल पूर जाणे सायर उलट्यो, एक रस थई सर्वे नार।। ३ ।।

ऐसा लगता है मानो करोड़ों सूर्य एक साथ उदय हो गए हों और उनकी रोशनी ब्रह्माण्ड में नहीं समा रही हो। सुन्दरसाथ का एक-सा शृंगार देखकर ऐसा लगता है जैसे सागर में लहरों की बाढ़ आ गई हो।

एक नखतणी जो जोत तमे जुओ, तेमां कई ने सूरज ढंपाए।
केम करी सोभा वरणवूं रे सखियो, मारो सब्द न पोहोंचे त्यांहे।। ४ ।।

एक नाखून के तेज का इतना प्रकाश है कि कालमाया के करोड़ों सूर्यों का प्रकाश ढक जाता है। तो फिर, हे सुन्दरसाथजी ! इस सागर समूह (सुन्दरसाथ के शृंगार) की शोभा का वर्णन करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं।

वली गुण जो जो तमे नखतणां, हूं तेहनो ते कहूं विचार।
सूरज दृष्टें तापज थाय, आणे अंग उपजे करार।। ५ ।।

अब नाखून के गुण की तरफ देखो तो इसको देखने से मन को आनन्द मिलता है, जबकि सूर्य को देखने पर तपन से मन पीड़ित होता है।

साथतणी रे साडियो ज्यारे जोइए, तेमां रंग दीसे अपार।
अनेक विधना जवेरज दीसे, करे ते अति झलकार।। ६ ।।

सुन्दरसाथ की साड़ियों को यदि देखें तो उनके रंग बेशुमार दिखाई देते हैं। उन साड़ियों में जड़े जवाहरात अति चमकते हैं।

तेवा सरूप ने तेवा भूखण, तेज तणा अंबार।
ए अजवालूं ज्यारे जीव जुए, त्यारे सूं करे संसार।। ७ ।।

जैसे सुन्दर स्वरूप सखियों के हैं, वैसे ही अनके भूषण तथा उनके बेशुमार (अनन्त) शोभा के तेज को जब कोई जीव देख ले, तो माया तुरन्त छूट जाएगी।

Nijanand App

मांहों मांहें वालाजीनी वातो, बीजो चितमां नथी उचार।
ततखिण वेण सांभलतां वल्लभ, खिण नव लागी वार।। ८ ।।

सुन्दरसाथ सदा आपस में वालाजी की ही बातें करते थे। उनके चित्त में और कुछ बोलने का विचार आता ही नहीं था। उसी समय वालाजी की बांसुरी की आवाज सुनते ही संसार छोड़ने में सखियों को एक पल नहीं लगा।

मन उमंग वालाजीसूं रमवा, आयत अति घणी थाय।
आनन्द मांहें अति उजाय, धरणी न लागे पाय।। ९ ।।

सखियों के मन में अपने धनी के साथ रास रमण करने की अति अधिक चाह थी, इसलिए वह आनन्द विभोर होकर ऐसी दौड़ रही थीं कि मानो उनके पैर धरती पर लग ही नहीं रहे हैं।

भूखण स्वर सोहामणा, मुख वाणी ते बोले रसाल।
ए स्वरने ज्यारे श्रवणा दीजे, त्यारे आडो न आवे पंपाल।। १० ।।

सखियों के मुखारबिन्द की रसभरी वाणी तथा उनके भूषणों के मधुर स्वरों को जब ध्यान से सुनें तो संसार आड़े नहीं आता, अर्थात् माया छूट जाती है।

साथ सकल मारा वाला पासे आव्यो, मन आणी उलास।
विविध पेरे वालाजीसुं रमवा, चितमां नथी मायानो पास।। ११ ।।

मन में अति उमंग से भरे साथ वालाजी के पास आए। उनके चित्त में अनेक प्रकार से रास रमण की चाहना थी और कोई माया का रंग नहीं था।

रस भर रंग वालाजीसुं रमवा, उछरंग अंग न माय।
इंद्रावती बाई कहे धामना साथने, हूं नमी नमी लागूं पाय।। १२ ।।

सखियों के मन में अपने धनी के साथ रमने के लिए (खेलने के लिए) उत्साह अंग में समाता नहीं। ऐसे धाम के सुन्दरसाथ के चरणों में श्री इन्द्रावतीजी झुक-झुककर प्रणाम करती हैं।

।। प्रकरण ।। ७ ।। चौपाई ।। २६७ ।।

श्रीराजजीनो सिणगार

पेहेलो सिणगार कीधो मारे वालेजीए, तेहेनो ते वरणवुं लवलेस।
पछे संवाद वालाजी साथनो, ते मारी बुध सारूं कहेस।। १ ।।

कालमाया के ब्रह्माण्ड को छोड़कर योगमाया के ब्रह्माण्ड में सबसे पहले वालाजी ने प्रवेश कर योगमाया का नया तन धारण कर शृंगार किया। उसका थोड़ा-सा वर्णन श्री इन्द्रावतीजी करती हैं। इसके बाद सखियों और वालाजी में आपस में जो बातें हुई, वह अपनी बुद्धि के अनुसार वर्णन करेंगी।

सोभा रे मारा स्याम तणी, सखी केणी पेरे वरणवुं एह।
सब्दातीत मारा वालाजीनी सोभा, मारी जिभ्या आंणी देह।। २ ।।

मेरे श्री राजजी महाराज के शृंगार की शोभा शब्दों से परे है। मेरी जुबान (जिह्वा) इस सांसारिक देह की होने से कैसे वर्णन करे?

Nijanand App

चरण तणा अंगूठा कोमल, नख हीरा तणा झलकार।
रंग तो जोई जोई मोहिए, पासे कोमल आंगलियो सार।। ३ ।।

श्री राजजी के चरण का अंगूठा अति कोमल है और नाखून हीरे के समान झलकता है, जिसका रंग देख-देखकर मन मोहित होता है। अंगूठे के साथ लगती उंगलियां अति सुन्दर और कोमल हैं।

फणा नसो अने कांकसा, अति रंग घणू रे सोहाए।
जीव थकी अलगां नव कीजे, राखिए चरण चित माहें।। ४ ।।

पंजे की नसें तथा उंगलियों के बीच की जगह अति सुन्दर है। इसको अपने चित्त में धारण कर कभी अलग न करें।

चरण तले पदमनी रेखा, करे ते अति झलकार।
पानी लांक लाल रंग सोभे, इंद्रावती निरखे करार।। ५ ।।

चरण-कमल की तली में पद्म की रेखा बहुत झलकती है। एड़ी और लांक लाल रंग की शोभा दे रही है, जिसे देखकर श्री इन्द्रावतीजी को आराम मिलता है।

टांकन घूंटी ने कांडा कोमल, कांबी कडला बाजे रसाल।
घूंघरडी घम घम स्वर पूरे, माहें झांझर तणो झमकार।। ६ ।।

टखना (गिट्टा) घूंटी तथा पांव की पिंडरी कोमल है। जिसमें पायजेब और कड़ला की आवाज रसीली है। घुंघरी घम-घम की आवाज करती है और इनके बीच में झांझरी की आवाज झन-झन करती है।

कांबी कडला जुगते जडियां, सात वानि ना नंग सार।
लाल पाना हीरा माणक नीलवी, कुन्दनमां मोती झलकार।। ७ ।।

कांबी और कडला में सात प्रकार के सुन्दर नग जड़े हैं। लाल, पन्ना, हीरा, माणिक, नीलवी, मोती सोने में जड़े झलक रहे हैं।

झांझरियां जडाव जुगतनां, करकरियां सोभंत।
घूंघरडी करडा जडतरमां, झलहल हेम करंत।। ८ ।।

झांझरी का जड़ाव अलग ही तरीके का है, जिसमें दाने-दाने शोभा देते हैं। सोने की घूंघरी में सोने के जड़े नग झलकार करते हैं।

कनक तणां वाला माहें गठिया, निरमल नाका झलकंत।
झांझरियां मां जुगते जडियां, भली पेरे मांहें भलंत।। ९ ।।

सोने की तार में घूंघरी गूंथी हुई है, जिनके नाके-कुण्डे सुन्दर शोभा दे रहे हैं। झांझरी में जड़ाव भी ऐसे जड़े हैं कि मानो उसी में ही मिल गये हों।

पीडी ऊपर पायचा, ने झीणी कुरली झलकार।
केसरिए रंग सूथनी, इंद्रावती निरखे करार।। १० ।।

केसरिया रंग की सूथनी (चूड़ीदार पायजामा) का वह हिस्सा जो पिंडरी के ऊपर आता है (जिसे पांयचा कहते हैं) उसकी बारीक चुन्नटें झलक रही हैं। इनको देखकर श्री इन्द्रावतीजी को करार आता है।

Nijanand App

मोहोलिए मोती ने वली नेफे, वेल टांकी बेहू भांत।
नाडी मांहें नव रंग दीसे, मानकदे जुए करी खांत।। ११ ।।

सूथनी के नीचे वाले भाग के मुंह पर मोती जड़े हैं, इसी भांति नेफे पर बेल की बनावट आई है, नाड़े में नौ रंग दिखाई देते हैं जिसे "मानकदे" अति चाहना से देख रही हैं।

सेत स्याम ने सणिए सेंदुरिए, कखूबर वंने कोर।
नीलो पीलो जांबू गुलालियो, ए सोभा अति जोर।। १२ ।।

नाड़े के दोनों ओर के धागे—सफेद, काला, गुलाबी, सेंदुरिया, रोली, नीले, पीले, जाम्बू और गुलाल रंग की शोभा अति अधिक है।

पीली पटोली पेहेरी एक जुगते, मांहें विविध पेरे जडाव।
जीव तणु जीवन ज्यारे जोइए, त्यारे नव मूकाय लगार।। १३ ।।

जीव के जीवन वालाजी ने पीले रंग की पटोली (कोटी-कुर्ती) पहनी है, जिसमें तरह-तरह के जड़ाव जड़े हैं। ऐसी शोभा में धनी को देखकर पलभर भी छोड़ने को मन नहीं चाहता।

कोरे वेल जडाव जुगतनी, मध्य जडावना फूल।
जडाव झलहल जोर करे, चीर कानियांनी कोरे मस्तूल।। १४ ।।

पटोली (कोटी-कुर्ती) की किनारे पर बेल जड़ी है। मध्य में फूल जड़े हैं। उनके जड़ाव की शोभा झलझलाहट कर रही है। कोटी-कुर्ती की तनियां (कानीयां) के कोने पर रेशम के फूल बने हैं।

माणक मोती ने नीली चुन्नी, फूल वेल माहें झलकंत।
सोभा मारा स्यामजीनी जोई जोई जोइए, मारी तेणे रे काया ठरंत।। १५ ।।

कुर्ती और चुन्नट की फूल-बेल में माणिक, मोती और नीलवी के जड़ाव झलक रहे हैं। ऐसे मेरे धनी की शोभा को बारम्बार देखकर मेरे मन को चैन मिलता है।

नीलो ने कांई पीलो दीसे, कणा तणो रंग जेह।
काणी छेडा जडाव जुगते, लवलेस कहूं हूं तेह।। १६ ।।

पटोली (कोटी-कुर्ती) के नीचे की किनार के रंग कहीं नीला और कहीं पीला दिखाई देते हैं। किनार के कोने की बनावट एक खास जड़ाव की है, जिसका थोड़ा-सा मैं वर्णन करती हूं।

छेडे हेम हीरा ने पुखराज पाना, कोरे माणक नीलवी ने मोती।
काणी छेडा जुजवी जुगते, इंद्रावती खांत करी जोती।। १७ ।।

पटोली के किनारे के कोने पर सोना, हीरा, पुखराज, पन्ना, माणिक, नीलवी, मोती के नग सुन्दर ढंग से जड़े हैं, जिसको श्री इन्द्रावतीजी मन भर के देखती हैं।

अंगनो रंग कह्यो न जाय, जाणे तेज तणो अंबार।
पेट पासा उरकंठ निरखता, इंद्रावती पामे करार।। १८ ।।

वालाजी के अंग के रंग का वर्णन हो नहीं सकता जैसे वह तेज का ऊंचा पहाड़ हो (बेशुमार प्रकाश हो)। पेट, पसलियां, छाती तथा गले को देखकर श्री इन्द्रावतीजी को शान्ति मिलती है।

Nijanand App

रतन हीराना बे हार दीसे, त्रीजो हेम तणो जडाव।
चौथो हार मोती निरमलनो, करे जुजवी जुगत झलकार॥ १९ ॥

वालाजी के गले में चार हार हैं। जिसमें दो हीरे के, तीसरा सोने के जड़ाव का और चौथा मोतियों का है, इन चारों की झलकार अलग-अलग है।

उतरी जडाव सर बे सोभंती, चुंनी राती नीली जुगत।
निरखी निरखी ने नेत्र ठरे, पण केमे न पामिए तृपत॥ २० ॥

चारों हारों के नीचे दो जड़ावयुक्त दो लड़ियों वाला उतरी हार है जिनमें लाल, नीले नग जड़े हैं, उसे देख-देखकर आनन्द तो मिलता है पर तृप्ति नहीं होती।

रंग सेंदुरिए पछेडी, अने माहें कसवनी भांत।
छेडे तार ने कसवी कोरे, इंद्रावती जुए करी खांत॥ २१ ॥

सेंदुरिया रंग की पिछौरी (ओढ़नी चद्दर) है, जिसमें कसीदे की कढ़ाई की है। किनारे पर कसीदे और पल्लू पर तार से कसीदे के काम को श्री इन्द्रावतीजी बड़े चाव से देखती हैं।

अंग ऊपर आणी बंने चौकडी, छेडा बंने पासे लटकंत।
नवल वेख लीधो एक भांतनो, जोई जोईने जीव अटकंत॥ २२ ॥

पिछौरी अंग के ऊपर इस प्रकार ओढ़ी है, जिससे आगे-पीछे दो चौकड़ी बनी हैं और दोनों किनारे बाजू में (बगल में) लटक रहे हैं। इस तरह का एक नवीन भेष बनाया है, जिसको देख-देखकर के जीव की दृष्टि वहीं अटक जाती है।

कोमल कर एक जुई रे जुगतना, जो वली जोइए रंग।
झलकत नख अंगूठा आंगलियो, पोहोंचा कलाई पतंग॥ २३ ॥

कोमल हाथों की नरमाई (नम्रता) और रंग देखिए तो एक निराली ही शोभा है, जिसमें अंगूठे और उंगलियों के नाखून चमकते हैं तथा पंजे और कलाई लाल रंग के हैं।

झीणी रेखा हथेली आंगलिए, सात वीटी सोभंत।
त्रण वीटी ऊपर नंग दीसे, अति घणुं ते झलकंत॥ २४ ॥

हाथ और उंगलियों की रेखाएं बारीक हैं इनमें सात अंगूठियां शोभा देती हैं। इनमें से तीन अंगूठियों में नग जड़े हैं, वह झलक रहे हैं।

अंगूठिए लाल चुन्नी नी जडतर, बे वीटी हीरा रतन।
एक वीटी ने नीलू पानू, बीजा वाकडा वेलिया कंचन॥ २५ ॥

अंगूठियों में (अंगूठे की मुन्दरी) लाल रंग की मीनाकारी (दाने जड़े हैं) की है। दो अंगूठियां हीरा रतन की हैं। एक अंगूठी नीलम और पन्ना की है और दूसरी सोने के तार की कड़ी वाली है।

कोमल कांडे कडली सोभे, नीली जडित अति सार।
कडली पासे पोहोंची घणी ऊंची, करे ते अति झलकार॥ २६ ॥

कोमल कलाई के ऊपर चूड़ी नीलम से जड़ी अति शोभायमान है। उसके ऊपर पोहोंची अति उत्तम किस्म की पहनी है, जो झलकार करती है।

Nijanand App

मध्य माणक ने फरता मोती, पाच तणो नीलास।
किरण ज्यारे उठतां जोइए, त्यारे जोत न माय आकास।। २७ ।।

पोहोंची के मध्य में माणिक तथा घेरकर मोती तथा पन्ना के नग की हरी ज्योति उठ रही है। नगों में से निकलती हुई किरणों को देखें तो इनका प्रकाश आकाश में नहीं समाता है।

कोमल कोणी चंदन अंग चरचित, मणि जडित बाजूबंध।
कंचन कसवी फुमक बेहू लटके, सूं कहूं सोभा सनंध।। २८ ।।

कोहनी अति कोमल है। अंग पर चन्दन लगा है। मणियों से जड़े बाजूबन्ध हैं, जिनके फुमकों में सोने के कसीदे की कढ़ाई वाले दो फुमक लटक रहे हैं। ऐसी बनावट की शोभा का वर्णन कैसे करूं?

जोइए मुखारविंद गाल बंने गमां, तेज कह्यो न जाय।
अधखिण जो अलगा रहिए, त्यारे चितडां उपापला थाय।। २९ ।।

मुखारबिन्द के दोनों ओर गालों को देखो। इनके तेज का वर्णन शब्द में नहीं आ सकता है। आधे पल के लिए भी यदि इनकी शोभा आंखों से हट जाए तो चित्त बेचैन हो जाता है।

हरवटी सोहे हंसत मुख दीसे, वली जोइए अधुरनो रंग।
दंत जाणे दाडिमनी कलियो, अधुर परवालीनो भंग।। ३० ।।

हंसते हुए मुखारबिन्द पर ठुड्डी (डाढी) अति सुन्दर दिखाई देती है। उसके ऊपर होठों का रंग देखिए जो लालिमा को भी मात कर रहा है। इन होठों के बीच अनार के दानों की भांति दांतों की शोभा है।

मुख ऊपर मोती निरमल लटके, बेसर ऊपर लाल।
काने करण फूल जे सोभा धरे, ते ता झलके माहें गाल।। ३१ ।।

मुख के ऊपर बेसर की लड़ी में मोती लटकता है, जिसके ऊपर लाल नग लगा है। कानों में कर्णफूल (झुमकी) शोभा देते हैं। इनका तेज गालों पर झलकता है।

करणफूल छे अति घणूं ऊंचा, राती नीली चुन्नी सार।
निरखी निरखी जीव निरांते, माहें मोतीडा करे झलकार।। ३२ ।।

कर्णफूल (झुमकी) अति श्रेष्ठ हैं। इनमें लाल और नीले दानों की शोभा है। इनके बीच में मोती जड़ा है, जो चमक रहा है। इसे देखकर जीव तृप्त होता है।

खीटलडी वालाजी केरी, जीव करे रे जोयानी खांत।
माणक मोती हीरा पुखराज, कुन्दन माहें जडियां भांत।। ३३ ।।

कानों में कर्णफूल के ऊपर कान के मध्य भाग में खूंटी पहन रखी है, इसको देखने की जीव की इच्छा होती है। इस खीटलड़ी में माणिक, मोती, हीरा, पुखराज के नग सोने में जड़े हुए हैं।

आंखडली अणियाली सोभे, मध्य रेखा छे लाल।
निरखत नेंण कोडामणा, जीवने ताणी ग्रहे तत्काल।। ३४ ।।

नुकीली आंखों में लाल रेखाएं हैं। ऐसे लुभावने नेत्रों को देखकर जीव में खिंचावट आती है।

Nijanand App

मीठी पांपण चलवे एक भांते, तारे तेज अपार।
बेहुगमां भृकुटीनी सोभा, इंद्रावती निरखे करार।। ३५ ।।

आंखों की प्यारी पलकों को एक विचित्र ढंग से चलाते हैं, जिससे पुतलियों के तेज की अपार शोभा होती है। दोनों ओर भौंहों की शोभा है, जिनको देखकर श्री इन्द्रावतीजी को करार होता है।

निलवट सोभे तिलक नी रेखा, नीली पीली गुलाल।
बेहुगमां सुन्दर ने सोभे, रेखा मध्य बिंदका लाल।। ३६ ।।

माथे पर (कपाल) नीले पीले तिलक की रेखाएं हैं, जिनके मध्य में लाल गुलाल की बिन्दी है।

मस्तक मुकट सोहामणो, कांई ए सोभा अति जोर।
लाल सेत ने नीली पीली, दोरी सोभित चारे कोर।। ३७ ।।

सिर पर सुन्दर मुकुट की विशेष शोभा है, जिसमें लाल, सफेद, नीली, पीली घेर कर डोरियां आई हैं।

ए ऊपर जवदाणा नी सोभा, एह जुगत अदभूत।
ते ऊपर वली फूलोनी जडतर, तेना केम करी वरणवुं रूप।। ३८ ।।

डोरियों के ऊपर जवा (जौ) के दानों जैसी शोभा बड़ी ही अदभुत है। इसके ऊपर फूलों के जड़ाव हैं, जिनके रूप का वर्णन कैसे करूं?

बीजा अनेक विधना फूल दोरी बंध, करे जुजवी जुगत झलकार।
माणक मोती हीरा पुखराज, पिरोजा पाना पांचो सार।। ३९ ।।

मुकुट पर दूसरी अनेक प्रकार की डोरियां और फूल बने हैं, जो अलग-अलग तरह से झलकते हैं। इनमें माणिक, मोती, हीरा, पुखराज, फिरोजी रंग का पन्ना इन पांचों के नग जड़े हैं।

लाल लसणिया नीलवी गोमादिक, साठ सोलू कंचन।
फूल पांखडियो मणि जवेरनी, मध्य जडया छे रतन।। ४० ।।

मुकुट पर लाल, लसनियां, नीलवी, गोमादिक के नग साठ बार तपाए हुए सोने के कंचन (साढ़ सोलू) में जड़े हुए हैं। फूलों की पंखुड़ियां, मणियों और जवेरों (जवाहरात) की हैं, जिनमें रत्न जड़े हैं।

मुकट ऊपर ऊभी जवेरोनी हारो, तेमां रंग दीसे अपार।
अनेक विधनी किरणज उठे, ते तां ब्रह्मांड न माय झलकार।। ४१ ।।

मुकुट के ऊपर खड़ी जवेरों की लड़ियां हैं, जिनमें बेशुमार रंग दिखाई देते हैं। उनमें से अनेक प्रकार की किरणें उठती हैं, जिनके तेज का प्रकाश ब्रह्माण्ड में नहीं समाता।

चार हारना चारे फुमक, तेहेना जुजवी जुगतना रंग।
लाखी लिबोई ने स्याम सेत, सुन्दर ने ए सोभंत।। ४२ ।।

गले में जो चार हार पहने हैं, उनके चारों फुमक अलग-अलग रंग के लाखी, नीबू, काला और सफेद रंग के हैं।

वेंण गूंथी एक नवल भांतनी, गोफणडे विविध जडाव।
फरती फरती घूंघरडी, ने बोलंती रसाल।। ४३ ।।

श्री राजजी महाराज के बालों की चोटी एक निराले ढंग से गुंथी है। चोटी की फुंदनी (गोफनो) में विविध जड़ाव जड़े हैं। उसी में घेरकर के घूंघरी मधुर आवाज करती है।

Nijanand App

गोफणडे फुमक जे दीसे, तेनो लाल कसवी रंग।
जडाव मांहें माणक ने मोती, पाना पुखराज नंग॥ ४४ ॥

गोफण्डे (फुंदनी) में जो फुमक दिखाई दे रहा है, वह सुर्ख लाल रंग का है, जिसमें माणिक, मोती, पन्ना, पुखराज के नग जड़े हुए हैं।

वांसा ऊपर वेंण लेहेकती, सोभा ते वरणवी न जाए।
खुसबोय मांहें रंग भीनो, बीडी तंबोल मुख मांहें॥ ४५ ॥

श्री राजजी महाराज की पीठ पर ऐसी सुन्दर चोटी लहकती है, जिसकी शोभा वर्णन से परे है। मुख में सुन्दर पानों का बीड़ा है, जिसकी भीनी-भीनी सुगन्ध आती है।

नवल वेख ल्याव्या एक भांतनो, कसबटिए वांसली लाल।
अधुर धरीने ज्यारे वेण बजाडे, त्यारे चितडा हरे तत्काल॥ ४६ ॥

वालाजी ने एक नया ही (नटवर भेष) भेष धारण किया है, जिनकी कमर में लाल रंग की बांसुरी है। होठों पर रखकर जब बांसुरी बजाते हैं तो मन को मोह लेते हैं।

वेण तणी विगत कहूं तमने, कोरे कांगरी जडाव।
मोहोवड नीला मध्य लाल, छेडे आसमानी रंग सोहाय॥ ४७ ॥

अब बांसुरी की शोभा बताती हूं, जिसके किनारे की कांगरी जड़ावयुक्त है। मुंह पर नीला, बीच में लाल और आखिरी हिस्से में आसमानी रंग शोभा दे रहा है।

वस्तर वरणव्यां सब्द मांहें सखियो, वली वरणवी भूखणनी भांत।
रेसम हेम कह्या में जवेरना, पण ए छे वसेक कोय धात॥ ४८ ॥

हे सुन्दरसाथजी! हमने श्रृंगार में वस्त्रों और आभूषणों का वर्णन तो किया जिसमें रेशम, सोना और जवेरों के नग बताए हैं, किन्तु योगमाया के श्रृंगार कोई खास ही तत्व के हैं।

सज थया सिणगार करीने, रास रमवानूं मन मांहें।
साथ सकल मारा पिउ पासे आव्यो, इंद्रावती लागे पाए॥ ४९ ॥

इस प्रकार का श्रृंगार सजाकर रास खेलने की इच्छा लेकर वालाजी खड़े हैं। तब सब सखियां भी रास खेलने की इच्छा से वालाजी के पास आईं, तब सबके चरणों में श्री इन्द्रावतीजी प्रणाम करती हैं।

दई प्रदखिणा अति घणी, साथें कीधा दंडवत परणाम।
हवे करसूं रामत रंग तणी, अने भाजसूं हैडानी हाम॥ ५० ॥

सब सुन्दरसाथ ने वालाजी की परिक्रमा की और दण्डवत् प्रणाम किया। अब बड़े आनन्द की रामत खेलेंगे और अपने मन की चाह पूरी करेंगे।

॥ प्रकरण ॥ ८ ॥ चौपाई ॥ ३१७ ॥

Nijanand App

उथला (उलाहना)

राग मेवाडो

वालैयो वाणी एम उचरेजी, कहे सांभलजो सहु साथ।
पतिव्रता स्त्री जे होय, ते तो नव मूके घर रात।।
रे सखियो सांभलो।। १ ।।

योगमाया के ब्रह्माण्ड में वालाजी के सामने जब सब सखियां खड़ी हो गईं तो वालाजी ने जो कहा उसे हे सुन्दरसाथजी! सुनो। हे सखियो! पतिव्रता स्त्री रात को घर नहीं छोड़ती है।

तमे साथ सकल मली सांभलो, हूं वचन कहूं निरधार जी।
तमे वेण मारो श्रवणे सुण्यो, घर मूक्या ऊभा बार जी।। २ ।।

तुम सब साथ मिलकर सुनो ! मैं अच्छी बात बताता हूं। तुमने जैसे ही मेरी बांसुरी के स्वर को सुना तो तुरन्त ही खड़े-खड़े घर को वैसे ही छोड़ दिया।

कुसल छे कांई वृजमां जी, केम आवियो आणी वेर जी।
उतावलियो उजाणियोजी, कांई मूक्या कारज घेर जी।। ३ ।।

सखियों से वालाजी ने पूछा कि ब्रज में सब कुशल मंगल तो है? इस समय आप रात्रि में क्यों आई हो? तुम इतनी तेजी से दौड़कर आई हो, किस कारण से रात को घर छोड़ा?

किहे रे परियाणे तमें निसत्या, कांई जोवा वृन्दावन।
जोयूं वन रलियामणू, कांई तमे थया प्रसन्न।। ४ ।।

क्या सलाह करके घर से निकली हो? क्या वृन्दावन देखने आई हो? क्या मनमोहक वृन्दावन को देखकर प्रसन्न हो गई हो?

हवे पुरे रे पधारो आपणे जी, कांई रजनी ते रूप अंधार।
निसाचारी जीव बोलसे जी, त्यारे थासे भयंकार।। ५ ।।

अब अपने घर वापस लौट जाओ। रात अंधेरी है। जंगल के जानवर रात को बोलेंगे तो तुमको डर लगेगा।

निसाए नारी जे निसरे जी, कांई कुलवंती ते न केहेवाय।
नात परनात जे सांभले जी, कांई चेहरो तेमा थाय।। ६ ।।

जो स्त्री रात को घर छोड़ती है, वह कुलवन्ती (कुलीन) नहीं कहलाती है। सगे सम्बन्धी और दुनियां वाले सुनेंगे तो उनमें तुम्हारी बदनामी होगी।

सखियो तमे तो कांई न विमासियूं जी, एवडी करे कोई वात।
अणजाणे उठी आवियूं जी, कांई सकल मलीने साथ।। ७ ।।

हे सखियो! तुमने कुछ भी विचार नहीं किया, ऐसा कोई करता है? क्या तुम सब अनजाने में (बिना समझे) उठकर आ गई हो?

ससरो सासु मात तातनी जी, कांई तमे लोपी छे लाज।
तमे सरम न आणी केहेनी, तमे ए सूं कीधूं आज।। ८ ।।

सास-ससुर और माता-पिता की लाज (इज्जत) को तुमने मिट्टी में मिला दिया है। तुम्हें किसी की भी शर्म नहीं, यह तुमने आज क्या किया?

Nijanand App

तमे पति तो तमारा ऊभा मूकिया जी, कांई रोता मूक्या बाल।
ए वचन सुणीने विनता टलवली, कांई भोम पडियो तत्काल।। ९ ।।

तुमने अपने पति को खड़े ही (ऐसे ही) छोड़ दिया। बालक भी रोते हुए छोड़े। यह वचन सुनकर सखियों में घबराहट हो गई और वे धरती पर गिर पड़ीं।

तेमां केटलीक सखियो ऊभी रहियो, कांई दृढ करीने मन।
बाई वांक हसे जो आपणों जी, तो वालोजी कहे छे वचन।। १० ।।

उनमें से कुछ सखियां मन में साहस करके खड़ी रहीं, वह कहने लगीं कि हे बहनो! हमारी कोई गलती होगी जिस कारण वालाजी ऐसे वचन कह रहे हैं।

वचन वाले सामा तामसियो, राजसियो फडकला खाय।
स्वांतसिए बोलाए नहीं, ते तां पडियो भोम मुरछाय।। ११ ।।

तामसियां सामने खड़ी जवाब दे रही हैं। राजसी तड़प रही है। स्वांतसी मूर्च्छित पड़ी है, इसीलिए उनसे बोला नहीं जाता।

एणे समे मही सखी ऊभी रही, कहे सांभलो धणी ना वचन।
सखियो कुलाहल तमे कां करो जी, कांई ऊभा रहो दृढ करी मन।। १२ ।।

इस समय मान वाली सखी श्री इन्द्रावतीजी खड़ी रहीं और सखियों से कहती हैं कि धनी के वचनों को सुनो। शोर क्यों कर रही हो? मन में हौसला करके खड़ी रहो।

सखियो भूला छूं घणवे आपण जी, अने वली कीजे सामा रुदन।
कलहो करो भोमे पडो जी, कां विलखाओ वदन।। १३ ।।

सखियो हमसे अधिक भूल हुई है और फिर सामने रोती हो? झगडा करती हो? धरती पर गिरकर अपने को दुःखी क्यों करती हो?

पिउजी पधारया प्रभातमां, आपण आव्या छूं अत्यारे।
ते पण तेडीने वाले काढियां, नहीं तो निसरता नहीं क्यारे।। १४ ।।

श्री इन्द्रावतीजी सखियों से कहती हैं कि प्रीतम (प्रियतम) प्रातः (गायें चराने) आये थे। हम अभी आए हैं वह भी (बंसी बजी), नहीं तो कभी भी निकलती नहीं। वालाजी ने बुलाकर निकाला।

पाछल आपण केम रहूं, जो होय कांई वालपण।
केम न खीजे वालैयो, ज्यारे सेवा भूल्यां आपण।। १५ ।।

यदि अपने अन्दर अपने धनी के लिए प्रेम होता तो हम भी पीछे न रहते। जब सेवा में अपने से भूल हुई है तो वालाजी क्यों नाराज न हों?

वालाजी केहेवुं होय ते केहेजो, कांई अमने निसंक।
अमे तम आगल ऊभा छूं, कांई रखे आणो ओसंक।। १६ ।।

अब श्री इन्द्रवतीजी वालाजी से कहती हैं, हे प्रीतम! अब आपको जो कहना है सो निडर होकर कहो। हम आपके सामने सुनने को खड़े हैं। आप कहने में कोई संकोच न करें।

सखियो तम माटे हूं एम कहूं, कांई तमारा जतन।
रखे कोई तमने वांकू कहे, त्यारे दुख धरसो तमे मन।। १७ ।।

अब वालाजी कहते हैं कि यह सब तुम्हारी भलाई के वास्ते ही मैं कहता हूं, ताकि कोई तुमको गलत न कहे। नहीं तो तुम मन में दुःखी होओगी।

Nijanand App

सखियो तमे जेम घर ऊभां मूकियां, तेम माणस न मूके कोय।
एम व्याकुल थई कोई न निसरे, जो गिनान रुदेमां होय।। १८ ।।

हे सखियो! जैसे तुमने घर को खड़े-खड़े छोड़ा है, इस प्रकार से कोई समझदार व्यक्ति नहीं छोड़ता। यदि तुम्हें कुछ भी समझ होती तो इस प्रकार व्याकुल होकर न निकलतीं।

सखियो तमे पाछां वलो, अधखिण म लावो वार।
मनडे तमारे दया नहीं, घेर टलवले छे बाल।। १९ ।।

हे सखियो! अब तुम एक पल की भी देर किए बिना वापस घर चली जाओ। तुम्हारे दिल में दया नहीं है। घर में बालक बिलख रहे हैं।

ए धरम नहीं नारी तणोजी, हूं कहूं छूं वारंवार।
हवे घरडे तमारे सिधाविए जी, घेर वाटडी जुए भरतार।। २० ।।

मैं बार-बार कहता हूं कि यह स्त्रीधर्म नहीं है, अब तुम अपने घर जाओ। तुम्हारे पति तुम्हारी राह देख रहे हैं।

वाळैया हजी तमारे केहेवुं छे, के तमे कहीने रह्या एह।
ते सर्वे अमे सांभल्यूं जी, तमे कह्यूं जुगते जेह।। २१ ।।

अब श्री इन्द्रावतीजी वालाजी से कहती हैं कि हे वालाजी! आपने सब कह लिया या कुछ कहने को बाकी है। आपने जो सलाह दी है, वह सब हमने सुन ली है।

सखियो हजी मारे केहेवुं छे, तमे श्रवणा देजो चित।
मरजादा केम मूकिए, आपण चालिए केम अनित।। २२ ।।

वालाजी उत्तर देते हैं कि अभी मुझे और कहना है। तुम ध्यान से सुनो, हम अनुचित काम करके सांसारिक मर्यादा क्यों तोड़ें?

हवे वली कहूं ते सांभलो, कांई मोटूं एक दृष्टांत।
वेद पुराणे जे कह्यूं, कांई तेहेनूं ते कहूं वृतांत।। २३ ।।

अब एक बड़ा दृष्टान्त देकर तुम्हें और कहता हूं, उसे सुनो। वेद-पुराणों में जो कहा है, उस हकीकत को बताता हूं।

भवरोगी होय जनमनो, जो एहेवो होय भरतार।
तोहे तेने नव मूकवो, जो होय कुलवंती नार।। २४ ।।

यदि पति जन्म से रोगी भी क्यों न हो तो भी कुलवन्ती (कुलीन) नारी उसे भी नहीं छोड़ती।

जो पति होय आंधलो, अने वली जड होय अपार।
तोहे तेने नव मूकवो, जो होय कुलवंती नार।। २५ ।।

यदि पति अन्धा और मूर्ख भी हो तो भी कुलवन्ती (कुलीन) नारी को उसे नहीं छोड़ना चाहिए।

जो पति होय कोढियो, अने कलहो करे अपार।
तोहे तेने नव मूकवो, जो होय कुलवंती नार।। २६ ।।

यदि पति कोढ़ी भी हो और क्लेश (झगड़ा) भी करता हो तो भी कुलवन्ती (कुलीन) नारी को उसे नहीं छोड़ना चाहिए।

Nijanand App

जो पति होय अभागियो, अने जनम दलिद्री अपार।
तोहे तेने नव मूकवो, जो होय कुलवंती नार।। २७ ।।

यदि पति बदनसीब और निकम्मा (आलसी) हो तो भी कुलवन्ती नारी उसे नहीं छोड़ती।

जो पति होय पांगलो, बीजा अवगुण होय अपार।
तोहे तेने नव मूकवो, जो होय कुलवंती नार।। २८ ।।

यदि पति लंगड़ा हो और उसमें अनेक अवगुण भी हों तो भी कुलवन्ती नारी को उसे नहीं छोड़ना चाहिए।

खोड होय भरतार मां, अने मूरख होय अजाण।
तोहे तेने नव मूकवो, एम कहे छे वेद पुराण।। २९ ।।

यदि पति नपुंसक (हिजड़ा) और मूर्ख हो तो वेद-पुराण कहते हैं कि उसे भी नहीं छोड़ना चाहिए।

ते माटे हूं एम कहूं, जे नव मूकवो पत।
ततखिण तमे पाछा वलो, जो रुदे होय कांई मत।। ३० ।।

इस वास्ते मैं आपसे कहता हूं कि यदि आप के अन्दर बुद्धि है तो तुरन्त घर लौट जाओ और पति को मत छोड़ो।

हवे साथ कहे अमे सांभल्या, कांई तमारा वचन।
हवे अमे कहूं ते सांभलो, कांई दृढ करीने मन।। ३१ ।।

अब सखियां कहती हैं कि हमने आपके वचनों को सुन लिया है। अब हम जो कहती हैं वह ध्यान से सुनो।

पति तो वालैयो अमतणो, अमे ओलखियो निरधार।
वेण सांभलतां तमतणी, अमने खिण नव लागी वार।। ३२ ।।

हमने निश्चित रूप से पहचान लिया है कि हमारे पति आप ही हैं और इसलिए आपकी बांसुरी की आवाज सुनते ही तुरन्त घर छोड़ दिया।

अमे पीहर पख नव ओलखूं, नव जाणूं सासर वेड।
एक जाणूं मारो वालैयो, नव मूकूं तेहेनो केड।। ३३ ।।

हमने न मायके की इज्जत को देखा और न ससुराल की मर्यादा ही देखी। हमने केवल आपको अपना धनी जाना और इसलिए आपका दामन (पीछा) नहीं छोड़ा।

पति तो केमे नव मूकवो, तमे अति घणूं कह्यूं रे अपार।
तमे साख पुरावी वेदनी, त्यारे केम मूकूं आधार।। ३४ ।।

आपने बहुत तरह से समझाकर पति को न छोड़ने की सलाह दी और वेद-पुराण की गवाही भी दी, तो मैं पति को कैसे छोडूं?

तमे कह्यूं पति नव मूकवो, जो अवगुण होय रे अपार।
तमे रे तमारे मोंहें कह्यूं, तमे न्याय रे कीधो निरधार।। ३५ ।।

हे वालाजी! आपने कहा कि चाहे पति में कितने ही अवगुण हों उसे छोड़ना नहीं चाहिए। आपने स्वयं ही अपने मुख से कहकर फैसला कर दिया है।

Nijanand App

अवगुण पति नव मूकवो, तो गुण धणी मूकिए केम जी।
तममां अवगुण किहां छे, तमे कां कहो अमने एम जी।। ३६ ।।

जब अवगुणों से भरे पति को नहीं छोड़ना है तो गुणवान पति को कैसे छोड़ें? आपमें अवगुण कहां हैं? इसलिए आप हमको ऐसा क्यों कहते हो?

एवा हलवा बोल न बोलिए, हूं वारू छू तमने।
ए वचन केहेवा नव घटे, कांई एम केहेवुं अमने।। ३७ ।।

हे वालाजी! मैं आपको मना करती हूं कि ऐसे हल्के वचन न बोलें, हमारे लिए ऐसे वचन कहना आपको शोभा नहीं देता।

अमे तो आव्या आनंद भरे, कांई तमसुं रमवा रात जी।
एवा बोल न बोलिए, अमने दुख लागे निघात जी।। ३८ ।।

हम तो हृदय में उमंग लेकर रात्रि में आपके साथ खेलने के वास्ते आए थे। आप ऐसे वचन न बोलें। हमें दुःख लगता है और ऐसे वचन सहन नहीं होते हैं।

अमे किहां रे पाछां वली जाइए, अमने नथी बीजो कोई ठाम जी।
कहो जी अवगुण अमतणां, तमे कां कहो अमने एम जी।। ३९ ।।

अब हम लौटकर वापस कहां जाएं? आपके बिना हमारा अब ठिकाना कहां है? आप कृपया हमारे अवगुण बताइए। हमको आप ऐसा क्यों कहते हैं?

अमे तम विना नव ओलखूं, बीजा संसार केरा सूल जी।
चरणे तमारे वालैया, कांई अमारा छे मूलजी।। ४० ।।

हम आपके बिना और किसी को नहीं जानते। आपके बिना बाकी सब संसार दुःखदायी है। हे धनी! आपके चरणों में ही हमारा मूल ठिकाना है।

फल रोप्यो आंबो तमतणो, वाड कांटा कुटंम पाखल।
बीजो झांपो रखोपुं करे, कांई स्यो रे सनमंध तेसुं फल।। ४१ ।।

आपने ही आम का पेड़ लगाया है। बाद में चारों ओर कुटुम्ब कबीले रूपी बाड़ लगाई जो केवल रक्षा करने के वास्ते है। उनका फल से भला क्या सम्बन्ध (मतलब)?

फूल फूल्या जेम वेलडी, ते तां विकसे सदा रे सनेह।
वछूटे ज्यारे वेलथी, त्यारे ततखिण सूके तेह।। ४२ ।।

जिस प्रकार बेल में लगा हुआ फूल ही सदा खिलता रहता है और बेल से अलग होते ही तुरन्त सूख जाता है।

जीव अमारा तम कने, कांई चरणे वलगां एम।
फूल तणी गत जाणजो, ते अलगां थाय केम।। ४३ ।।

आपके चरण रूपी बेल से हमारा फूल रूपी जीव बंधा हुआ है। हमारी भी हालत फूल के समान जानो। यह कैसे अलग हो सकता है?

Nijanand App

तेम जीव अमारा बांधिया, जेम पडिया मांहें जाल।
खिण एक सांमू नव जुओ, तो पिंडडा पडे तत्काल।। ४४ ।।

उसी तरह से हमारा जीव आपके चरणों के जाल (बेल) से बंधा है (लिपटा है)। एक पल के लिए भी यदि आप हमारी आंखों से ओझल होते हो तो हमारे शरीर गिर जाएंगे।

जीव अमारा चरणे तमतणे, ते अलगां थाय केम।
जल मांहें जीव जे रहे, कांई मीन केरा वली जेम।। ४५ ।।

हे वालाजी! हमारे जीव आपके चरणों में हैं? वह अलग कैसे हो सकते हैं? जैसे जल में रहने वाली मछली जल से जुदा नहीं हो सकती, उसी प्रकार हम आपके चरणों से जुदा नहीं हो सकते।

वाला तमे अमसूं एम कां करो, अमे वचन सह्या नव जाय।
खिण एक सामूं नव जुओ, तो तरत अदृष्ट देह थाय।। ४६ ।।

हे मेरे वालाजी! आप हमसे ऐसा क्यों कहते हो? हमसे आपके यह वचन सहन नहीं होते। एक पल के लिए भी यदि आप न दीखो तो शरीर नष्ट हो जाएंगे।

निखर अमारी आतमा, अने निठुर अमारा मन।
कठण एवां तमतणां, अमे तो रे सह्यां वचन।। ४७ ।।

आत्मा हमारी कठोर है और मन हमारा अति ढीठ है जो हमने आपके इतने कठोर वचनों को सुन लिया।

अम मांहें कांई अमपणूं, जो होसे आ वार।
तो वचन एवां तमतणां, अमे नहीं रे सांभलूं निरधार।। ४८ ।।

यदि इस समय हमारे अन्दर कुछ भी स्वाभिमान (अपनापन) होता तो आपके ऐसे वचन कभी न सुनते।

सखिएं मनमां वचन विचारियां, कांई प्रेम वाध्यो अपार।
जोगमाया अति जोर थई, कांई पाछी पडियो तत्काल।। ४९ ।।

सखियों के मन में जैसे ही यह विचार आया तो प्रेम अत्यधिक बढ़ गया और अन्दर जोश आया एवं तुरन्त नीचे गिर गईं।

ततखिण वाले उठाडियो, कांई आवीने लीधी अंग।
आनंद अति वधारियो, कांई सोकनो कीधो भंग।। ५० ।।

तुरन्त ही वालाजी ने आकर उन्हें उठाया और गले से लगा लिया। उनके दुःख दूर कर दिये जिससे आनन्द बढ़ गया।

वालोजी कहे छे वातडी, तमे सांभलजो सहु कोय।
में जोयूं तमारूं पारखूं, रखे लेस मायानो होय।। ५१ ।।

वालाजी अब कहते हैं कि हे सखियो! तुम सब सुनो यह तो मैंने आपकी परीक्षा ली थी कि आपके मन में माया की थोड़ी सी भी चाह बाकी तो नहीं है?

ओसीकल वचन वाले कह्या, कांई ते में न कहेवाय।
सुकजीए निरधारियूं छे, पण ते में लख्यूं न जाय।। ५२ ।।

वालाजी ने शर्मिन्दा करने वाले ऐसे वचन कहे जिनको कि मैं कह नहीं सकती। शुकदेव जी ने तो कुछ लिखा भी है, परन्तु मैं तो लिख भी नहीं सकती।

Nijanand App

ए वचन श्रवणे सुणी, कांई मनडां थयां अति भंग।
वाला एम तमे अमने कां कहो, अमे नहीं रे खमाय अंग।। ५३ ।।

ऐसे प्यार-लाड के वचन सुनकर सखियों के दुःख से भरे मन को शान्ति मिली। वह बोलीं कि हे वालाजी! आप हमसे ऐसा क्यों कहते हो? हममें सहन करने की शक्ति नहीं है।

कलकलती कंपमान थैयो, कांई ततखिण पडियो तेह।
आवीने उछरंगे लीधियो, कांई तरत वाध्यो सनेह।। ५४ ।।

बिलखती हुई, कांपती हुई सखियां फिर से गिर पड़ीं और फिर वालाजी ने उन्हें प्यार से उठाया जिससे प्यार और बढ़ गया।

आंखडिए आंसू ढालियां, तमे कां करो चितनो भंग।
आंसूडां लोऊं तमतणां, आपण करसूं अति घणू रंग।। ५५ ।।

सखियों की आंखों से आंसू बहते हैं। वालाजी उन आंसुओं को पोंछते हैं और कहते हैं कि तुम इतना दुःखी क्यों हो रही हो? अभी हम आनन्द की लीला करेंगे।

सखियो पूरूं मनोरथ तमतणां, कांई करसूं ते रंग विलास।
करवा रामत अति घणी, में जोयूं मायानो पास।। ५६ ।।

वालाजी सखियों से कहते हैं कि हम तुम्हारी मनोकामना पूरी करेंगे और अति आनन्द की लीला करेंगे। आनन्द की रामत खेलने के लिए ही मैंने देखा था कि तुम्हारे अन्दर माया है या नहीं।

सखियो वृन्दावन देखाडूं तमने, चालो रंग भर रमिए रास।
विविध पेरेनी रामतो, आपण करसूं माहों मांहें हांस।। ५७ ।।

हे सखियो! चलो वृन्दावन दिखावें और आनन्द भरी रास की रामतें खेलें। तरह-तरह की रामतें खेलकर हम आपस में हंसेंगे।

तमे प्राणपे मूने वालियो, जेम कहो करूं हूं तेम।
रखे कोई मनमां दुख करो, कांई तमे मारा जीवन।। ५८ ।।

वालाजी कहते हैं, सखियो! तुम मुझे प्राणों से भी प्यारी हो। तुम जैसा कहो मैं वैसा करूं। मन में किसी प्रकार का दुःख मत लाओ। तुम तो मेरे जीवन हो।

|| प्रकरण || ९ || चौपाई || ३७५ ||

वृंदावनदेखाड्यूं छे
राग धनाश्री

जीवन सखी वृंदावन रंग जोइएजी, जोइए अनेक रंग अपार।
विगते वन देखाडूं तमने, मारा सुन्दरसाथ आधार।। १ ।।

वालाजी कहते हैं, सखी! चलो वृन्दावन देखें और आनन्द का अनुभव करें। तुमको अच्छी तरह से वन की सैर कराता हूं। तुम मेरे प्राणों के आधार सुन्दरसाथ हो।

आंबा आंबलियो ने आसोपालव, अंजीर ने अखोड।
अननास ने आंबलियो दीसे, चारोली चंपा छोड।। २ ।।

आम, इमली, अशोक, अंजीर, अखरोट, अन्नानास, चारोली (चिरोंजी) और चम्पा के पेड़ देखो।

Nijanand App

साग सीसम ने सेमला सरगू, सरस ने सोपारी।
सूफ सूकड ने साजडिया, अगर ऊंचो अति भारी।। ३ ।।

सागीन, शीशम, सेमला (सिमली), सरगू (सुआंजना), मूंगा और सुपारी के पेड़ अति सुन्दर हैं। सौंफ (वरयारी), चन्दन साज का पेड़ और ऊंचा अगर का पेड़ देखा है?

वड पीपल ने वांस वेकला, बोलसरी ने वरणा जी।
केवडी केल कपूर कसूंबो, केसर झाड अति घणा जी।। ४ ।।

बट, पीपल, बांस, वेकल, मौलिश्री कई किस्म की हैं—केवड़ा, केला, कपूर, कसंबी (अफीम का फूल), केसर, आदि के झाड़ बहुत ज्यादा हैं।

मेहेदी नेवरी ने मलियागर, दाडम डोडंगी ने द्राख।
बीयो बदाम ने बीली बिजोरो, रुद्राख ने भद्राख।। ५ ।।

वहां मेंहदी, दालचीनी (तज) अनार, अंगूर हैं और बादाम, बेल, बिजौरा, रुद्राक्ष और भद्राक्ष के वृक्ष हैं।

पीपली पारस ने पारजातक, साले ने सीसोटा जी।
फणस तूत ने तीन तेवरियां, ताड छे अति मोटा जी।। ६ ।।

पीपल, पारस, कल्पवृक्ष, साल, सीसौटा, कटहल, शहतूत, तेवरिया (अरहर) और ताड़ के बहुत ऊंचे-ऊंचे वृक्ष हैं।

रायण रोइण ने रामण रायसण, लिंबडा लिंबोई लवंग।
तज तलसी ने आदू एलची, वाले अति सुगंध।। ७ ।।

वहां कई प्रकार के फल—रायण (खिन्नी), रोइण, रामण, रायसन, नीम, नींबू और लवंग के वृक्ष हैं। तेजपात, तुलसी, अदरक, इलायची, आदि के पौधे अति सुगन्ध वाले हैं।

केवडो काथो ने कपूर काचली, भरणी ने भारंगी।
सेवण सेरडी सूरण सिगोंटी, नालियरी ने नारंगी।। ८ ।।

केवड़ा, काथा, कपूर, काचली, भरणी और भारंगी के पेड़ हैं। सेवण, गन्ना, सूरण, सिगोंटी, नारियल और सन्तरा के भी पेड़ हैं।

अरणी ऊंमर वेहेडा दीसे, जांबू ने वली जाल।
गूंदी गूंदा गुंगल गंगोटी, गहुला ने गिरमाल।। ९ ।।

अरणी, गूलर, बहेड़ा, जामुन और जाल के वृक्ष दिखाई देते हैं। गूंदी, गूंदा, गुंगल, गगोटी, गहुला और गिरमाल के पेड़ हैं।

उंवरो अगथिया ने आंबलियो, अकलकरो अमृत जी।
करमदी ने कगर करंजी, कदम छे अदभुत जी।। १० ।।

ऊंवरो, अगस्त, इमली, आंवला, अकलकरा, जो अमृत के समान लाभदायक हैं, करमदी (करौंदा, डेले) कगर, करंजी, और कदम्ब के पेड़ अति सुन्दर हैं।

Nijanand.App

बूंद बकान ने कोठ करपटा, निगोड ने वली नेत्र।
मरी पानरी ने वली मरुओ, अकोल ने आंकसेत्र।। ११ ।।

बूंद, बकैन, कोट, करपटा, निओड और फिर नेत्र को देखो। काली मिर्च, पानरी, महुआ, आक, आदि के अति कड़वे पेड़ हैं।

कमलकाकडी ने झाड चीभडी, बोरडी ने वली बहेडा।
हिरवण हीमज हरडे मोटी, मोहोला ने वली महूडा।। १२ ।।

कमल गट्टा, चिभड (चीभडी), खरबूजा, मतीरा की बेलें हैं तथा बेरी-बहेड़ा, आदि तथा हरड़, महुआ वगैरह के पेड़ दिखाई देते हैं।

धामणा धावडी ने वरीयाली, सफल जल भोज पत्र।
खसखस फूल दीसे एक जुगते, छोत्रा ऊपर छत्र।। १३ ।।

धामणा, धावडी, सौंफ, भोजपत्र, खस-खस के फूल छत्रों के समान बिछे दिखाई देते हैं।

माया मस्तकी ने वरस बडबोहोनी, सकरकंद संदेसर।
करोड भरोड ने पलासी, अकथ ने आक सुन्दर।। १४ ।।

मनमोहक और मोहबे के बड़े-बड़े वृक्ष तथा शकरकन्द, संदेसर, करोड, भरोड, पलाश, अकथ तथा आक के पेड़ अति सुन्दर हैं।

टेवरू कुंदरू ने कबोई, कांकसी ने कलूंब।
खेजड खजूरी ने खाखरा दीसे, केसू तणी अति लूंब।। १५ ।।

टेवरू, कुंदरू (गिलौडा), कबोई, कांकसी, कलूभ, खेजड़, खजूर, खाखर (छ्योला), केसुड़ा तथा केसू के फूल लटकते दीख रहे हैं।

परवती परवाली ने पाडर, पान वेल अति सार।
आल अकोल ने बेर उपलेटा, दुधेला ने देवदार।। १६ ।।

परवती, परवाली और पाडर पान की बेलें अति सुन्दर हैं। आल अकोट, उपलेटा, दुधेला और देवदार के वृक्ष हैं।

चंबेली ने चनी चणोठी, चंद्रवंसी चोली ने चीभडी।
गलकी ने गिसोटी गोटा, गुलबांस ने गुलपरी।। १७ ।।

चमेली, चनी, चनोटी, काले-लाल फूल, चन्द्रवंशी, चोली, चीभडी, घीयातोरी, गिसोटी, गोटा, गुलबांस और गुलपरी के पेड़ हैं।

जाई जुई ने जासू जायफल, जाए ने जावंत्री।
सूरजवंसी ने सणगोटी, सूआ ने सेवंत्री।। १८ ।।

जाई, जुई, जासू, जायफल, जाए, जावित्री, सूरजवंशी, सणगोटी, सूआ और सेवंत्री इन सब फूलों के अति सुन्दर पौधे दीख रहे हैं।

Nijanand App

कोली कालंगी ने कारेली, तुंबडी ने तडबूची।
कोठवडी ने चनकचीभडी, टिंडुरी ने खडबूची।। १९ ।।

कोली, कालंगी, करेले (कारेली) की बेल, तोरई, तरबूज और खरबूज, कोठवडी, चनक, चीभडी-टिडोरा की कई बेलें हैं।

गुलाबी ने कफी डोलरिया, दूधेली ने दोफारी।
कमल फूल ने कनीयल केतकी, मोगरेमां झरमरी।। २० ।।

गुलाबी और कफी दूधेलू और दोफारी, कमल फूल और कनीयल केतकी व मोगरा की कलियां दिखाई देती हैं।

ओलिया वालोलिया ने परवालिया, इसक फाग वेल सार।
आरिया तो अति उत्तम दीसे, जाणे कलंगे रंग प्रतकाल।। २१ ।।

औलिया, वालोलिया और परवालिया तथा प्रेम बेल (लाजवन्ती) बड़ी सुन्दर है, आरिया तो इतना सुन्दर है, मानो पेंठे के ऊपर कलंगी लगी हो।

सहेस्त्र पांखडीनो दमणो दीसे, सोवरण फूली मकरंद।
वन सिणगार कीधो वेलडिए, जुजवी जुगतनां रंग।। २२ ।।

हजार पांखड़ी का गेंदा, सोने के रंग का मकरन्द फूल खिला है। बेलों के तरह-तरह के फूलों ने वन को सजा दिया है।

साक फल अंन अनेक विधना, कंदमूल मांहें सार।
सारा स्वाद जुजवी जुगतना, वन फलियां रे अपार।। २३ ।।

सब्जी और फल हैं। विविध प्रकार के कन्दमूल हैं। सब अच्छे स्वाद वाले हैं और अति शोभायमान हैं।

वन ऊपर वेलडियो चढियो, जो जो ते आ निकुंज।
मन्दिरना जेम जुगतें दीसे, मांहें अनेक विधना रंग।। २४ ।।

पेड़ों को बेलों ने इस तरह ढक लिया है जैसे फूलों का महल बन गया हो। वह एक सुन्दर मकान की तरह दीखता है, जिसमें कई तरह के रंग हैं।

बृध आडी तरवर नी डालो, जुगते वन कुलंभ।
भोम ऊपर ऊभा फल लीजे, एम केटली कहूं एह सनंध।। २५ ।।

पेड़ों की लम्बी डालियां एक-दूसरे के ऊपर आई हैं, जिससे वन और भी सुन्दर दीखता है। भूमि पर खड़े होकर फल तोड़ सकते हैं। इसकी कितनी हकीकत का बयान करें?

बीजी विध विधनी वनस्पती मौरी, केटला लऊं तेना नाम।
जमुनाजीना त्रट घणूं रूडा, रूडा मोहोल बेसवा ना ठाम।। २६ ।।

दूसरी और तरह-तरह की वनस्पति के फूल खिले हैं। उनके नाम कहां तक गिनाऊं यमुनाजी का किनारा बहुत सुन्दर है। फूलों से बने मकान तथा बैठने की जगह बनी है।

बेहू कांठे वनस्पती दीसे, झलूबे ऊपर जल।
नेहेचल रंग सदा विध विधना, ए वन छे अविचल।। २७ ।।

यमुनाजी के दोनों किनारे वन की डाली से ढके हैं। इनकी डालें पानी के ऊपर लटक रही हैं। यह वन अखण्ड है और यहां सब आनन्द भी अखण्ड है।

Nijanand App

कांठे जल ऊपर वेलडियो, तेमां रंग अनेक।
फूलडे जल छाह्युं छे जुगते, विध विधना विसेक।। २८ ।।

यमुनाजी के जल के किनारे पर वृक्षों पर बेलें छाई हैं, जिनमें अनेक रंग हैं और तरह-तरह की शोभा है।

जमुनाजीना जल जोरावर, मध्य वहे छे नीर।
वेहेतां जल वले रे खजूरिया, दरपण रंग जाणो खीर।। २९ ।।

यमुनाजी के जल का बहाव बीच में तेज है। बहते हुए जल में भंवरियां (भंवर) पड़ती हैं। जल दर्पण के समान निर्मल है।

वृंदावन फूल्यूं बहु फूलडे, सोभा धरे अपार।
वन फल उत्तम अति घणूं ऊंचा, कुसम तणा वेहेकार।। ३० ।।

वृन्दावन में बेशुमार फूल खिले हैं, जिनकी शोभा अपरम्पार है। अच्छी प्रकार फल भी लगे हैं। इनके फूलों और फलों की सुगन्ध आती है।

रेत सेत सोभा धरे, वृंदावन मंझार।
सकल कलानो चंद्रमा, तेज धरा धरे अपार।। ३१ ।।

वृन्दावन के बीच में सफेद रेती की सुन्दर शोभा है। पूर्ण चन्द्रमा सम्पूर्ण कला के साथ धरती को बेशुमार रोशनी दे रहा है।

गूंजे भमरा स्वर कोयलना, घूमे कपोत चकोर।
सूडा बपैया ने वली तिमरा, रमे ते वांदर मोर।। ३२ ।।

भंवरे गूंजते हैं। कोयल कू-कू कर रही है। कबूतर और चकोर पक्षी घूम रहे हैं। तोता, पपीहा तथा झींगुर आवाज कर रहे हैं। बन्दर और मोर खेल रहे हैं।

मांहें ते मृग कस्तूरिया, प्रेमल करे अपार।
बीजा अनेक विधना पसु पंखी, ते रमे रामत अति सार।। ३३ ।।

वन के बीच में कस्तूरी मृग सुगन्ध बिखेर रहे हैं। और अनेक प्रकार के पशु-पक्षी हैं, जो खेल खेल रहे हैं।

छूटक थड ने घाटी छाया, रमवाना ठाम अति सार।
इंद्रावतीबाई अति उछरंगे, आयत करे अपार।। ३४ ।।

पेड़ थोड़ी-थोड़ी दूरी पर लगे हैं और उनकी छाया घनी है। वहां खेलने की सुन्दर जगह बन गई है। श्री इन्द्रावतीजी इस स्थान पर खेलने की अत्यधिक चाहना करती हैं।

आरोग्यां वन फल स्वादे, जल जमुना त्रट सार।
वृंदावन वाले जुगतें देखाड्यूं, आगल रही आधार।। ३५ ।।

यमुनाजी के जल के सुन्दर किनारे पर वन फल बड़े स्वाद से खाया तथा वालाजी ने मार्गदर्शक बनकर वृन्दावन को अच्छी तरह दिखाया।

Nijanand App

एह सरूपने एह वृंदावन, ए जमुना त्रट सार।
घरथी तीत ब्रह्मांडथी अलगो, ते तारतमे कीधो निरधार।। ३६ ।।

सखियों तथा वालाजी के यह सुन्दर स्वरूप और यह सुन्दर वृन्दावन तथा यमुनाजी का सुन्दर किनारा इस ब्रह्माण्ड में नहीं हैं और परमधाम से भी अलग हैं। यह ब्यौरा (विवरण) तारतम ज्ञान से श्री राजजी महाराज ने बताया है।

।। प्रकरण ।। १० ।। चौपाई ।। ४११ ।।

रामत पेहेली-राग कालेरो

वाले वेख लीधो रलियामणो, कांई करसूं रंग विलास।
आयत छे कांई अति घणी, वालो पूरसे आपणी आस।
सखीरे हम चडी। १ ।।

वालाजी ने सुन्दर आकर्षक स्वरूप धारण किया है। अब इनके साथ आनन्द की रामत खेलेंगे। हमारी बहुत चाहना है जिसे वालाजी पूर्ण करेंगे। सखियों के अन्दर आनन्द और जोश भरा है।

वृंदावन तो जुगते जोयूं, स्याम स्यामाजी साथ।
रामत करसूं नव नवी, कांई रंग भर रमसूं रास।। २ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि श्यामा श्याम के साथ वृन्दावन अच्छी तरह देख लिया है। अब हम नई-नई रामतें आनन्द में विभोर होकर खेलेंगे।

सखी मांहों मांहें वात करे, आज अमे थया रलियात।
वेख निरखीने नेत्र ठरे, आज करसूं रामत निघात।। ३ ।।

सखियां आपस में बात करती हैं कि आज हम धन्य-धन्य हो गई हैं। वालाजी का लुभावना भेष देखकर हमारे नेत्र सन्तुष्ट हो रहे हैं। आज वालाजी के साथ बहुत रामतें खेलेंगे।

वेख नवानो वागो पेहेर्यो, तेड्या वृंदावन।
मस्तक मुकट सोहामणो, वेख ल्याव्या अनूपम।। ४ ।।

वालाजी ने नए वस्त्र धारण किए हैं। सिर पर मुकुट धारण कर लुभावना भेष बनाकर हमको बुलाया है।

भली भांतना भूखण पेहेर्या, वेण रसालज वाय।
साथ सकलमां आवीने ऊभो, करसूं रामत उछाय।। ५ ।।

वालाजी ने अति सुन्दर आभूषण पहने हैं। मधुर बांसुरी बजाते हैं, सब सखियों के बीच आकर खड़े हैं। अब हम उनसे उमंग भरी रामतें खेलेंगे।

तेवा भूखण ने तेवो वागो, नटवरनो लीधो वेख।
घणां दिवस रामत कीधी, पण आज थासे वसेख।। ६ ।।

जैसे सुन्दर आभूषण हैं वैसे ही सुन्दर वस्त्र धारण कर नाचने का भेष बनाया है। ब्रज में बहुत दिन खेल खेले, परन्तु आज विशेष खेल खेलेंगे।

रास रमवाने वालेजी अमारे, आज कीधो उछरंग।
नेंणे जोई जोई नेह उपजावे, वारी जाऊं मुखारने विंद।। ७ ।।

रास खेलने के लिए वालाजी मन में उमंग लेकर हमें बार-बार देखकर हमारे अन्दर प्रेम पैदा करते हैं। ऐसे मनमोहक मुख को देखकर मैं बलि-बलि जाती हूं।

Nijanand App

सखी इंद्रावती एम कहे, चालो जैए वालाजी ने पास।
कंठ वलाई मारा वालाजी संगे, कीजे रंग विलास।। ८ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, चलो हम वालाजी के पास चलें और उनके गले में हाथ डालकर आनन्द की लीला खेलें।

एवी वात सांभलतां वालेजी अमारे, आवीने ग्रही मारी बांहें।
कहो सखी पेहेली रामत केही कीजे, जे होय तमारा चित मांहें।। ९ ।।

हमारी यह बात सुनकर वालाजी ने आकर हमारी बांह पकड़ ली और पूछने लगे, हे सखी! अपने मन की बात बताओ, पहले कौन-सी रामत खेलें।

सखियो मनोरथ होय ते केहेजो, रखे आणो ओसंक।
जेम कहो तेम कीजिए, आज करसूं रामत निसंक।। १० ।।

वालाजी कहते हैं, बेधड़क होकर अपने मन की चाहना बताओ, जैसे तुम कहोगी वैसे ही किया जाएगा। आज निडर होकर रामत खेलेंगे।

पूरूं मनोरथ तमतणां, करार थाय जीव जेम।
सखी जीवन मारा जीव तमे छो, कहो करूं हूं तेम।। ११ ।।

वालाजी कहते हैं, हे सखी! तुम मेरे जीव के जीवन हो। इसलिए जिस तरह से तुमको आनन्द आए तथा तुम्हारे मन की इच्छा पूर्ण हो, वही काम मैं करूं।

रासनी रामत अति घणी, अनेक छे अपार।
सघली रामत संभारीने, अमने रमाडो आधार।। १२ ।।

श्री इन्द्रावतीजी वालाजी से कहती हैं, रास की रामतें तो बेशुमार हैं, इसलिए सबको ध्यान में रखकर हमें रामत खिलाइए।

अमे रंग भर रमवा आवियां, कांई करवा विनोद हांस।
उत्कंठा अमने घणी, तमे पूरो सकलनी आस।। १३ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि हम उमंग के साथ हंसी और विनोद करने आए हैं। हमारे मन में बहुत इच्छाएं हैं। हम सबकी सब कामनाओं को पूरा करो।

अमे अवसर देखी उलासियो, कांई अंगडे अति उमंग।
कहे इंद्रावती अमने, तमे सहुने रमाडो संग।। १४ ।।

यह अवसर देखकर हमारे मन में उल्लास भर गया है। हमारे मन में उमंग है। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि आप हम सबको अपने साथ खेल खिलाइए।

।। प्रकरण ।। ११ ।। चौपाई ।। ४२५ ।।

चरचरी

मारे वालैए करी उमंग, सखी सर्वे तेडी संग।
रमाडे नव नवे रंग, अदभुत लीला आज री।। १ ।।

हमारे वालाजी ने उमंग भरे मन से सब सखियों को बुलाया है और आज नए-नए तरीके से अद्‌भुत खेल खिला रहे हैं।

Nijanand App

सखियो मली संघात, सोभित चांदनी रात।
तेज भूखण अख्यात, मीठे स्वरे बाज री।। २ ।।

सब सखियां एक साथ मिलीं। सुन्दर चन्द्रमा की छटकती चांदनी रात है। सुन्दर आभूषणों की लुभावनी मीठी-मधुर आवाज आ रही है।

जोतां जोत वृंदावन, अंगे रंग उतपन।
सामग्री सखी जीवन, नवलो सर्वे साज री।। ३ ।।

वृन्दावन की शोभा देखकर अंग में मस्ती है। सम्पूर्ण जोगबाई नई सजी हैं। सखियां, वालाजी और वृन्दावन सब नई शोभा से सजे हैं।

अंगे सहु अलवेल, करे रे रंगना रेल।
विलास विनोद हांस खेल, लोपी रमे लाज री।। ४ ।।

सखियां लाज-शर्म छोड़कर अपने मस्ती से भरे अलमस्त अंगों से आनन्द, विनोद तथा हंसी का खेल खेलती हैं।

वचे वचे वाए वेण, रंग रस खिण खिण।
उपजावे अति घण, पूरवा पूरण काज री।। ५ ।।

बीच-बीच में वालाजी बांसुरी बजाते हैं और पल-पल में हम सबकी इच्छाओं को पूर्ण करने के लिए आनन्द बढ़ाते हैं।

रमवुं उनमदपणे, वालाजी सूं रंग घणे।
कर कंठ धणी तणे, विलसूं संगे राज री।। ६ ।।

सखियों ने मन में विचारा कि आज वालाजी के गले में हाथ डालकर मस्ती के साथ आनन्द भरी रामत खेलेंगे।

वाणी तो बोले मधुर, करसूं ग्रही अधुर।
पिए वालो भरपूर, राखी हैडा मांझ री।। ७ ।।

वालाजी मीठी-मीठी बातें बोलकर सखियों को हाथ से खींचकर, हृदय से चिपटाकर अधरामृत का पान करते हैं।

रमती इंद्रावती, घातो घणी ल्यावती।
वालैया मन भावती, मुखमां मरजाद री।। ८ ।।

मर्यादा (लाज-शर्म) रखते हुए अनेक दावपेंच से, जो धनी मन भावे श्री इन्द्रावतीजी खेलती हैं।

।। प्रकरण ।। १२ ।। चौपाई ।। ४३३ ।।

राग धन्यासरी

वालैयो रमाडे रे, अमने नव नवे रंग।
जेम जेम रमिए रे, तेम तेम वाधे रे उमंग।। १ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, वालाजी हमको नए-नए आनन्द के साथ रामतें खिलाते हैं। हम जैसे-जैसे खेलती हैं, वैसे-वैसे ही हमारे मन में उमंग बढ़ती है।

Nijanand App

सकल मलियो रे साथ, सोभे वालैया संघात।
जाणिए उदयो प्रभात, तिमर भाजियो रात, सोहे वृंदा रे वन।। २ ।।

सब सखियां वालाजी के साथ मिलकर शोभा बढ़ाती हैं, ऐसा लगता है मानो सुहावने वृन्दावन में सवेरा हो गया है और रात्रि का अन्धकार मिट गया है। इस तरह से वृन्दावन की शोभा है।

भूखण झलहलकार, नंग तो तेज अपार।
जोत तो अति आकार, वस्तर सोहे सिणगार, मोहे वालो रे मन।। ३ ।।

सखियों के आभूषण जगमगा रहे हैं, उनके नगों का तेज अपार है। उनके सुन्दर शृंगार से उनके स्वरूप इतने मनमोहक हो गए हैं कि वालाजी उन पर फिदा हो जाते हैं।

सिणगार सर्वे सोहे, वालोजी खंत करी जुए।
जाणिए मूलगां रे होय, तारतम विना नव कोय, जाणें एह रे धन।। ४ ।।

सखियों के सम्पूर्ण शृंगार को वालाजी बड़ी चाह से देखते हैं। उन्हें लगता है कि इनकी (सखियों की) शोभा ब्रज से ही है। अब जागृत बुद्धि के तारतम ज्ञान के द्वारा यह पता चला कि रास में योगमाया के तन थे, कालमाया के नहीं।

वालोजी अति उलास, मन मांहें रलियात।
पूरवा सुंदरीनी आस, मरकलडे करे हांस, उलट उतपन।। ५ ।।

वालाजी बड़ी उमंग के साथ मन में प्रसन्न हैं और सखियों की आशा पूरी करने के लिए मुस्कराकर सबको हंसाते हैं और उमंग पैदा करते हैं।

सुख तो वालाजीने संग, अरधांग लिए रे अंग।
जुवती करती जंग, रमे नव नवे रंग, घणूं जसन।। ६ ।।

वालाजी सब सखियों को अपने अंग से लिपटाते हैं। सखियां भी नए-नए तरीकों से प्रसन्नता के साथ खेलती हैं, जिससे उल्लास और बढ़ जाता है।

सुंदरी वल्लभ बंने, करे इछा मन गमे।
रीस तो कोए न खमे, नीच तो भाखे न नमे, बोले बल तन।। ७ ।।

सखियां और वालाजी अपने मन की इच्छानुसार खेलते हैं। खेल में कोई हल्की भाषा नहीं बोलता है, न किसी को झुकना ही पड़ता है। गुस्सा किसी को आता ही नहीं, जबकि दोनों अपनी-अपनी शक्ति से बोलते हैं।

चालती चतुरा रे चाल, मुख तो अति मछराल।
सोहंती कट लंकाल, चढती जाणे घंटाल, प्रेम काम सिंध।। ८ ।।

सखियां बड़ी चतुराई वाली चाल चलती हैं। उनके मुख मस्ती से भरे हुए हैं। उनकी पतली कमर शोभा देती है। शृंगार में लहंगे का घेरा नीचे बड़ा तथा कमर में पतला (घण्टे की तरह शोभित है) मस्ती भरे प्रेम और काम से भरे हुए समुद्र के समान दिखाई देता है।

छेलाइए अति छेल, वल्लभ संघाते गेहेल।
प्रेम तो पूरो भरेल, स्याम संगे रंग रेल, वाले बांहोंडी रे बंध।। ९ ।।

चतुराई दिखाने में अति चतुर हैं। पिया जी के साथ दीवानी बनी हैं और पिया के गले में बांहें डालकर भरपूर रंगरेलियां मना रही हैं।

Nijanand App

वाणी तो बोले विसाल, रमती रमतियाल।
कंठ तो झाकझमाल, अंग तो अति रसाल, सोहंती रे सनंध।। १० ।।

खेल-खेल में ऊंचे स्वर से गाती हैं। गले की आवाज रसीली है। काम से भरे अंग की शोभा लुभावनी है।

गावती सुचंग रंग, आणती अति उमंग।
स्वर एक गाय संग, अलवेली अति अंग, वास्नाओ सुगंध।। ११ ।।

मधुर रंग में उमंग भरकर सब सखियां एक स्वर में मिलकर गाती हैं और सब वातावरण आनन्द से खुशबूदार हो जाता है।

वल्लभ कंठ वलाय, लिए रंग धाय धाय।
रामत करे सवाय, पाछी नव राखे काय, ऊभी रहे रे उकंध।। १२ ।।

सखियां वालाजी से कहती हैं, हे वालाजी! खड़े रहो। वह दौड़-दौड़ कर आती हैं। वालाजी के गले में हाथ डालकर उनसे भी बढ़-चढ़कर खेलती हैं। उस समय अंग को भी नहीं संभाल पातीं।

इंद्रावती अंगे आप, वालाजीसुं करे विख्यात।
मुखतो मेले संघात, अमृत पिए अघात, सुख तो लिए रे सुन्दर।। १३ ।।

श्री इन्द्रावतीजी अपने धनी से अंग मिलाकर चुम्बन द्वारा अधरों का अमृत पीकर तृप्त होती हैं। बड़े मन-मोहक और सुन्दर खेल का सुख लेती हैं।

|| प्रकरण || १३ || चौपाई || ४४६ ||

राग श्री कालेरो

आवोरे सखियो आपण हमची खूंदिए, वालाजीने भेला लीजे रे।
रामत करतां गीतज गाइए, हांस विनोद रंगडा कीजे रे।। १ ।।

आओ री सखियो! वालाजी के साथ में उछलते हुए खेलें। खेलते समय हंसी और विनोद के साथ गीत गाएं।

मारा वालैया ए रामत घणूं रूडी, हमचडी रलियाली रे।
कालेरामां कंठ चढावी, गीत गाइए पडताली रे।। २ ।।

हे वालाजी! यह खेल बहुत अच्छा है। मस्ती से भरा है और सुहावना है। ऊंचे स्वर में गाएं तथा हाथ की ताली बजाएं।

हमचडीनो अवसर आव्यो, आगे कह्यूं नहीं अमे तमने रे।
एवो समयो अमने क्यांहे न लाध्यो, हामडी रहीती अमने रे।। ३ ।।

अब हमारी चाह को पूर्ण करने का समय आ गया है। हमने इससे पूर्व कभी आपसे नहीं कहा। ऐसा समय भी पहले कभी मिला नहीं था और इसलिए हमारी इच्छा बाकी थी।

जे रस छे वाला हमचडीमां, ते तो क्यांहे न दीठो रे।
जेम जेम सखियो आवे अधकेरी, तेम तेम दिए रस मीठो रे।। ४ ।।

इस लीला में जो रस है, वह हमने कभी नहीं देखा। इसमें जैसे-जैसे अधिक सखियां आती जाती हैं, वैसे-वैसे यह रस बढ़ता जाता है।

Nijanand App

वचन सर्वे गाइए प्रेमना, तेना अर्थ अंगमा समाय।
ते ता अर्थ प्रगट पाधरा, हस्तक वाला संग थाय।।५।।

सखियो! आप सब मिलकर प्रेम वचन ही गाएं। जिसका भाव हृदय में आ जाए और हाथ पकड़ कर प्रियतम के साथ खेलें।

अमृत पीजे ने चुमन दीजे, कंठडे वालाने वलाइए।
हमचडीमां त्रण रस लीजे, रेहेस रामतडी गाइए।।६।।

इस खेल में तीन प्रकार के आनन्द लें। अधरों से रस पिएं। चुम्बन दें। वालाजी के गले से लिपट कर आनन्द भरे गीत गाएं।

ए रामतमा विलास जे कीधा, ते केहेवाय नहीं मुख वाणी रे।
सर्वे सुखडा लई करीने, रह्या रुदयामां जाणी रे।।७।।

इस खेल में जो हमने विलास के सुख लिए, वह शब्दों द्वारा वर्णन नहीं हो सकते हैं। सब प्रकार के सुख लेकर हृदय में उनका अनुभव होता है।

जेटला वचन गाया अमे रमता, ते सर्वेना सुख लीधां।
कहे इंद्रावती केम कहूं वचने, अनेक सुख वाले दीधां।।८।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि जिन वचनों को हमने गाया, उन सबका सुख रास में वालाजी ने हमको दिया, जो वर्णित नहीं हो सकता।

॥ प्रकरण ॥ १४ ॥ चौपाई ॥ ४५४ ॥

राग मारू

वाला आपण रमिए आंख मिचामणी, ए सोभा जाय न कही रे।
निकुंजना मंदिर अति सुंदर, आपण छपिए ते जुजवा थई रे।।१।।

हे वालाजी! आओ हम आंख मिचौनी की रामत खेलें। जिसकी शोभा कहने में नहीं आती। फूलों के कमरे अति सुन्दर हैं। इनमें अलग-अलग छिप जाएं।

एवुं सुणीने साथ सहु हरख्यो, ए छे रामतडी सारी।
पेहेलो दाव आपणमा कोण देसे, ते तमे कहोने विचारी।।२।।

ऐसा सुनकर सभी सुन्दरसाथ खुश हो गए। यह खेल बहुत अच्छा है। विचार करके कहें कि पहले अपने में से दांव (बारी) कौन देगा?

सहु साथ कहे वालो दाव देसे, पेहेलो ते पिउजीनो वारो।
जो पेहेलो दाव आपण दऊं, तो ए झलाए नहीं धुतारो।।३।।

सब साथ ने उत्तर दिया कि पहले वालाजी ही दाव देंगे। पहले उनकी ही बारी है। यदि हम पहले दांव (बारी) देंगे तो यह छलिया पकड़ा नहीं जाएगा।

आवो रे वाला हूं आंखडी मीचूं, आंखडी ते मीचजो गाढो।
अमे जईने वनमां छपिए, पछे तमे खोलीनें काढो।।४।।

आओ वालाजी! पहले मैं आपकी आंखें मीचूं। आप खुद अपनी आंख बन्द करते हो तो जोर से बन्द करना। हम सब वन में जाकर छिप जाते हैं। फिर आप हमको ढूंढ लेना।

Nijanand App

सखियो तमे छाना थई छपजो, भूखण ऊंचा चढाओ।
रखे सखियो कोई आप झलाओ, मारा वालाजीने खीदडी खुदावो।। ५ ।।

हे सखियो! तुम चुपचाप छिपना और अपने आभूषणों को भी ऊपर चढ़ा लेना, ताकि उनकी भी आवाज न आए, कोई पकड़ में भी नहीं आना, जिससे हम वालाजी की हंसी उड़ाएं।

छेलाइए छाना थई छपजो, रखे कोई बोलतूं कांई।
ए काने सरूओ छे सबलो, हमणा ते आवसे आंहीं।। ६ ।।

बड़ी चालाकी के साथ तुम छिपना, कोई बोले नहीं। यह धीमी आवाज भी सुन लेते हैं और यहीं आ जाएंगे।

लपतो छपतो आवे छे, सखियो सावचेत थाइए।
आणीगमां जो आवे वालो, तो इहां थकी उजाइए।। ७ ।।

वालाजी लुकते-छिपते आएंगे। तुम सब होशियार रहना। वालाजी इस तरफ से आएं तो यहां से भाग जाना।

जो कदाच वालो आवे ओलीगमां, तो आपण पैए जैए।
दाव रहे जो वालाजी ऊपर, तो फूली अंग न मैए।। ८ ।।

यदि वालाजी दूसरी तरफ से आएं तो हम थपकी (पाली) मारने की जगह पर दौड़कर आ जाएं। इस तरह से दांव (बारी) वालाजी पर ही रहेगी जिससे बड़ा आनन्द आयेगा।

ते माटे सहु आप संभारी, रखे कोई प्रगट थाय रे।
जो दाव आपण ऊपर आवसे, तो ए केमे नहीं झलाय रे।। ९ ।।

इसलिए सखियो, अपने आपको संभालो, जाहिर भी न होने दो। यदि बारी (दांव) अपने ऊपर आ जाए तो फिर यह हमारी पकड़ में नहीं आएंगे।

अमे निकुंज वनथी निसर्यां, आवी थवकला खाधां।
वाले वनमां धीमी धीमी, श्री ठकुराणीजी ने लाधां।। १० ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मैं निकुंज वन से निकली और पाली पर जाकर थपकी लगा दी। वालाजी ने धीरे-धीरे वन में जाकर श्री श्यामाजी को पकड़ लिया।

सखियो जाओ तमे छपवा, हूं दऊं दाव स्यामाजी ने साटे।
हूं रमी सूं नथी जाणती, तमे स्याने देओ मूं माटे।। ११ ।।

वालाजी कहते हैं, हे सखियो! तुम वन में छिपने जाओ। मैं श्री श्यामाजी के बदले में (दाव) बारी देता हूं। श्री श्यामाजी कहती हैं, क्या मैं खेलना नहीं जानती? तुम मेरे बदले में क्यों दांव (बारी) दोगे?

रामतमां मरजाद म करजो, रमजो मोकले मन।
नासी सको तेम नासजो, तमे सुणजो सर्वे जन।। १२ ।।

श्री श्यामाजी वालाजी से कहती हैं कि खेल में मर्यादा नहीं करना। आप खुले मन से खेलें। भाग सको तो भागना, ऐसा सबको सुनाकर श्री श्यामाजी ने कहा।

Nijanand App

स्यामाजी आंखडली मीचीने ऊभा, सखियो वनमां पसरी।
सहु कडछीने रमे जुजवा, भूखण लीधां ऊंचा धरी।। १३ ।।

श्री श्यामाजी अपनी आंख बन्द करके खड़ी हुई। सखियां वन में छिप गई। सब सखियां अपने आभूषण ऊंचे करके तथा कपड़ों को कमर में समेट कर खेलती हैं।

आनंद मांहें सहुए सखियो, पैए जाय उजाणी।
भूखण न दिए बाजवा, एणी चंचलाई जाय न बखाणी।। १४ ।।

सब सखियां आनन्द में हैं और पाली (ठप्पा लगाने का निश्चित स्थान) की तरफ दौड़कर जा रही हैं। वह अपने आभूषणों की आवाज नहीं होने देतीं। उनकी ऐसी चतुराई की महिमा बखान से बाहिर है।

उलास दीसे अंगों अँगे, श्रीस्यामाजी ने आज।
ठेक दई ठकुराणीजीए, जईने झाल्या श्री राज।। १५ ।।

आज श्री श्यामाजी के अंग-अंग में उमंग दीख रही है। उन्होंने कूदकर झपट्टा मारा और वालाजी को पकड़ लिया।

ए रामत घणूं रूडी थई, मारा वालाजीने संग।
कहे इंद्रावती निकुंज वन, घणूं रमतां सोहे रंग।। १६ ।।

वालाजी के साथ निकुंज वन में हमने यह खेल बड़े आनन्द से खेला, ऐसा श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं।

।। प्रकरण ।। १५ ।। चौपाई ।। ४७० ।।

राग अडोल गोरी-चरचरी

सखी वृखभान नंदनी, कंठ कर कृष्ण नी।
जोड एक अंगनी, रमती रंगे रास री।। १ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे सखियो! वृखभाननन्दिनी (श्री राधाजी) श्री कृष्णजी के गले में हाथ डालकर रास खेलती हैं। यह युगल स्वरूप जैसे एक ही अंग हो, ऐसा लगता है।

स्याम स्यामाजी जोड सुचंगी, जुओ सकल सुंदरी।
सोभा मुखारविंदनी, करे मांहों मांहें हांस री।। २ ।।

हे सखियो! देखो श्री श्याम-श्यामाजी की जोड़ी बहुत अच्छी है। दोनों के मुखारबिन्द की शोभा मनमोहक है और वे आपस में हंसते हैं।

भूखण लटके भामनी, कांई तेज करण कामनी।
संग जोड स्यामनी, वनमां करे विलास री।। ३ ।।

श्री श्यामाजी के आभूषण लटक रहे हैं। जिनके तेज की किरणों से मन में कामनाएं उठती हैं। ऐसी श्री श्यामाजी की जोड़ी श्याम के साथ वन में आनन्द कर रही है।

पांउं भरे एक भांतसुं, रमती रंग खांतसुं।
जुओ सखी जोड कान्हसुं, कांई सुंदरी सकला परी।। ४ ।।

वह एक पांव भी जब आगे चलते हैं तो उमंग और चाहना से चलते हैं। हे सखियो! तुम सब कन्हैया की जोड़ी को देखो। कैसी है जो श्री श्यामाजी के साथ सर्वश्रेष्ठ है।

Nijanand App

फरती रमे फेरसुं, सुंदरबाई घेरसूं।
हजार वार तेरसूं, आवी वालाजी पास री।। ५ ।।

सुन्दरबाई ऐसी युगल जोड़ी के चारों ओर घूमती है और बारह हजार सखियों को लेकर वालाजी के पास आती है।

वल्लभे लीधी हाथसूं, सुंदरबाई बाथसूं।
रामत करे निघातसूं, जोरे मुकावे हाथ री।। ६ ।।

वालाजी ने सुन्दरबाई को पकड़कर अपने गले से लगा लिया और जोर से दबाया। तब सुन्दरबाई अपनी ताकत से हाथ छुड़ाती हैं।

वेहूगमां बे भामनी, वच्चे कान्ह कंठे कामनी।
कंठ बांहोंडी बंने स्यामनी, एम फरत प्राणनाथ री।। ७ ।।

दोनों बगलों में दो अंगनाएं हैं और बीच में श्री कृष्णजी दोनों के गले में हाथ डाले हैं। इस प्रकार से श्री प्राणनाथजी दोनों के गले में बाहें डालकर घूम रहे हैं।

आखल पाखल सुंदरी, केटलीक कंठे बांह धरी।
एक ठेकती फरती भमरी, एम रमत सकल साथ री।। ८ ।।

आगे पीछे कई एक सखियां गले में हाथ डालकर इसी प्रकार कूदती और चक्कर लगाती हैं।

झणके झण झांझरी, घूंघरी घमके मांझ री।
कडला बाजे मांहें कांबी री, विछुडा स्वर मिलाप री।। ९ ।।

इस प्रकार की रामत खेलने में पांव के आभूषण—झांझरी, घुंघरी, कांबी, कड़ला और बिछुआ एक साथ एक स्वर से आवाज करते हैं।

धमके पांउ धारुणी, रमती रास तारुणी।
फरती जोड फेरनी, न चढे कोणे स्वांस री।। १० ।।

युवतियां रास करते समय धरती पर जोर से पैर मारती हैं और चक्कर लगाती हैं, फिर भी किसी की सांस नहीं फूलती।

चंद चाल मंद थई, जोई सनंधे थकत रही।
गत मत भूली गई, देखी थयो उदास री।। ११ ।।

ऐसी सुन्दर रामत को देखकर चन्द्रमा की चाल भी धीमी हो गई। चन्द्रमा अपनी चाल और सुधि भूलकर उदास हो गया (वह भी अपनी बदनसीबी पर अफसोस करने लगा, काश! मैं भी सखी होता)

आनंद घणो इंद्रावती, बांहोंडी कंठ मिलावती।
लटकती चाले आवती, वालाजी जोडे जास री।। १२ ।।

श्री इन्द्रावतीजी आनन्द में फूली नहीं समातीं। वह लटकती चाल से वालाजी के पास जाकर उनके गले में हाथ डालती हैं।

।। प्रकरण ।। १६ ।। चौपाई ।। ४८२ ।।

Nijanand App

राग सिंधूडो

ओरो आव वाला आपण फूंदडी फरिए, फरिए ते फेर अपार।
फरतां फरतां जो फेर आवे, तो बांहोंडी म मूकसो आधार।। १ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि हे वालाजी! मेरे पास आओ। हम फूंदड़ी (किकली) फिरें और खूब तेजी से घूमें। घूमते-घूमते यदि चक्कर आ जाए तो हाथ नहीं छोड़ना।

बांहोंडी मूकसो तो अडवडसूं, त्यारे हांसी करसे सहु साथ।
ते माटे बल करीने रमजो, फरतां न मूकवो हाथ।। २ ।।

यदि आप हाथ छोड़ दोगे तो मैं गिर पडूंगी और सब सखियां हंसी करेंगी। इस वास्ते ताकत लगाकर पकड़ना और हाथ न छोड़ना।

तमे तो वालाजी फूंदडी फरो छो, पण फरो छो आप अंग राखी।
ए रामत करतां मारा वालैया, फरिए पाछां अंग नाखी।। ३ ।।

हे वालाजी आप फूंदड़ी (किकली) फिरते हो। संकोच करके, इस रामत को खेलते समय अंग खींचकर पीछे रखो।

जुओ रे सखियो तमे आ जोड फरतां, रामत करे घणे बल।
इंद्रावतीनां तमे अंगडां जो जो, मारा वालाजीसूं फरे केवे बल।। ४ ।।

हे सखियो! तुम इस जोड़ी को घूमते हुए देखो। यह जोड़ी कितनी ताकत लगाकर रामत करती है। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मेरे अंग को विशेषकर देखो। मैं वालाजी के साथ कितने बल से घूमती हूं।

जुओ रे सखियो एम गातां फरतां, वालाजीने दऊं चुमन।
भंग न करूं फेर फूंदडी केरो, तो देजो स्याबासी सहु जन।। ५ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि इस प्रकार घूमते और गाते हुए वालाजी को चुम्बन भी दूंगी और खेल भी चलता रहेगा। ऐसा कर दिखाऊं तो मुझे शाबासी देना।

फरतां फूंदडी लीधी कंठ बांहोंडी, वली फरे छे तेमनां तेम।
दई चुमन ने थया जुजवा, वली फरे ते फरतां जेम।। ६ ।।

फूंदड़ी फिरते हुए (किकली खेलते समय) तुरन्त श्री इन्द्रावतीजी वालाजी के गले में हाथ डाल देती हैं और चुम्बन देकर फिर से ज्यों की त्यों फूंदड़ी (किकली) फिरने लगती हैं।

एम अंग वालीने रमजो रे सखियो, तो कहूं तमने स्याबास।
एम लटके रंग लेजो वचमां, तो हूं तमारडी दास।। ७ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे सखियो! यदि तुम भी अंग को मोड़कर खेलोगी, तो मैं तुमको शाबासी दूंगी। इस तरह से बीच में लटककर चुम्बन देकर आनन्द लोगी तो मैं तुम्हारी दासी कहलाऊंगी।

हूं तो सांचू कहूं रे सखियो, तमने तो कांईक मरजाद।
सांचू कहे अने प्रगट रमे, इंद्रावती न राखे लाज।। ८ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, मैं सच कहती हूं कि तुम्हें खुलकर खेलने में शर्म आती है। मैं तो लाज-शर्म को छोड़कर खेलती हूं।

।। प्रकरण ।। १७ ।। चौपाई ।। ४९० ।।

Nijanand App

राग केदारो

भूलवणीनी रामत कीजे, वाला तमे अम आगल थाओ रे।
दोडी सको तेम दोडजो, जोइए अम आगल केम जाओ रे।। १ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे वालाजी! चलो हम भुलवनी की रामत खेलें। आप हमारे आगे हो जाओ। जितना दौड़ सको, दौड़ना। देखती हूं, आप हमारे आगे कैसे भागते हो?

भूलवणीमां भूलवजो, देजो वलाका अपार।
भूलवी तमारी हूं नव भूलूं, तो हूं इंद्रावती नार।। २ ।।

भुलवनी में अनेक चक्कर देकर आप मुझे भुलाना। यदि आपके भुलाने पर भी मैं न भूली, तब ही इन्द्रावती नारी कहलाने की हकदार होऊंगी।

जुओ रे सखियो वाले भूलवी मूने, पण हूं केमे नव टली।
अनेक वलाका दीधां मारे वाले, तो हूं मलीने मली।। ३ ।।

हे सखियो! देखो वालाजी मुझे भुला रहे हैं, पर मैंने उनका पीछा नहीं छोड़ा। वालाजी ने अनेक चक्कर दिए तो भी मैं उनके साथ ही रही।

रहो रहो रे वाला मारे वांसे थाओ, हूं तम आगल थाऊं रे।
सांची तो जो भूलवुं तमने, मारा साथ सहुने हसावूं रे।। ४ ।।

अब श्री इन्द्रावतीजी वालाजी से कहती हैं, हे वालाजी! ठहरो, अब मैं तुम्हारे आगे होती हूं। तुम मेरे पीछे आओ। मैं तुमको भुलाऊंगी तो सच्ची सखी कहलाऊंगी। सब साथ को हंसाऊंगी।

सखियो तमे सावचेत थाजो, रखे कोई मूकतां हाथ रे।
हमणा हरावुं मारा वालाजीने, जो जो तमे सहु साथ रे।। ५ ।।

हे सखियो! तुम सावधान हो जाओ। तुम हाथ नहीं छोड़ना। मैं अभी वालाजी को हराती हूं, तुम देखना।

भूलीस मा-रे वचिखिण वाला, आवी मारे वांसे वलगो।
अनेक वलाका जो हूं दऊं, पण तूं म थाइस अलगो।। ६ ।।

आओ वालाजी! मेरा पीछा करो। हे मेरे कुशल वालाजी! भूलना नहीं। हे वालाजी! मैं अनेक चक्कर दूंगी तो भी आप अलग नहीं होना।

एक वलाका मांहें रे सखियो, वालो भूल्या ते प्रथम मूल।
दिए सखी ताली पडिआलोटे, हंसी हंसी आवे पेट सूल।। ७ ।।

श्री इन्द्रावतीजी ने एक ही दांवपेंच में वालाजी को भुला दिया (श्री इन्द्रावतीजी श्री श्यामाजी के पैरों के नीचे से निकल गई। वालाजी खड़े ही रह गए क्योंकि वह श्री श्यामाजी के पैरों के नीचे से निकलें कैसे?) इसलिए भूल गए और हार गए। तब सब सखियों ने ताली बजा-बजाकर इतनी हंसी की कि उनके पेट हंसते-हंसते दुखने लगे।

सहु साथ मलीने सावत कीधुं, इंद्रावती विविध विसेक।
घणी थई रामत ने वली थासे, पिउ भूलवतां राखी रेख।। ८ ।।

इस प्रकार सब सखियों को सिद्ध हो गया कि खासकर श्री इन्द्रावतीजी ने ही हमारी लाज रखी है और पियाजी को भुला दिया है। रामत बहुत हुई और आगे भी होगी, किन्तु जीत हमारी ही होगी। (जीत

Nijanand App

इसलिए होगी कि सब सखियां एक-दूसरे के पैरों के नीचे से निकल सकती हैं, पर वालाजी नहीं निकल सकते, वहीं खड़े रह जाएंगे)

॥ प्रकरण ॥ १८ ॥ चौपाई ॥ ४९८ ॥

राग कल्याण–चरचरी

आज राज पूरण काज, मन मनोरथ सुंदरी।
मन मनोरथ सुंदरी, सखी मन मनोरथ सुंदरी॥ १ ॥

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि हे सखियो! आज वालाजी हमारी सब इच्छाएं पूर्ण करेंगे।

विध विधना विलास, मगन सकल साथ।
मरकलडे करे हांस, रेहेस रामत विस्तरी॥ २ ॥

तरह-तरह के आनन्द में सखियां मग्न हैं और मुस्कराकर हंसती हैं। तरह-तरह के खेल खेलती हैं।

कह्यो न जाय आनंद, अंग न माय उमंग।
विकसियां अमारा मन, रहियो सर्वे हरवरी॥ ३ ॥

इस समय के आनन्द का वर्णन नहीं हो सकता। अंग में उमंग समाती नहीं है। सबके मन प्रफुल्लित हैं और सब अत्यन्त तेजी से खेल रही हैं।

आ समेनो वृंदावन, जुओ रे आ सोभा चंद।
फूलडे अनेक रंग, रमे साथ परवरी॥ ४ ॥

इस समय वृन्दावन के चन्द्रमा की तथा अनेक रंग के फूलों की शोभा देखो। ऐसे में हमारे सुन्दरसाथ मग्न होकर खेल रहे हैं।

काबर कोयल स्वर, कपोत घूमे चकोर।
मृगला वांदर मोर, नाचत फेरी फरी॥ ५ ॥

मैना, कोयल के मीठे स्वर गूंज रहे हैं। कबूतर और चकोर घूम रहे हैं। हिरण, बन्दर, मोर घूम-घूमकर ऐसे सुन्दर दृश्य को देखकर नाच रहे हैं।

स्यामनां उलासी अंग, उलट अमारे संग।
मांहों–मांहें मकरंद, व्यापियो विविध पेरी॥ ६ ॥

श्री श्यामजी (श्री कृष्णजी) के अंग का उल्लास देखकर हमारे अंग में भी उमंग आती है और आपस में काम की लपट तरह-तरह से अंग में भरी है।

रामत करे कामनी, विलसतां वाधी जामनी।
सखी सखी प्रते स्याम घन, दिए सुख दया करी॥ ७ ॥

सखियां रामत करती हैं। रात भी इस आनन्द में स्थिर हो गई है। श्री श्यामजी (श्री कृष्णजी) भी एक-एक गोपी के पास बारी-बारी से जाकर सुख देते हैं।

रमतां दिए चुमन, एक रस जुवती जन।
करी जुगत नौतन, चितडा लीधा हरी॥ ८ ॥

खेलते-खेलते चुम्बन देती हैं। सब युवतियां एक रस में भीगी हैं। वालाजी ने नए-नए प्यार देकर उनके चित्त को मोह लिया है।

Nijanand App

कंठ बाहों वली वली, अनेक विधे रंग रली।
लिए अमृत मुख मेली, पिए रस भरी भरी।। ९ ।।

फेर-फेरकर गले में हाथ डालते हैं। अनेक प्रकार से मिलते हैं तथा मुख से मुख मिलाकर अमृत रस का पान करते हैं।

रस घणो उपजावती, सखी मीठड़े स्वर गावती।
नव नवा रंग ल्यावती, इंद्रावती अंग धरी धरी।। १० ।।

इस तरह से रामत में खूब आनन्द आ रहा है। सखियां मीठे स्वरों में गा रही हैं। श्री इन्द्रावतीजी अंग में नए-नए विचार लेकर खेल खिलाती हैं।

।। प्रकरण ।। १९ ।। चौपाई ।। ५०८ ।।

राग पंचम मारू

रामत गढ तणी रे, हाथ मांहें हाथ दीजे।
बल करीने सहु ग्रहजो बांहोंडी, तो ए रामत रस लीजे।। १ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि हाथ से हाथ पकड़ कर हम किले जैसा रूप बनाकर रामत खेलें। तुम सब ताकत से बांहों को पकड़ रखना तो रामत का आनन्द आएगा।

प्रथम पाधरू कहूं रे सखियो, ए रामत छे मदमाती।
दोडी न सके तेणी बांहोंड़ी न छूटे, ते आवसे पाछल घसलाती।। २ ।।

पहले मैं तुमको साफ-साफ समझा देती हूं कि यह खेल मस्ती से भरा है। जो नहीं दौड़ सकेगी उसका हाथ तो नहीं छूटेगा, पर गिरकर पीछे-पीछे घिसटती हुई आएगी।

ते माटे बंध बांहों खरो ग्रही, करजो जोरमां जोर।
पछे दोडसो त्यारे नहीं रे केहेवाय, थासे अति घणो सोर।। ३ ।।

इस वास्ते बांहों को मजबूती से पकड़ना और जोर से ताकत लगाना। यदि दौड़ में पीछे रह जाओगी तो बड़ी हंसी होगी।

पेहेली चाल चालो कीडीनी, हलवे पगलां भरजो।
पछे वली कांईक अधकेरां, वधतां वधतां वधजो।। ४ ।।

पहली चाल चींटी की तरह चलो। फिर धीरे-धीरे चाल बढ़ाओ। फिर चाल बढ़ाते-बढ़ाते खूब बढ़ाओ।

वली कांईक वृध पामतां, मचकासूं म हालजो।
हजी लगे आकला म थाजो, लडसडती चाल चालजो।। ५ ।।

और इससे भी अधिक बढ़ाने पर मस्ती में नहीं चलना। अभी से ही जल्दी नहीं करना। लटकती-मटकती चाल चलना।

हवे कांईक पग भरजो प्रगट, सावचेत सहु थाजो।
साथ सकल तमे आप संभाली, मुखडे पुकारीने गाजो।। ६ ।।

अब सब सावधान होकर धीरे-धीरे पग बढ़ाओ। फिर एक ही स्वर से गर्जना करके भागो।

Nijanand App

लटके चटके छटके दोडजो, रखे पग पाछां देतां।
हांसी छे घणी ए रामतमां, दोड तणो रस लेतां।।७।।

लटकती, चटकती और छटकती चाल से दौड़ना। पांव पीछे नहीं हटाना। इस रामत में दौड़ने का ही आनन्द है और हंसी है।

कहे इंद्रावती ए रामतडी, मारा वालाजी थई अति सारी।
दोड करता तमे पाछूं नव जोयुं, अमे बांहोंडी न मूकी तमारी।।८।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे वालाजी! यह रामत बहुत अच्छी हुई है। दौड़ते समय आपने पीछे नहीं देखा और हमने भी आपकी बांह नहीं छोड़ी।

।। प्रकरण ।। २० ।। चौपाई ।। ५१६ ।।

राग श्री काफी

रामत करतालीनी रे, एमा छे वलाका विसमा।
बेसवूं उठवूं फरवूं रमवूं, ताली लेवा साम सामा।।१।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि हाथ से ताली बजाकर रामत करने में दावपेंच कठिन हैं। इसमें—बैठना, उठना, फिरना, खेलना और आमने-सामने आकर ताली बजाना है।

तम सामी अमे ऊभा रहीने, हाथ ताली एम लेसूं।
बेसंता उठता फरता, सामी ताली देसूं।।२।।

हे वालाजी! आपके सामने खड़े होकर मैं हाथ की ताली लूंगी, फिर बैठकर, उठकर, घूमकर, फिर सामने आकर ताली दूंगी।

बेसंता ताली दईने बेसिए, उठंता लीजे ताली।
फरता ताली दई करीने, वचे रामत कीजे रसाली।।३।।

बैठते समय ताली देकर बैठना है और उठते समय ताली लेकर उठना है। घूमते समय ताली देकर घूमना है। इस प्रकार की रामत सबके बीच में खेलूंगी।

रामत करता अंग सहु वालिए, सकोमल जोड सोभंत।
अंग वाली वचे रंग रस लीजे, भंग न कीजे रामत।।४।।

खेलते समय सब अंग मोड़िए। इस तरह से सुन्दर जोड़ी शोभा देगी। अंग मोड़ते समय खेल में आनन्द लीजिए और खेल में भी रुकावट नहीं आवे।

ए रामतडी जोई करीने, सहु साथने वाध्यो उमंग।
सहु कोई कहे अमे एणी पेरे, रमसूं वालाजीने संग।।५।।

इस रामत को देखकर सब सुन्दरसाथ के मन में खेलने की उमंग बढ़ गई तथा सब कहने लगीं कि हम भी इस प्रकार वालाजी के साथ खेलेंगे।

साथ कहे वाला रमो अमसूं, ए रामत सहु मन भावी।
सहुना मनोरथ पूरण करवा, सखी सखी प्रते लेओ रंग आवी।।६।।

सब सखियां कहने लगीं, हे वालाजी! हमारे साथ भी खेलो। यह खेल सबको अच्छा लगा है, इसलिए सबकी इच्छा पूरी करने के लिए एक-एक सखी से आनन्द लो।

Nijanand App

हाथ ताली रमे छे वालो, सघलीसूं सनेह।
रंगे रमाडे रासमा, वालो धरी ते जुजवा देह।।७।।

वालजी हाथ की ताली का खेल सबसे प्रेम से खेलते हैं। बड़ी उमंग और आनन्द के साथ सबको रास खिलने के लिए जुदा-जुदा तन धारण किए।

कहे इंद्रावती ए रामतडी, मारा वालाजी थई अति सारी।
सघली संगे रमिया रंगे, एक पिउ एक नारी।।८।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि वालाजी के साथ में यह रामत बहुत ही अच्छी हुई। वालाजी ने रामत में एक-एक गोपी एक-एक श्याम का रूप धारण कर सबके साथ आनन्द से रामतें खेलीं।

।। प्रकरण ।। २१ ।। चौपाई ।। ५२४ ।।

राग केदारो–चरचरी

उमंग उदयो साथ, रंगे तो रमवा रास।
रासमां करूं विलास, सखियो सुख लेत री।।१।।

सुन्दरसाथ के मन में रास खेलने की उमंग और बढ़ गई है। रास के बीच में विलास के सुख लेती हैं।

भोमनी किरण भली, आकासे जईने मली।
चांदलो न जाए टली, उजलीसी रेत री।।२।।

वृन्दावन की भूमि के तेज की किरणें आकाश तक जा रही हैं। चन्द्रमा की गति रुक गई है और रेत चमक रही है।

रुत निस नवो सस, दीसे सहु एक रस।
प्रकासियो दसो दिस, न केहेवाय संकेत री।।३।।

मौसम, रात्रि तथा नया चन्द्रमा सब एक ही रस में मग्न हो गए हैं। दसों दिशाओं में इनकी रोशनी फैल रही है। हम तनिक भी इनकी विवेचना नहीं कर सकते।

सूं कहूं वननी जोत, पत्र फूल झलहलोत।
वृंदावन उद्योत, सामग्री समेत री।।४।।

वन की ज्योति के तेज का वर्णन कैसे करूं? पत्ते और फूल भी जगमगा रहे हैं। इस प्रकार वृन्दावन सम्पूर्ण सामग्री सहित जगमगा रहा है।

पसु पंखी अनेक नाम, तेना विचित्र चित्राम।
निरखतां न भाजे हाम, जुजवी जुगत री।।५।।

पशु-पक्षियों के अनेक नाम हैं। इनके रूप चित्र-विचित्र हैं। इनको देखकर चाहना पूर्ण नहीं होती है। सब भांति-भांति युक्ति के हैं।

रमतां भूखण किरण, ब्रह्मांड लाग्यो फिरण।
सखियो उलासी तन, कमल विकसेत री।।६।।

खेलने में आभूषणों की किरणें उठती हैं तो ऐसा लगता है कि योगमाया का ब्रह्माण्ड ही घूम रहा है। सखियों के तन उमंग से भरे हैं जैसे कमल के फूल खिल गए हों।

Nijanand App

एणी पेरे करूं रामत, मनडा थया महामत।
खंत खरी लागी चित, वालाजीसूं हेत री।।७।।

इस प्रकार की रामत से मन मस्ती से भर गया है और वालाजी से प्रेम में खेलने की चाह और बढ़ गई है।

प्रेमना प्रघल पूर, सूरो मांहें अति सूर।
पिए रस मेली अधुर, सघली सुचेत री।।८।।

सखियां प्रेम से भरपूर हैं। बहादुरों में बहादुर हैं। सब सखियां अधर से अधर मिलाकर अमृत रस पीकर सावधान हो गई हैं।

इंद्रावती करे रंग, रामत न करे भंग।
रमती फरती वाला संग, छबके चुमन देत री।।९।।

श्री इन्द्रावतीजी वालाजी के साथ खेलती हैं, फिरती हैं तथा बड़े शौक के साथ चुम्बन देती हैं, लेकिन खेल फिर भी नहीं रुकता।

।। प्रकरण ।। २२ ।। चौपाई ।। ५३२ ।।

राग सिधूडो

ओरो आव वाला आपण घूमडले घूमिए, वाणी विविध पेरे गाऊं।
अनेक रंगे रस उपजावीने, मारा वालैया तूने वालेरी थाऊं।।१।।

हे वालाजी! मेरे साथ आओ। हम घूमने (चक्कर लगाने) की रामत खेलें और तरह तरह के गान गाएं। इस प्रकार से अनेक तरह के रस बढ़ाकर वालाजी मैं आपकी प्यारी बन जाऊं।

घोघरे घाटडे स्वर बोलाविए, बीजा अनेक स्वर छे रसाल।
झीण झीणा झीणा झीण झीनेरडा, मीठा मधुरा वली रसाल।।२।।

मीठे स्वर से गाएंगे। स्वर बदलेंगे। पहले धीमा, फिर चढ़ता, चढ़ता, चढ़ता, चढ़ता और चढ़ता, मीठी रस भरी वाणी में गाएंगे (जैसे-जैसे खेल तेज होता जाएगा, वैसे-वैसे आवाज भी बढ़ती जाएगी।)

घूमडलो घूमवानो रे वालैया, मूने छे अति घणो कोड।
साम सामा आपण थईने घूमिए, मारा वालैया आपण बांधीने होड।।३।।

हे वालाजी! मुझे घूमडलो घूमने (चक्कर खाते हुए) का बहुत उल्लास है। हे वालाजी! हम आमने-सामने आकर शर्त लगाकर घूमें।

ए रामत अमे रब्दीने रमसूं, साथ सकल तमे रेहेजो रे जोई।
हूं हारूं तो मोपर हंसजो, मारो वालोजी हारे तो हंसजो मा कोई।।४।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि यह रामत हम शर्त लगाकर खेलेंगे। हे सखियो! तुम खड़ी-खड़ी देखना। मैं हार जाऊं तो मुझ पर हंसना। यदि वालाजी हार जाएं तो हंसना नहीं।

घूमडलो वालो मोसूं घूमे छे, वचन मीठडा रे गाय।
अंग वस्तर भूखण मीठडां लागे, वचे वचे कंठडे रे वलाय।।५।।

वालाजी घूमडला मेरे साथ घूमते हैं। मीठे वचन गाते हैं, उनके अंग के वस्त्र-आभूषण अच्छे लगते हैं। बीच-बीच में गले से लिपटना भी अच्छा लगता है।

Nijanand App

पिउ हास्या हास्या कहे स्वरमां, हांसी हरखे रे उपजावे।
हूं जीती जीती कहे घोघरे, साथ सहुने हंसावे।। ६ ।।

सब साथ एक स्वर में 'पिया जी हार गए, पिया जी हार गए' कहकर बड़े उमंग से हंसती हैं। 'मैं जीती, मैं जीती' जोर के स्वर में कहकर सब सुन्दरसाथ को हंसाती हैं।

ए रे घूमडले हांसी रे साथने, रहे नहीं केमे झाली।
लडथडे पडे भोम आलोटे, हंसी हंसी पेट आवे रे खाली।। ७ ।।

इस घूमडले की हंसी सुन्दरसाथ से रोके नहीं रुकी। हंसी-हंसी में इतनी हंसीं कि धरती पर गिरकर लोट-पोट होने लगीं तथा उनके पेट में बल पड़ने लगे।

ए रामतडी जोई कहे सखियो, इंद्रावती ए राखी रेख।
साथ सहुने वाली घणूं लागी, मारा वालाजीने वली वसेख।। ८ ।।

इस रामत को देखकर सब सखियां कहती हैं कि श्री इन्द्रावतीजी ने हमारी लाज रख ली। सब सुन्दरसाथ को श्री इन्द्रावतीजी प्यारी लगीं और वालाजी को और भी अच्छी लगीं।

|| प्रकरण || २३ || चौपाई || ५४१ ||

राग वसंत

कोणियां रमिए रे मारा वाला, गाइए वचन सनेह।
मनसा वाचा करी करमना, सीखो तमने सीखवुं एह।। १ ।।

हे वालाजी! आओ, कोनियां की रामत खेलें। प्यार के वचन गाएं। मन से, वचन से और कर्म से सीखो। मैं आपको रामत सिखाती हूं।

ए रामतडी जोरावर रे, दीजे ठेक अंग वाली।
रमतां सोभा अनेक धरिए, गाइए वचन कर चाली।। २ ।।

यह खेल बड़ा जोरदार है। अंग को मोड़कर कूदना है। रामत खेलने में बड़ी शोभा होगी। हम चाल के अनुसार वचन गाएंगे।

करे रमिए कोणियां रमिए, चरण रामतडी कीजे।
वली रामतमां विलास विलसी, प्रेम तणां सुख लीजे।। ३ ।।

हाथ से खेलिए, कोहनियों से खेलिए, चरण से खेलिए, फिर खेल में अपार आनन्द का सुख लीजिए।

जुओ रे सखियो वालो कोणियां रमतां, भांत भांत अंग वाले।
सखियो रामत बीजी करी नव सके, उभली जोड निहाले।। ४ ।।

हे सखियो! देखो वालाजी कोहनियों की रामत खेलते हैं और तरह-तरह से अंग मोड़ते हैं कोई और सखी ऐसी रामत नहीं कर सकती। सब खड़ी-खड़ी इस जोड़ी को देख रही हैं।

कर मेलीने कोणियां रमिए, कोणी मेलीने करे।
अंगडा वाले नेंणा चाले, मनडां सकलनां हरे।। ५ ।।

हाथ की रामत छोड़कर कोहनियों की रामत करें। फिर कोहनियों की रामत छोड़कर हाथ की रामत करें। अंगों को मोड़ें। आंखों को घुमाकर सबके मन को मोहित करें।

Nijanand App

ए रामतना रस कहूं केटला, थाय निरतना रंग।
हस्त चरणनां भूखण सर्वे, बोले बंनेना एक बंग।। ६ ।।

इस रामत का आनन्द कितना कहूं? इसमें हाथ के, पैर के, सभी आभूषण एक साथ ऐसे बोलते हैं, जैसे नृत्य हो रहा हो।

लटके गाए ने लटके नाचे, लटके मोडे अंग।
लटके रामत रेहेस लटके, लटके सांई लिए संग।। ७ ।।

लटक के साथ में गाएंगे। लटकते हुए नाचेंगे। लचकाते हुए अंग को मोड़ेंगे। इस खेल के भाव को लटक से ही दिखाएंगे तथा लटक से ही वालाजी के साथ खेलेंगे।

मारा वालाजीमां एक गुण दीसे, जाणे रामत सीख्या सहु पेहेली।
इंद्रावतीमां बे गुण दीसे, एक चतुर ने रमता गेहेली।। ८ ।।

वालाजी में एक गुण दिखाई देता है कि वह पहली बार में ही सीखकर रामत खेल लेते हैं। श्री इन्द्रावतीजी में दो गुण दिखाई देते हैं—एक तो वह चतुर हैं, दूसरी वह मदभरी मस्ती में खेलती हैं।

।। प्रकरण ।। २४ ।। चौपाई ।। ५४९ ।।

राग कालेरो

आवो वाला रामत रासनी कीजे, आपण कंठडे बांहोंडी कां न लीजे रे।। टेक ।। १ ।।

हे वालाजी! आओ, हम रास की रामत खेलें अपन एक-दूसरे के गले में बाहें क्यों न डालकर खेलें?

आ वेख केम करी ल्याव्या रे वालैया, अमने थयो अति मोह रे।
खिण एक अमथी अलगां म थाजो, अमे नहीं खमाय विछोह रे।। २ ।।

हे वालजी! आपने ऐसा मनमोहक भेष कैसे धारण किया? हम देखकर मोहित हो रहे हैं, इसलिए अब आप एक पल के लिए भी जुदा नहीं होना, वरना हम से वियोग सहन नहीं होगा।

आ वेख अमने वालो घणु लागे, वेख रसाल अति रंग।
द्रष्ट थकी अलगां म थाजो, दीठडे ठरे सर्वा अंग।। ३ ।।

आपका यह भेष हमें बड़ा प्यारा लगता है। भेष रस भरा है। इसे देखकर सब अंग तृप्त होते हैं। इसलिए आप हमारी आंखों से ओझल नहीं होना।

आ वेख अमने गमे रे वालैया, लीधो कोई मोहन वेल रे।
नेंणे पल न आवे रे वालैया, रूप दीसे रंग रेल रे।। ४ ।।

हे वालाजी! आपने एक मोहिनी बेल की तरह जो भेष धारण किया है, वह हमें बड़ा अच्छा लग रहा है। इसे देखकर हमसे पलक भी नहीं झपकी जाती। आपका रूप आनन्द से भरपूर दीखता है।

रामत करतां रंग सहु कीजे, खिण खिण आलिंघण लीजे रे।
अधुर तणो जो रस तमे पीओ, तो अमारा मन रीझे रे।। ५ ।।

खेलने में सब प्रकार के आनन्द के साथ पल-पल में लिपटते रहें। हमारे अधरों का रस आप पिएं तो हमारा मन आप पर रीझ जाए।

Nijanand App

उलट अंग न माय रे वालैया, कीजे रंग रसाल रे।
पल एक अमथी म थाओ जुआ, रखे कंठ बांहोडी टाल रे।। ६ ।।

हे वालाजी! हमारे अंग में खुशी समाती नहीं है। आप आनन्द कीजिए तथा एक क्षण के लिए भी हमसे अलग न हों और न हमारे गले से अपनी बांह ही हटाएं।

तम सामूं अमें ज्यारे जोइए, त्यारे जोर करे मकरंद रे।
बाथो बथिया लीजे रे वालैया, एम थाय आनंद रे।। ७ ।।

हे वालाजी! जब मैं आपको देखती हूं तो मुझे काम सताता है, इसलिए आप मुझे अपने साथ चिपटा लें तो अधिक आनन्द होगा।

रामत करतां आलिंघण लीजे, ए पण मोटो रंग रे।
साथ देखतां अमृत पीजे, एम थाय उछरंग रे।। ८ ।।

खेल में लिपटाने पर अधिक आनन्द आता है। सबके सामने जब आप अधरों का रस पिएंगे तो बेहद खुशी होगी।

आलिंघण लेता अमृत पीतां, विनोद कीधां घणां हांस रे।
कठण भीडाभीड न कीजे रे वालैया, मुंझाय अमारा स्वांस रे।। ९ ।।

वालाजी लिपटाते हैं। अधरों का अमृत पीते हैं। विनोद करते हैं और हंसी करते हैं। हे वालाजी! आप जोर से न दबाएं हमारी सांस इससे रुकती है।

।। प्रकरण ।। २५ ।। चौपाई ।। ५५८ ।।

छंदनी चाल

सखी एक भांत रे, मारो वालोजी करे छे वात रे।
लई गले बाथ रे, आंणी अंग पासरे, चुमन दिए चितसूं।। १ ।।

हे सखी! वालाजी एक निराले ढंग से बात करते हैं। पास में आकर गले से चिपटा लेते हैं और चुम्बन लेते हैं।

मारा वाला मांहें कल रे, अंगे अति बल रे।
रमे घणे बल, रंग अविचल, वल्लभ अति वितसूं।। २ ।।

हमारे वालाजी में एक विचित्र युक्ति है। अंग शक्ति से भरपूर हैं। ताकत से खेलते हैं। मस्ती अमिट है। यह इन सब गुणों की खान हैं।

आ जुओ तमे स्याम, करे केवा काम।
भाजे भूसी हाम, राखे नहीं माम, हरवे घणे हितसूं।। ३ ।।

हमारे वालाजी को देखो। कैसा काम करते हैं। हमारी चाहना पूर्ण करते हैं। कोई कमी नहीं रखते। तुरन्त ही भलाई की बात करते हैं।

मारा वालासुं विलास, स्यामा करे हांस।
सूधो रंग पास, करी विस्वास, जुओ जोपे खंतसूं।। ४ ।।

हमारे वालाजी से श्यामा महारानी हंसी और विलास करती हैं। उनमें दृढ़ विश्वास है और वह मस्ती से भरी हैं। उनको तुम ध्यान से देखो।

Nijanand App

स्यामा स्याम जोड, करतां कलोल।
रमे रंग रोल, थाय झकझोल, बंने एक मतसूं।। ५ ।।

श्यामा-श्यामजी की जोड़ी किलोल कर रही है और आनन्द में मस्त है। दोनों एक ही विचार से आपस में लिपटे हैं। (लिपटे पड़े हैं)

बेहू सरखा सरूप, मेली मुख कूप।
पिए रस घूंट, अमृतनी लूट, लिए रे अनितसूं।। ६ ।।

रस के दोनों स्वरूप एक से हैं। मुख को मुख से जोड़कर रस के घूंट पीकर अमृत जैसा आनन्द लूट रहे हैं जो निश्चित है।

आलिंघण लिए, रंग रस पिए।
बंने सुख लिए, लथबथ थिए, आ भीनी स्यामा पतसूं।। ७ ।।

श्यामाजी और श्याम आपस में चिपक गए हैं। आनन्द का रस-पान कर रहे हैं। दोनों आलिंगन कर सुख ले रहे हैं। ऐसी अलमस्त श्यामाजी पति के साथ मस्त हैं।

इंद्रावती वात, सुणो तमे साथ।
जुओ अख्यात, बंने रलियात, रमतां इजतसूं।। ८ ।।

हे मेरे साथजी! तुम श्री इन्द्रावतीजी की बात सुनो और देखो। वह कहती हैं कि यह दोनों विचित्र लीला में मग्न हैं और मर्यादा के अन्दर खेल रहे हैं।

।। प्रकरण ।। २६ ।। चौपाई ।। ५६६ ।।

राग सामेरी

रामत आंबानी कीजे मारा वालैया, आवी ऊभा रहो लगतां रे।
सखियो ज्यारे बल करे, त्यारे रखे कांई तमे डगतां रे।। १ ।।

हे वालाजी! आओ, खड़े रहो। हम आम की रामत खेलें। हे वालाजी! जो सखियां आपके चरण पकड़ कर लेटी हैं, उनको जब दूसरी सखियां खीचेंगी तो आप हिलना नहीं।

तमे आंबला ना थड थाओ, अमे चरण झालीने बेसूं।
मारो आंबो दहिए दूधे सीचूं, एम केहेसूं प्रदखिणा देसूं।। २ ।।

हे वालाजी! आप आम का तना बन जाओ। हम आपके चरण पकड़ कर बैठेंगे और 'अपने आम को दूध दही से सींच रही हूं' ऐसा कहकर परिक्रमा देंगे।

केटलीक सखियो आंबलो सींचे, अमे चरण तमारे वलगां।
द्रढ करीने अमे चरण ग्रह्या, जोइए कोण करे अमने अलगां।। ३ ।।

कुछ सखियां आम को सींच रही हैं और हम तुम्हारे चरण में लिपटी हैं। हमने इतनी मजबूती के साथ चरणों को पकड़ा है। अब देखते हैं कौन अलग करता है?

बल करीने तमे ऊभा रेहेजो, खसलो तो हंससे तम पर।
जो अमे चरण ग्रही नव सकूं, तो सहु कोई हंससे अम पर।। ४ ।।

वालाजी! आप स्थिर होकर खड़े रहना। हटोगे तो हंसी आपकी होगी। यदि चरण हमसे छूट गए तो हंसी हमारी होगी।

Nijanand App

ते माटे रखे चरण चाचरो, थिर थई ऊभा रेहेजो।
जो जोर घणुं आवे तमने, त्यारे तमे अमने केहेजो।।५।।

इसलिए आप अपने चरणों को हिलने नहीं देना और स्थिरता से खड़े रहना। यदि आपको चरण खींचने से कष्ट मालूम हो तो हमें कहना।

अनेक सखियो चरणे वलगी, खसवा नहीं दीजे रे।
वालो सखियो सहुथाजो सावचेत, ओलियो ऊपर सामी हांसी कीजे।।६।।

बहुत-सी सखियां चरणों से लिपट गई और हिलने नहीं देतीं। हे वालाजी और हे सखियो! सावधान हो जाओ। हारने वाले की हंसी होगी।

जे सखी सांची थई ने वलगी, ते ता वछोडतां नव छूटे रे।
ओलियो सखियो बल करी करी थाकी, ते ता उठाडता नव उठे रे।।७।।

जो सखी सच्चे दिल से चरणों से लिपटी है, वह छुड़ाने पर भी नहीं छूटती है। दूसरी खींचने वाली सखियां ताकत लगा-लगाकर थक गईं, फिर भी उठाने पर नहीं उठतीं।

जे सखी चरणे रही नव सकी, ते पर हांसी थई अति जोर।
इंद्रावती वालो ने सखियो, दिए ताली हांसी करे सोर रे।।८।।

जो सखी चरण पकड़कर नहीं रह सकी। उसकी बड़ी जोरदार हंसी हुई। श्री इन्द्रावतीजी, वालाजी और सखियां ताली बजा-बजाकर हंस-हंसकर शोर मचाते हैं।

।। प्रकरण ।। २७ ।। चौपाई ।। ५७४ ।।

राग आसावरी

रामत उडन खाटलीनी, मारा वालाजी आपण कीजे रे।
रेत रूडी छे आणी भोमे, ठेक मृग जेम दीजे रे।।१।।

हे वालाजी! आओ, हम उडन खाटली (हिरन के समान लम्बी छलांग) की रामत खेलें। इस भूमि की रेत बड़ी अच्छी है, हम मृग की तरह छलांग लगाएं।

सखियो मनमां आनंदियो, ए रामतमां अति सुख रे।
साथ सहु रव्दीने रमसुं, मारा वालाजी सनमुख रे।।२।।

सखियों को मन में बड़ा आनन्द हुआ कि यह रामत अति सुखदाई है। मेरे वालाजी के सामने सब प्रतियोगिता से कूदेंगे।

पेहेलो ठेक दीधो मारे वाले, पछे जो जो ठेक अमारो रे।
तो मारा वचन मानजो सखियो, जो दऊं ठेक वालाजीथी सारो रे।।३।।

सबसे पहले वालाजी ने छलांग मारी। उनके पीछे मेरी छलांग देखो। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, मेरी बात मानना। मैं वालाजी से अच्छी छलांग लगाऊंगी।

जुओ रे सखियो तमे वालोजी ठेकतां, दीधी फाल अति सारी रे।
निसंक अंग संकोडीने ठेक्या, जांऊं ते हूं वलिहारी रे।।४।।

हे सखियो! देखो वालाजी छलांग लगा रहे हैं। उन्होंने अच्छी छलांग लगाई। वह अंग को सिकोड़ कर कूदे। मैं उन पर बलिहारी होती हूं।

Nijanand App

हांऊ हांऊ रे सखियो तमे ठेक वखाण्यो, ए तो दीधो लडसडतां रे।
एवा तो ठेक अमे सहु कोई देतां, सेहेजे रामत करतां रे।।५।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, अरे-अरे! सखियो! तुम वालाजी की छलांग की तारीफ करती हो। इन्होंने तो लड़खड़ाती हुई छलांग लगाई है। ऐसी छलांग तो हम सब साधारण खेल में ही लगा लेते हैं।

रहो रहो रे सखियो तमे ठेक वखाण्यो, हवे जो जो अमारो ठेक रे।
एत्री तो फाल साथे केटलीक दीधी, तूं तो मोही उडाडतां रेत रे।।६।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे सखियो! रुको, तुमने वालाजी की छलांग की प्रशंसा की है। अब हमारी छलांग भी देखो। ऐसी छलांगें तो सुन्दरसाथ ने कितनी ही कूद डाली हैं। तुम तो सिर्फ रेत उड़ाने में ही मोहित हो गईं।

कोणे हंसिए कोणे वखाणिए, ए रामत थई अति रंग रे।
एणी विधे दीधां अमे ठेक, मारा वालाजीने संग रे।।७।।

किसकी हंसी और किसकी प्रशंसा करें? यह खेल तो अति अच्छा हुआ। इस तरह की छलांग वालाजी के साथ मैंने भी लगाई।

ए रामतडी जोई करीने, हवे निरतनी रामत कीजे रे।
रूडी रामत इंद्रावती केरी, जेमां साथ वालो मन रीझे रे।।८।।

इस रामत को देखकर, चलो, अब नृत्य की रामत करें। जिसमें श्री इन्द्रावतीजी की अच्छी रामत देखकर सुन्दरसाथ और वालाजी भी रीझ जाएं।

।। प्रकरण ।। २८ ।। चौपाई ।। ५८२ ।।

राग कल्याण

वाला तमे निरत करो मारा नाहोजी रे, अमने जोयानी खांत।
साथ जोई आनंदियो रे, कांई वेख देखी एक भांत।।१।।

हे प्राण-वल्लभ! अब आप नृत्य करें तो हमें देखने की इच्छा है। आपका विशेष भेष देखकर सब साथ खुश हो रहे हैं।

तमे निरत करो रे भामनी, निरत रूडी थाय नार।
तमे वचन गाओ प्रेमना, पासे स्वर पूरूं रसाल।।२।।

वालाजी कहते हैं, हे सखियो! स्त्रियां नाच अच्छा नाचती हैं। इसलिए आप नाचो। तुम प्रेम भरे गीत गाओ। मैं तुम्हारे साथ मधुर स्वर मिलाऊंगा।

सुणो सुन्दर वल्लभजी मारा, निरत केणी पेरे थाय।
अमने देखाडो आयत करी, कांई उलट अंग न माय।।३।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, मेरे प्राण-वल्लभ! सुनो, हम चाहती हैं कि आप पहले बताओ नाचा कैसे जाता है? हमारी खुशी अंग में समाती नहीं है।

जेणी सनंधे पांउ भरो, अने अंग वालो नरम।
भमरी फरो जेणी भांतसुं, अमे नाचूं फरूं तेम।।४।।

जिस तरह से आप पैर चलाएंगे, अंग को मोड़ेंगे, भमरी (भंवर) फिरेंगे। हम भी देखकर वैसे ही नाचेंगी और उसी तरह फिरेंगी।

Nijanand App

हस्त करी देखाडिए, अने ठमके दीजे पाय।
वचन गाइए प्रेमनां, कांई तेना अरथज थाय।। ५ ।।

हाथ चलाकर दिखाइए। आप पैरों से ठुमका लगाकर बताइए। प्रेम वाले ऐसे गीत गाइए जिनका कुछ अर्थ हो।

कंठ करीने राग अलापिए, कांई स्वर पूरे सकल साथ।
वेण वेणा रबाब सों, कांई ताल बाजे पखाज।। ६ ।।

अपने गले से राग अलापिए। हम सब साथ स्वर पूरा करेंगे—बांसुरी, वीणा, सारंगी, ताल और पखावज सब बाजे बजेंगे।

करताल मां बाजे झरमरी, कांई श्रीमंडल हाथ।
चंग तंबूरे रंग मले, वालो नाचे सकल साथ।। ७ ।।

करताल में झांझरी बजेगी। हाथ से श्रीमण्डल बजेगा। मृदंग और तानपूरा स्वर मिलायेंगे तथा सब साथ नाचेगा।

भूखण बाजे भली भांतसूं, धरती करे धमकार।
सब्द उठे सोहांमणा, उछरंग वाध्यो अपार।। ८ ।।

नृत्य में आभूषण बजते हैं। धरती में धमक उठती है। सुहावने स्वर उठते हैं। इस प्रकार से बहुत आनन्द बढ़ा है।

निरत करी नरम अंगसूं, कांई फेरी फरया एक पाय।
छेक वाले छेलाईसूं, तत्ता थेई थेई थाय।। ९ ।।

वालाजी नरम अंग से, एक पांव पर नाचे। चतुराई से पैर से ठेका देते हैं, तो 'तत्ता थेई तत्ता थेई' का स्वर गूंजता है।

एक पोहोर आनन्द भरी, कांई रंग भर रमिया एह।
साथ सकल मां वालेजी ए, रमतां कीधां सनेह।। १० ।।

एक प्रहर तक आनन्दपूर्ण नृत्य का खेल खेला गया। वालाजी ने नृत्य करके सुन्दरसाथ में प्रेम बढ़ाया।

आनंद घणो इंद्रावती, वालाजीने लागे पाए।
अवसर छे कांई अति घणो, वाला रासनी रामत मांहें।। ११ ।।

श्री इन्द्रावतीजी बहुत खुश होकर वालाजी के चरणों में प्रणाम करती हैं और कहती हैं, हे वालाजी! रास की रामत खेलने का यह बड़ा अच्छा मौका है।

ते सर्वे चित धरी, अमसूं रमो अति रंग।
कहे इंद्रावती साथने, रमवानी घणी उमंग।। १२ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि आपने जो नाचने का ढंग सिखाया है, वह हमने सीख लिया है। हमारी बड़ी इच्छा है कि अब आप हमारे साथ नाचो।

।। प्रकरण ।। २९ ।। चौपाई ।। ५९४ ।।

चरचरी छंद

मृदंग चंग, तंबूर रंग, अति उमंग, गावती सखी स्वर करी।। १ ।।

मृदंग, चंग, तंबूरा के स्वर के साथ उमंग दिल में भरकर सखियां आनन्द के साथ गाती हैं।

Nijanand App

करताल ताल बाजे विसाल, वेण रसाल, रमत रास सुन्दरी॥ २ ॥

करताल में ताल बजती है। बांसुरी मीठी बजती है। ऐसे में श्री इन्द्रावतीजी रास खेल रही हैं।

नार सिणगार, भूखण सार, संग आधार, निरत करे सनंधरी॥ ३ ॥

श्री इन्द्रावतीजी ने श्रृंगार सजाया। अच्छे आभूषण पहन कर वालाजी के साथ सुन्दर ढंग से नृत्य करती हैं।

घमझणाझण, जोडरणारण, बिछुडाठणाठण, छेकवाले फेरी फरी॥ ४ ॥

पैर के पटकने से झनकार उठती है और आभूषणों के टकराव से रणकार उठती है। पैर के बिछुओं से ठन-ठन का स्वर उठता है। इस प्रकार श्री इन्द्रावतीजी घूम-घूमकर कूदती हैं।

वचन गाए, हस्तक थाए, भाव संधाए, देखाडे वालो खंत करी॥ ५ ॥

गीत गाती हैं। ताली बजाती हैं। भाव दिखाती हैं और वालाजी को रिझाती हैं।

हांस विलास, सकल साथ, लेत बाथ, मध्य रामत हेत करी॥ ६ ॥

सब सखियां नृत्य की रामत में बड़े आनन्द के साथ हंसती हुई वालाजी से लिपट जाती हैं।

वेख वसेख, राखी रेख, सुख लेत, वाहंत मुखे वांसरी॥ ७ ॥

श्री इन्द्रावतीजी का भेष मनमोहक है। उन्होंने नृत्य करके सब सखियों की लाज बचाई है। वह रस भरी बांसुरी अपने मुख से बजाकर आनन्द लेती हैं।

धमके धारुणी, गाजती गारुणी, चांदनी रैणी, जोत करे जामंत री॥ ८ ॥

धरती में धमक उठती है। आसमान गरजता है। चांदनी रात की चांदनी चमाचम चमक रही है।

रंग वनमां, सोभित जमुना, पसु पंखीना, सब्द रंगे थंत री॥ ९ ॥

वन में आनन्द छाया है। यमुनाजी शोभायमान हैं। पशु-पक्षियों की आवाज हो रही है।

पसु पंखी, जुए जंखी, मिले न अंखी, सुख देखी रामत री॥ १० ॥

ऐसे सुख की रामत देखकर पशु-पक्षियों की भी पलक नहीं झपकती। वे एकटक होकर आनन्द से देख रहे हैं।

निरत करे, खंत खरे, फेरी फरे, इंद्रावती एक भांत री॥ ११ ॥

श्री इन्द्रावतीजी दृढ़ विश्वास के साथ घूमती हैं तथा विशेष प्रकार का नृत्य करती हैं।

वालती छेक, अंग वसेक, रंग लेत, छबके चुमन देत री॥ १२ ॥

श्री इन्द्रावतीजी कूदती हैं। विशेष ढंग से अंग को मोड़ती हैं तथा चुम्बन देकर आनन्द लेती हैं।

॥ प्रकरण ॥ ३० ॥ चौपाई ॥ ६०६ ॥

राग कालेरो

हमचडी सखी संग रे।
आपण रमसुं नवले रंग, सखी रे हमचडी॥ टेक॥

Nijanand App

रामतडी छे अति घणी, करसुं सघली सार रे।
विविध पेरे सुख दऊं रे सखियो, जेम तमे पामो करार।। १ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि अब मन में बड़ी उमंग है, इसलिए हम नए ढंग से खेलेंगे। यह खेल अच्छा है। हम सब मिलकर खेलेंगे। तरह-तरह से सुख दूंगी, जिससे आपको आराम मिले।

अमने वेण वजाडी देखाडो, जेवो पेहेलो वायो रसाल रे।
वेण सांभलतां ततखिण वालैया, अमे जीव नाख्या तत्काल।। २ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि हमको वैसे ही बांसुरी बजाकर दिखाओ जैसे पहले बजाई थी, जिसे सुनकर हमने तुरन्त अपने तन छोड़ दिए थे।

जुओ रे सखियो वालो वेण वजाडे, अधुर धरी अति रंग।
वेण सांभलतां ततखिण तमने, काम वाध्यो सर्वा अंग रे।। ३ ।।

हे सखियो! देखो, वालाजी अधर पर रखकर बांसुरी बजाते हैं। इसको सुनकर तुम्हारे अंगों में पिया मिलन की तड़प जागृत हो उठी थी।

सुणो रे सखियो हूं वेण वजाडुं, वेण तणी सुणो वाणी।
खिण एक पासेथी अलगा न करूं, राखूं हैडामां आणी।। ४ ।।

वालाजी कहते हैं, हे सखियो! मैं बांसुरी बजाता हूं। तुम बांसुरी की आवाज को सुनो। एक पल भर के लिए भी मैं तुमको अपने से अलग नहीं करूंगा। तुमको मैंने अपने हृदय में बैठा रखा है।

उलट तमने अति घणो वाध्यो, वली रंग उपजावुं निरधार।
जेटली रामत कहो रे सखियो, ते रमाडूं आवार।। ५ ।।

तुमको बहुत उमंग उठी है। उससे भी अधिक मैं आनन्द उपजाऊंगा। फिर जितनी रामत कहोगी उतनी ही रामत खिलाऊंगा।

मान घणो मानवंतियोने, तामसियो झुंझार।
प्रेम घणो अंग आ संगे, एणे विरह नहीं लगार।। ६ ।।

सब सखियों में मान बढ़ गया है। तामसियों में अभिमान बढ़ गया है। उन्होंने धनी का केवल प्यार ही देखा है। वियोग का दुःख जरा भी नहीं देखा।

तामस मांहें तामसियो, एणी वातडी कहीं न जाय।
कहे इंद्रावती सुणो रे साथजी, वाले एम कीधां अंतराय।। ७ ।।

तामसी सखी अभिमान में हैं। उनकी बात कही ही नहीं जाती। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि उनका यह अहंकार भंग करने के लिए ही वालाजी अन्तर्ध्यान हुए।

|| प्रकरण || ३१ || चौपाई || ६१३ ||

Nijanand App

रामत अतरध्याननी

वृंदावनमां रामत करतां, जुजवो थयो सर्व साथ।
वली आवी ततखिण एक ठामे, नव दीसे ते प्राणनो नाथ।।
मारो जीव जीवनजी, लई गया हो स्याम।। १ ।।

वृन्दावन में रास की रामत करते-करते सब सखियां अलग-अलग हो गईं। फिर जब दुबारा एक स्थान पर एकत्र हुई तब वहां वालाजी दिखाई नहीं दिए। वह कहती हैं, हमारे जीव के जीवन को श्यामजी हर ले गए हैं।

काया केम चाले तेह रे, कालजडूं कांपे जेह रे।
ऊभी केम रहे देह, बांध्या जे मूल सनेह।।
त्राटकडे दीधा छेह, मारो जीव जीवनजी लई गया हो स्याम।। २ ।।

कलेजा कांप रहा है। शरीर चलता नहीं। जिससे प्रेम बढ़ा था उसके बिना शरीर कैसे खड़ा रहे? घास के टुकड़े को जैसे तोड़कर फेंक देते हैं, वैसे ही हमको छोड़कर हमारे प्राण श्यामजी ले गए हैं।

सखियो मलीने विचारज कीधो, पूछिए स्यामाजी किहांछे स्याम।
रामतनों रंग हमणां वाध्यो, मन मांहें हुती मोटी हाम।। ३ ।।

सखियों ने मिलकर विचार किया। चलो श्यामाजी से पूछें कि श्यामजी कहां हैं? अभी-अभी तो खेल का आनन्द बढ़ा ही था और मन में बड़ी-बड़ी इच्छाएं थीं।

साथ मांहोंमांहें खोलतां, नव दीसे स्यामाजी त्यांहें।
त्यारे जुजवी दोडी जोवा वनमां, ए बंने सिधाव्यां क्यांहें।। ४ ।।

सब सखियों ने अपने बीच में ढूंढ़ा तो वहां श्यामाजी भी नहीं मिलीं। तब सभी वन में अलग-अलग खोज करने दौड़ीं कि यह दोनों (श्यामा-श्यामजी) कहां गए?

जोवंता जुजवा वनमां, स्यामाजी लाध्या एक ठाम।
स्यामाजी स्याम किहां छे, मारूं अंग पीडे अति काम।। ५ ।।

अलग-अलग वन में खोजते समय श्री श्यामाजी को एक स्थान पर पाया। श्यामाजी सें पूछने लगीं कि श्यामजी कहां हैं? उनसे मिलने की तड़प हमें पीड़ित कर रही है।

साथ स्यामाजीने देखी करी, मनडां थयां अति भंग।
स्यामाजी तिहां बोली न सके, जेमां एवडो हुतो उछरंग।। ६ ।।

श्यामाजी के मन में अति उमंग थी। अब वह नहीं है। श्यामाजी की ऐसी हालत देखकर सखियों का मन टूट गया।

घडी एक रहीने स्यामाजी बोल्या, आपणने मूक्यां निरधार।
दोष दीठो जो आपणो, तो वनमां मूक्यां आधार।। ७ ।।

थोड़ी देर बाद श्री श्यामाजी बोलीं कि निश्चय ही वालाजी हमें छोड़ गए हैं। हमारे अन्दर कुछ गलती देखी होगी, इसीलिए वालाजी ने हमें वन में छोड़ दिया।

वचन सांभलतां स्यामाजी केरा, खिण नव लागी वार।
जे जेम आवी दोडती, ते ता पाछी पडियो तत्काल।। ८ ।।

श्यामाजी के ऐसे वचन सुनकर सखियां जैसी दौड़ी-दौड़ी आती हैं, तुरन्त गिरती जाती हैं।

Nijanand App

तेमां केटलीक सखियो ऊभी रही, उठाडे सर्वे साथ।
आपणने केम मूकसे, मारा प्राणतणो जे नाथ।। ९ ।।

उनमें से कुछ सखियां खड़ी रहीं। बाकी गिरी हुई को उठाती हैं तथा कहती हैं कि हमारे प्राणवल्लभ हमें कैसे छोड़ेंगे?

सखियो वृंदावन आपण खोलिए, इहांज होसे आधार।
जीवतणो जीवन छे, ते ता नहीं रे मूके निरधार।। १० ।।

चलो सखी हम वृन्दावन में खोजें। वालाजी यहीं होंगे। वह हमारे प्राणों के आधार हैं। वह निश्चय ही हमें नहीं छोड़ेंगे।

सखी ए रे आपणने मूकी गयो, एणे दया नहीं रे लगार।
हवे आंहीं थकी केम उठिए, मारा जीवन विना आधार।। ११ ।।

गिरी हुई सखियां कहती हैं कि वालाजी हमें छोड़ गए हैं। लगता है इनके दिल में जरा भी दया नहीं है। हम अपने वालाजी के बिना यहां से कैसे उठें?

सखी केही रे सनंधे चालिए, मारा लई गयो ए प्राण।
सखियो अमने सूं रे कहो छो, अमे नहीं रे अवाय निरवाण।। १२ ।।

हे सखी! किस तरह से चलें? वह तो हमारे प्राण ही ले गए हैं। तुम हमसे क्या कहती हो, हमसे बिलकुल आया नहीं जाता।

मारो जीव कलकले आकलो, अने काया थरके अंग।
कहो जी अवगुण अमतणां, जे कीधां रंगमां भंग।। १३ ।।

मेरा जीव विरह में व्याकुल होकर रो रहा है और शरीर कांप रहा है। हे सखी! हमारे अवगुण तो बताओ कि जो ऐसे आनन्द को तोड़ दिया है?

सखी दोष हसे जो आपणो, तो वाले कीधूं एम।
चित ऊपर जो चालतां, आपण केहेता करतो तेम।। १४ ।।

खड़ी हुई सखियां उत्तर देती हैं, हे सखी! अपने अन्दर अवश्य कोई गलती होगी। तभी तो वालाजी ने ऐसा किया है, उनकी इच्छानुसार हम चलते तो वह भी हमारे कहने के अनुसार करते।

हाय हाय रे दैव तें सूं करयूं, केम रहे रे कायामां प्राण।
जीवनजी मूकी गया, नव कीधूं ते अमने जाण।। १५ ।।

हाय हाय रे दैव! (विधाता) तुमने यह क्या किया? हमारे तन में प्राण कैसे रहें? हमारे वालाजी हमें छोड़ गए हैं और तुमने हमें सूचित ही नहीं किया?

हाय हाय रे विधाता पापनी, तें कां रे लख्यां एवां करम।
दैवतणी तूंने बीक नहीं, जे तें एवडो कीधो अधरम।। १६ ।।

हाय हाय रे पापी विधाता! तूने हमारे भाग्य में ऐसा क्यों लिखा? तुझे परमात्मा का जरा भी डर नहीं है। जो तूने ऐसा गलत काम किया?

हाय हाय रे दैव तूंने सूं कहूं, तें वारी नहीं विधाता।
एणी पापनिए एम केम लख्यूं, वालो मूकसे कलकलतां।। १७ ।।

हाय हाय रे परमात्मा! तूने क्या किया? तूने विधाता को रोका नहीं? इस पापी ने हमारे भाग्य में ऐसा क्यों लिखा कि वालाजी हमें बिलखता हुआ छोड़ जाएंगे।

Nijanand App

सखी गाल दऊं हूं दैवने, के दऊं विधाता पापिष्ट।
एणे लेख अमारा एम केम लख्या, एणे दया नहीं ए दुष्ट।। १८ ।।

हे सखी! मैं परमात्मा को गाली दूं या पापी विधाता को? उस दुष्ट ने हमारे भाग्य में ऐसा क्यों लिखा? इसे दया नहीं आई।

सखी दैव विधाता सूं करे, एम रे थैयो तमे कांए।
दोष दीजे कांई आपणो, जे चूक्या सेवा मांहें।। १९ ।।

हे सखी! परमात्मा और विधाता क्या करें? तुम्हें क्या हो गया? अपने अवगुणों को देखो। जिससे हमसे सेवा में भूल हुई है।

सखी सेवा चूक्या हसूं आपण, पण वालो करे एम केम।
आपण ने एम रोवंतां, वालो मूकी गया छे जेम।। २० ।।

हे सखी! माना हमसे सेवा में भूल हुई, पर वालाजी ने ऐसा क्यों किया कि हमें रोता हुआ छोड़कर चले गए।

सखी चूक्या हसूं घणूं आपण, हवे लागी कालजडे झाल।
फिट फिट भूंडा पापिया, तूं हजिए न आव्यो काल।। २१ ।।

सखी! हमसे बहुत गलतियां हुई होंगी, अब तो कलेजे में आग लगी है। धिक्कार है। हे पापी काल! (मौत) तू अभी तक आया क्यों नहीं?

एम रे सखियो तमे कां करो, बेहेनी दृढ करो कां न मन।
आपण ने मूके नहीं, जेहेनूं नाम श्रीकृष्ण।। २२ ।।

हे सखियो! तुम ऐसा क्यों करती हो? मन में दृढ़ता रखो। जिनका नाम श्री कृष्ण है वह निश्चय ही हमें नहीं छोड़ेंगे।

सखी जोइए आपण वनमां, एम रे थैयो तमे कांए।
जेनूं नाम श्रीकृष्णजी, ते बेठा छे आपण मांहें।। २३ ।।

चलो सखी, हम वन में खोजें। तुम ऐसी क्यों हो गई हो? जिनका नाम श्री कृष्ण है वह अपने बीच में ही बैठे हैं।

सुंदरबाई कहे साथने, सखी एम रे थैयो तमे कांए।
केड बांधो तमे कामिनी, आपण जोइए वृंदावन मांहें।। २४ ।।

सुन्दरबाई कहती हैं कि हे सखियो! तुम ऐसी क्यों हो गई हो? कमर बांधो (उठो)। चलो वृन्दावन में देखें।

वन वन करीने खोलिए, वालो बेठा हसे जांहें।
आपणने मूकी करी, जीवनजी ते जासे क्यांहें।। २५ ।।

वन में जगह-जगह जाकर ढूढ़ें। वालाजी यहीं बैठे होंगे। वालाजी हमें छोड़कर कहां जाएंगे?

एक पडे एक लडथडे, एक आंसूडा ढाले अपार।
केम चाले काया बापडी, मारा जीवन विना आधार।। २६ ।।

एक पड़ी है, एक तड़प रही है, एक आंसू बहा रही है और कहती है कि शरीर प्राणों (वालाजी) के बिना कैसे चलें?

Nijanand App

कठण वेला मूने जाय रे बेहेनी, जेम रे निसरतां प्राण
काया एम थरहरे, अमें नहीं रे गोताय निरवाण।। २७ ।।

प्राण निकलते समय जैसा कष्ट होता है, हे बहन! वैसा ही हमें अनुभव हो रहा है। शरीर हमारा कांप रहा है। हम खोजने (वालजी को) नहीं जा सकते।

एम रे सखियो तमे कां करो, ए छे आपणो आधार।
नेहेचे आपणने नहीं रे मूके, तमे जीवसूं करो रे करार।। २८ ।।

सखी कह रही है कि वालाजी तो अपने आधार हैं। तुम ऐसा क्यों करती हो? हौसला रखो। वह हमें नहीं छोड़ेंगे।

विकल थई पूछे वेलडीने, सखी क्यांहें रे दीठा तमे स्याम।
जीव अमारा लई गया, मननी न पोहोंती हाम।। २९ ।।

व्याकुल होकर सखियां बेलों से पूछती हैं कि तुमने हमारे श्याम को कहीं देखा है? श्याम हमारे जीव को ले गए हैं। हमारी कामनाएं अभी पूर्ण नहीं हुई हैं।

ए हँसे छे आपण ऊपर, जो न देखे आपणमां सनेह।
जुओ वीटी रही छे वरने, अधखिण न मूके एह।। ३० ।।

हे सखी! देखो तो, यह बेल भी हमारे ऊपर हंस रही है कि हमारे अन्दर वालाजी के लिए प्रेम नहीं रहा। देखो तो, यह अपने पति (पेड़) से कैसे लिपटी है। आधे पल के लिए भी नहीं छोड़ती।

जुओ रे वलाका एहना, अंगोंअंग वाल्या छे बंध।
तो हँसे छे आपण ऊपर, आपण कीधी न एह सनंध।। ३१ ।।

इसकी लपेट को देखो कि सारे पेड़ में कैसे बन्ध बांधे हैं। तभी तो यह हमारे ऊपर हंस रही है कि हमने ऐसा बन्धन नहीं बांधा।

आ वचन बोले वेलडी, सखी मांहोंमांहें करे विचार।
ए खबर न दिए कोणे कामनी, पोते राची रही भरतार।। ३२ ।।

हे सखी! आपस में विचार तो करें। यह बेल क्या बोल रही है? यह किसी से बात भी नहीं करती और अपने पति (पेड़) से ही लिपटी रहती है।

वन गेहेवर अमें जोइयूं, आगल तो दीसे अंधार।
हवे ते किहां अमे जोइए, मूने सुध नहीं अंग सार।। ३३ ।।

हमने घने से घने वन को खोज लिया है और आगे तो कुछ दीखता ही नहीं है। (कोई जगह शेष नहीं रही) अब हम कहां देखने जाएं? हमें तो खबर ही नहीं लगती।

सखी पगलां जुए प्रीतम तणां, साथ खोले वृंदावन।
नेहेचे आपण ने मूकी गयो, हजी पिंडडा न थाय पतन।। ३४ ।।

सखियां वालाजी के पांव के निशान देख-देखकर वृन्दावन में खोजती हैं और कहती हैं कि निश्चय ही वालाजी हमें छोड़ गए हैं। अब यह शरीर नष्ट क्यों नहीं हो जाता?

Nijanand App

सखी नेहेचल नेहडा आपणां, त्रूटे नहीं केमे तेह।
आणे अंगे मलसूं प्रीतम, सखी आस न छूटे एह।। ३५ ।।

हे सखी! अपना प्रेम अखण्ड है। यह किसी तरह टूट नहीं सकता। वह कहती है कि जब तक इस तन से वालाजी से मिल नहीं लेती तब तक आशा नहीं छूटती।

हाय हाय रे बेहेनी हूं सूं करूं, मूने भोम न दिए विहार।
संधान सर्वे जुआ थया, ए रेहेसे केम आकार।। ३६ ।।

हाय हाय सखी! मैं क्या करूं? यह धरती फट क्यों नहीं जाती? हमारे शरीर के जोड़ अलग-अलग हो गए हैं। यह हमारा शरीर अब कैसे रहेगा?

कलकले मांहें कालजू, चाली न सके देह।
प्राण जीवनजी लई गया, जे बांध्या मूल सनेह।। ३७ ।।

मेरा हृदय फटा जा रहा है। शरीर चलता नहीं है। जिनसे मूल सम्बन्ध था वह वालाजी प्राण लेकर चले गए हैं।

तेमां केटलीक सखियो ऊभी रही, मांहोंमांहें करे विचार।
कलकलतां केम मूकसे, कांई आपणने आधार।। ३८ ।।

उनमें कुछ सखियां खड़ी रहीं और आपस में विचार करती हैं कि अपने आधार वालाजी हमें बिलखता कैसे छोड़ेंगे?

आंझो आवे मूने धणीतणो, एम वालोजी करसे केम।
वली रामतडी कीजिए, आपण पेहेली करतां जेम।। ३९ ।।

मुझे वालाजी पर पूरा विश्वास है। वालाजी ऐसा कैसे करेंगे? हम जैसे पहले खेलते थे चलो फिर से वैसे ही खेलें।

केम रे रामतडी कीजिए, काया केम रे चाले विना जिउ।
रामतडी केम थाएसे, उठाय नहीं विना पिउ।। ४० ।।

सखियां कहती हैं कि बिना प्राण के शरीर कैसे चलें और खेल कैसे खेलें? बिना प्रीतम के उठा नहीं जाता तो खेल कैसे होगा?

एम रे सखियो तमे कां करो, ए छे आपणो आधार।
मूल रामतडी कीजिए, ए नहीं रे मूके निरधार।। ४१ ।।

हे सखियो! वह तो अपने प्रीतम हैं। तुम ऐसा क्यों करती हो? चलो, पहले वाले (ब्रज के) खेल खेलें। यह (वालाजी) निश्चय ही हमें नहीं छोड़ेंगे।

साथ कहे छे अमने रे बेहेनी, इंद्रावती कहो छो सूं।
आणे नेंणे न देखूं वालैयो, तिहां लगे केम करी उठूं।। ४२ ।।

सखियां कहती हैं कि हे बहन श्री इन्द्रावतीजी! तुम हमसे क्या कहती हो? जब तक अपनी आंखों से वालाजी को देख नहीं लेतीं तब तक कैसे उठें?

Nijanand App

एणे समे इंद्रावतीबाई ए, तामसियो भेली करी।
पड़े राजसियो स्वांतसियो, करे ऊभियो, अंक भरी।। ४३ ।।

उस समय श्री इन्द्रावतीजी ने तामसी सखियों को एकत्र किया और पड़ी हुई राजसी, स्वांतसी सखियों को कोहली (अंक भरकर) भर-भरकर उठाया।

आंझो आणो तमे धणी तणो, हाकली चित करो ठाम।
रामत करतां आवसे, सुन्दरबाई झाले बांहें।। ४४ ।।

तामसी सखी कहती है कि धनी पर विश्वास रखो। डांवाडोल मन को स्थिर करो। सुन्दरबाई बांह पकड़कर कहती है कि वालाजी लीला करने में आएंगे।

मांहोंमांहें विनोद घणो, उठो रामत कीजे रंग।
तरत वालोजी आवसे, आपण जेना अंग।। ४५ ।।

हे सखी! उठो और आपस में हर्ष उल्लास के साथ रामत करो। हम जिन वालाजी के अंग हैं, वह तुरन्त आ जाएंगे।

लीला कीधी जे वालैए, आपण लीजे तेहेना वेख।
अग्यारे वरस लगे जे रम्या, कांई रामत एह वसेख।। ४६ ।।

ग्यारह वर्ष तक ब्रज में वालाजी ने जो रामत की, वही भेष बनाकर हम सब खेल खेलें।

।। प्रकरण ।। ३२ ।। चौपाई ।। ६५९ ।।

राग सामेरी

आनन्दे रोतां रमिए एम, जेने कहिए ते लछण प्रेम।
तेना उडी गया सर्वे नेम, रमतां कीधां कई चेहेन।। १ ।।

सखियों के मन में वालाजी के वियोग का दुःख है और रामत करने का प्रेम दिखाती हैं, इसलिए इसको आनन्द और रुदन दोनों भाव से प्रेम दर्शाया है। रामत में उनके सब नियम भंग हो गए और कई तरह के स्वांग किए।

सखी प्रेम ध्वजा केहेवाय, जेनूं प्रगट नाम कुली मांहें।
ए तो प्रेम तणां जे पात्र, आपणथी अलगो न थाय खिण मात्र।। २ ।।

सखियां ही कलियुग में प्रेम की स्वरूप होंगी। वालाजी प्रेम के पात्र हैं जो हमसे पलमात्र के लिए भी अलग नहीं होंगे।

ए अलगो थाय केम, आपण कहूं करे वालो तेम।
अमे आतम सखियो एक, रमतां दीसे अनेक।। ३ ।।

यह हमसे अलग कैसे होंगे? हम जैसा कहेंगे, वालाजी वैसा ही करेंगे। हम सब सखियों की आत्मा एक है। खेल में हम अनेक दीख रहे हैं।

अमे परसपर कीधां परियाण, सखियो ते सर्वे सुजाण।
आपण लीधा वेख अनेक, जे कीधां वालैए वसेक।। ४ ।।

हमने आपस में सलाह की कि सखियां तो सब जानती ही हैं कि वालाजी ने ब्रज में क्या-क्या खेल खेले। इसलिए उस लीला के विभिन्न भेष बनावें।

Nijanand App

आपणमां थई वेख एक स्याम, जेंणे निरखे पोहोंचे मन काम।
वली थई वेख एक नंद, ते कान्हजी लडावे उछरंग।। ५ ।।

हम में से एक सखी श्याम बने, जिनको देखकर मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। फिर एक सखी नन्द बने जो उमंग से कन्हैया से लाड लड़ाते हैं।

सखी वेख पूतना नार, भर जोवन आवी सिणगार।
विख भरयां तेना अस्थन, आवी धवरावे कपटे मन।। ६ ।।

एक सखी पूतना का भेष धारण करती है। श्रृंगार करके जो युवती (पूतना) बनकर आती है, उसके स्तनों में विष लगा है और मन में कपट रखकर दूध पिलाती है।

चेहेन कीधां ने पामी मृत, विख वालाने थयूं अमृत।
सोसी लीधी पूतना नार, गोकुलमां ते जय जयकार।। ७ ।।

ऐसा नाटक करके पूतना ने मृत्यु प्राप्त की। वालाजी को विष अमृत तुल्य हो गया। उन्होंने पूतना के प्राण खींच लिए। पूरे गोकुल में जय-जयकार होने लगी।

वेख लीधां सखियो विचारी, दैत लीधां ते सह्रु संघारी।
अंग आडो दीधो कै वार, वृज लोक ते सकल करार।। ८ ।।

कुछ सखियों ने राक्षस का भेष धारण किया। उनका वालाजी ने संहार किया। ब्रज में इस प्रकार की लीला में कई बार वालाजी को कष्ट उठाने पड़े, जिससे ब्रज वालों को शान्ति मिली।

एक जाणे जसोदा होय, कान्हजी माखण मांगे रोय।
उहां दूध चूल्हे उभराय, मातानूं मन कलपाय।। ९ ।।

एक सखी यशोदाजी बनी, जिससे कन्हैयाजी रो-रोकर माखन मांगते हैं। यशोदाजी देखती हैं कि चूल्हे पर रखे दूध में उफान आ रहा है, तो माताजी का मन दुःखता है।

कान्हें छेडो ग्रह्यो उजातां, जसोदाजी थयां रीसे रातां।
कान्ह कहे माखण आपो पेहेलूं, त्यारे जाणे लाग्युं माताने गेहेलूं।। १० ।।

कन्हैयाजी ने भागती यशोदा मैया का पल्ला पकड़ लिया तो यशोदाजी क्रोधित हो गईं। कन्हैयाजी कहते हैं कि पहले मुझे माखन दो। तब यशोदाजी को ऐसा लगा कि कन्हैया पागल हो गया है क्या?

जोरे छेडो लीधो तत्काल, नसो चढावी निलाट।
जसोदाजी गया उजाई, आगल दूध गयूं उभराई।। ११ ।।

यशोदाजी ने गुस्से में आकर पल्ला छुड़ाया। जब तक यशोदाजी दौड़कर पहुंचती हैं। इतने में दूध उबल कर फैल गया।

कान्हजीने रीस अति थई, पेहेलू माखण दई न गई।
ते ता झाली न रही रीस, घोलीना कीधां कटका वीस।। १२ ।।

इधर कन्हैयाजी को इतना गुस्सा आ गया कि पहले मुझे माखन क्यों नहीं दिया, तो उन्होंने गुस्से में आकर मटकी तोड़ डाली और बीस टुकड़े कर दिए।

Nijanand App

तिहां दोडीने आवी मात, देखी कान्हूडानो उतपात।
दामणूं लीधूं जसोदाए, कान्हजी पाखल पलाए।। १३ ।।

कन्हैयाजी की ऐसी शरारत देखकर माता दौड़कर आई और हाथ में रस्सी लेकर कन्हैयाजी के पीछे भागने लगीं।

आगल कान्हजी उजाय, जसोदाजी ते वांसे धाय।
माताने श्रम अति थयो, तिहां कान्हजी ऊभो थई रह्यो।। १४ ।।

आगे-आगे कन्हैयाजी भाग रहे हैं, पीछे यशोदाजी भाग रही हैं। माताजी थक गईं तो कन्हैयाजी खड़े हो गए।

कट दामणिए न बंधाय, तसू चार ते ओछूं थाय।
वली दामणूं बीजूं लिए, गांठों अनेक विधे दिए।। १५ ।।

कन्हैयाजी की कमर रस्सी से बंधती नहीं है। रस्सी चार अंगुल छोटी हो जाती है। फिर यशोदाजी ने दूसरी रस्सी लेकर गांठ लगाई।

एम लीधां दामणां अपार, तसू घटे ते चारना चार।
वली देखी मातानूं श्रम, कान्हें मूक्या दामणां नरम।। १६ ।।

इस प्रकार अनेक रस्सियां जोड़ीं फिर भी चार अंगुल जगह बची। जब यशोदाजी थक गईं तो कन्हैयाजी ने रस्सी ढीली कर दी।

त्यारे एक दामणें बेहू हाथ, बांधी कट ऊखल संघात।
एवो बांध्यो दामणिए बंध, जुओ कान्हजी रुए अचंभ।। १७ ।।

तब एक ही रस्सी से दोनों हाथ और कमर ऊखल के साथ बंध गई। इस प्रकार से रस्सी से बंधने पर बनावटी रोना रोने लगे।

तिहां रोतो रीकतो जाय, रह्यो बिरिख ऊखल भराय।
तिहां थी निसरवा कीधूं जोर, पड्यो विरिख थयो अति सोर।। १८ ।।

वह रोते-सिसकते घुटने के बल जा रहे थे, तब ऊखल दो वृक्षों के बीच आ गया। वहां से निकलने के लिए जोर लगाया तो दोनों पेड़ बड़ी आवाज से गिर गए।

तेमां पुरुख बे प्रगट थया, अंग मोडीने ऊभा रह्या।
कर जोडीने अस्तुत कीधी, तेणे तरत वाले सीख दीधी।। १९ ।।

दोनों पेड़ों से दो पुरुष प्रगट हुए। (नलकूबर और मनीग्रीव—जो देवलोक में तालाब में नहा रहे थे, वहां नारदजी के आने पर प्रणाम न करने पर नारदजी के श्राप से पेड़ बने थे) वह नग्न थे और अंग मोड़कर तिरछे खड़े हुए थे। उन्होंने हाथ जोड़कर कन्हैयाजी की स्तुति की और उन्हें कन्हैयाजी ने उपदेश देकर मुक्त किया।

इहां आवी जसोदा उजाणी, कान्हजी भीडी रही भुज ताणी।
स्वांस मांहें न माय स्वांस, मुख चुमती आस ने पास।। २० ।।

(आवाज सुनकर) यशोदाजी दौड़ी-दौड़ी आईं। कन्हैयाजी पेड़ों के बीच में फंसे पड़े थे। मारे घबराहट के यशोदाजी की सांस फूल रही थी। (कन्हैयाजी को उठाकर) बार-बार मुख चूमने लगीं।

Nijanand App

एक धरे ते गोवरधन, हरख उपजावे मन।
इंद्रनो कीधो मान भंग, एम रमे ते जुजवे रंग।। २१ ।।

एक सखी गोवर्धन की लीला करती है, जिससे सबको आनन्द प्राप्त होता है। इन्द्र का मान भंग होता है। इसी प्रकार विभिन्न लीलाओं का स्वांग रचाती हैं।

लई चारे वाछरू वन, मांहोंमांहें गोवाला जन।
हाथ मांहें वांसली लाल, मांहें रामत करे रसाल।। २२ ।।

कन्हैयाजी ग्वालवालों के साथ वन में बछड़े चराने जाते हैं। हाथ में लाल बांसुरी है। ऐसी रामत होती है। वह आनन्द से खेलते हैं।

आपणमां कोइक कामनी वेख, एक वेख वालोजी वसेख।
वालो पूरे कामनीनां काम, भाजे हैडा केरी हाम।। २३ ।।

अपने बीच में कोई एक सखी वालाजी का भेष धारण कर दूसरी सखी के प्रेम की तड़प को शान्त करती है और मन की चाह पूर्ण करती है।

एक दाणलीला वेख नार, मही माथे मटुकी भार।
वालो करे तेसूं हांस, लिए माखण ढोले छास।। २४ ।।

एक सखी दान-लीला का भेष धारण करती है। सिर पर दही की मटकी का बोझा है। वालाजी उससे हंसी करते हैं। माखन छीन लेते हैं और छाछ गिरा देते हैं।

कहे वचन सामा कामनी, गाल जुगते दिए भामनी।
तेणी लिए मटुकी उजाय, वालो गोरस गोवालाने पाय।। २५ ।।

वह गोपी सामने आकर निराले ढंग के साथ गाली देने का नाटक करती है। वालाजी मटकी छीनकर भाग जाते हैं और गोरस ग्वालों को पिला देते हैं।

वालो वृजमां रम्या जे जुगते, अमे सहु वेख लीधां ते विगते।
पिउडो तोहे न दीसे क्यांहे, कालजडूं कांपे मांहें।। २६ ।।

वालाजी जिस ढंग से ब्रज में खेले थे, वैसे ही सभी ने उनके स्वांग रचकर लीला की। फिर भी वालाजी दिखाई न दिए। इसीलिए अन्दर-अन्दर हृदय कांपने लगा।

राजसिए कीधो विरह जोर, रुए पाडे बुंब बकोर।
स्वांतसियो बेसुध थाय, तामसियोने आंझो न जाय।। २७ ।।

राजसी सखियों को विरह ने सताया और वह जोर-जोर की आवाज से रोने लगीं। स्वांतसियां (सात्विकी सखियां) बेसुध हो गईं। तामसियों का विश्वास स्थिर रहा।

एक वेख वाले वेण वायो, साथ सहु जोवाने धायो।
जाणे वेण वालानो थयो, सोक रुदया मांहेंथी गयो।। २८ ।।

इतने में वालाजी का भेष धारण करने वाली सखी ने बांसुरी बजाई। सब सखियां देखने के लिए दौड़ीं। सबको ऐसा लगा कि बांसुरी वालाजी ने बजाई है। इससे उनके हृदय का दुःख शान्त हुआ।

Nijanand App

सहुने सरूप रुदेमां समाणो, आवी आनंद अंग उभराणो।
उलस्या मलवाने अंग, मांहेंथी प्रगट्या उछरंग।। २९ ।।

सभी सखियों के हृदय में वालाजी का स्वरूप समाया और वे आनन्द से भर गईं। सबके मन में अंग से मिलने का उल्लास अन्दर से जागृत हो गया।

वली मांडी ते रामत जोर, गाए गीत करे अति सोर।
त्यारे हरख वाध्यो अपार, आव्यो जुवतीनो आधार।। ३० ।।

उन्होंने फिर से जोरदार रामत खेली। गीत गाती हैं और शोर मचाती हैं। उनके हृदय में खुशी बढ़ गई, क्योंकि सखियों के प्राणाधार आ गए। (साक्षात् प्रगट हो गए)

दोडी वलगी वालाने वसेख, जाणे पिउजी हुता परदेस।
सघलीना हैडा मांहें, हाम मलवानी मन मांहें।। ३१ ।।

दौड़कर सभी वालाजी से लिपटीं और ऐसा जाना कि पिया परदेश गए थे। सबके दिल में वालाजी से (अंगों अंग) मिलने की चाह है।

वालेजीए कीधो विचार, केम मलसे सघली नार।
त्यारे देह धरया अनेक, सखी सखी प्रते एक।। ३२ ।।

वालाजी ने विचार किया कि सब सखियों से एक साथ कैसे मिलें? तब उन्होंने एक-एक गोपी से मिलने के लिए उतने ही तन धारण कर लिए।

सखी सहुने मल्या एकांत, रम्या वनमां जुजवी भांत।
वाले पूरण मनोरथ कीधां, अनेक विधे सुख दीधां।। ३३ ।।

सब सखियों से वालाजी वन में इस प्रकार एकान्त में अलग-अलग तरीके से मिले और रामत की तथा सबकी मनोकामना पूर्णकर प्रत्येक सखी को उसकी इच्छानुसार सुख दिए।

इंद्रावतीने आनन्द थाय, उमंग अंग न माय।
वली रमे नाना विध रंग, कांई वाध्यो अति उछरंग।। ३४ ।।

श्री इन्द्रावतीजी के अंग में उमंग नहीं समाती है। वह बड़े आनन्द में हैं कि फिर से उमंग के साथ तरह-तरह से खेलेंगे।

।। प्रकरण ।। ३३ ।। चौपाई ।। ६९३ ।।

चरचरी राग केदारो

उछरंग अंग सुन्दरी, हेत चित मन धरी।
सुख ल्यावियां वालो वली, सुख ल्यावियां वालो वली।। १ ।।

सखियों के मन में उमंग भरी है और हृदय में स्नेह भरा है। वालाजी फिर से सुख ले आए हैं।

कर मांहें कर करी, सकल मली हरवरी।
बांहें न मूके स्यामतणी, अलगी न जाय कोय टली।। २ ।।

हाथ में हाथ देकर सब उतावली में मिलीं। वालाजी की बांह नहीं छोड़ती हैं और कोई भी अलग नहीं होती है।

Nijanand App

एक एक लिए आलिंघण, एक एक दिए चुमण।
बांहोंडी वाली जीवन, खेवना भाजे मली।। ३ ।।

बारी-बारी से वालाजी से चिपटती हैं। चुम्बन देती हैं और गले में हाथ डालकर अपनी कामना पूर्ण करती हैं।

जीवन मन विमासियूं, सखी केम भाजसे खेवना।
आ तां पूर जाणे सायरतणां, एम आव्यां हलीमली।। ४ ।।

वालाजी ने मन में विचार किया कि सखियों की चाह कैसे पूरी करूं? सखियां तो सागर के प्रवाह के समान मिल-जुलकर चली आ रही हैं।

पछे एक वालो एक सुन्दरी, एम रमूं रंगें रस भरी।
लिए आलिंघण फरी फरी, दाझ अंगतणी गई गली।। ५ ।।

इसलिए वालाजी ने इतने रूप बनाए कि एक-एक गोपी और एक-एक वालाजी बनकर आनन्द में रास खेलने लगे और बार-बार चिपटा-चिपटाकर अंग की तड़प पूरी करने लगे।

विनोद हाँस अतिघणो, वाले वधारियो सुखतणो।
कामनी प्रते कंथ आपणो, एणे सुखे दुख नाख्यां दली।। ६ ।।

बहुत सुख की हंसी का आनन्द वालाजी ने बढ़ा दिया। वालाजी ने ऐसा सुख देकर सखियों का दुःख मिटा दिया।

अधुर अमृत पीवतां, कठण कुच खूंचता।
स्याम संगे सुख लेवतां, ए लीला अति सवली।। ७ ।।

वालाजी की अधरों का रस पीते समय सखियों के स्तन चुभते हैं। सखियां इस प्रकार वालाजी से सुख लेती हैं। यह लीला अति प्रबल है।

साथ मांहें इंद्रावती, वालातणे मन भावती।
रस रंगे उपजावती, कांई उपनी छे अति रली।। ८ ।।

सखियों में श्री इन्द्रावतीजी वालाजी के मन को भाती हैं। वह खेल में अति आनन्द पैदा करती हैं, क्योंकि वह प्रारम्भ से सर्वगुण सम्पन्न हैं।

|| प्रकरण || ३४ || चौपाई || ७०१ ||

राग मलार

आपण रंग भर रमिए रास, वालोजी वली आविया रे।
कांई उपनू अंग उलास, सुन्दर सुख लाविया रे।। १ ।।

वालाजी दुबारा आ गए हैं, इसलिए हम आनन्द से उनके साथ रास खेलें। उनके आने से दिलों में उमंग बढ़ गई है और वह सुख अधिक ले आए हैं।

सखी दियो रे मांहों मांहें हाथ, वचे जोड लीजिए रे।
स्याम स्यामाजी पाखलवाड, सखियो तणी कीजिए रे।। २ ।।

सखियो! आपस में हाथ मिलाकर श्री श्याम-श्यामाजी की जोड़ी को बीच में ले लो। उनको चारों तरफ से घेरे में ले लो।

Nijanand App

हवे रामत रमिए एम, खरो ग्रहीजिए रे।
आपण एणी पेरे बंधेज, सहु रहीजिए रे।। ३ ।।

अब इस तरह की रामत खेलें कि हमारे हाथ से वालाजी छूटकर जा न सकें। ऐसे बन्धन हम सब मिलकर बांधें।

एनूं रुदे अति कठोर, ए थकी विहीजिए रे।
हवे ए अलगो एक पल, आपण न पतीजिए रे।। ४ ।।

इनका हृदय बड़ा ही कठोर है। इनसे डरिए। एक पल के लिए भी अलग होने में इनका विश्वास न करें।

फरतां रमतां रास, चुमन मुख दीजिए रे।
लीजिए रस अधुर, अमृत पीजिए रे।। ५ ।।

रास खेलते-खेलते चुम्बन भी दीजिए। अधरामृत का रस पीजिए।

एणे भीडिए अंगों अंग, कुचो वचे आणिए रे।
एना विलास अनेक भांत, मोहन वेल माणिए रे।। ६ ।।

इनको छाती से छाती मिलाकर दो स्तनों के बीच चिपटा कर रखें। इनके विलास के सुख अनेक तरह के हैं। इनको मोहन बेलि मानना।

मुख मांहें दई अधुर, जीवन सुख जाणिए रे।
अदभुत एहेना सनेह, ते केम वखाणिए रे।। ७ ।।

इनके मुख में अधर देने पर अपने जीवन का सच्चा सुख जानो। इनके अद्‌भुत प्रेम को कैसे बयान करें?

वाले सांभलियां रे वचन, भरी अंक लीधियो रे।
वाले चितडूं दईने चित, सरीखी कीधियो रे।। ८ ।।

वालाजी ने जब यह वचन सुने तो अपनी कोहली में भर लिया तथा अपने चित्त से चित्त मिलाकर अपने समान कर लिया।

ऐना मनोरथ अनेक पेर, उपाया अमने घणां रे।
सनेह उपाईने आण्यां, सागर सुख तणां रे।। ९ ।।

वालाजी ने हमारे मनों में अनेक प्रकार से इच्छाएं उत्पन्न कर दी हैं तथा सागर के समान सुख हमको दिए हैं।

सखी सागरनी सी वात, सुणो सुख स्यामनी।
मारी जिभ्या आणे अंग, न केहेवाय भामनी।। १० ।।

हे सखी! सुनो, सागर के समान सुख की क्या बात है। हम अंगनाओं की इस जुबान (जिह्वा) से उन सुखों का वर्णन नहीं हो सकता।

वाले चितडूं दईने चित, ताणी लीधां आपणां रे।
पछे वनमां कीधां विलास, न रही केहेने मणां रे।। ११ ।।

वालाजी ने अपना चित्त हमारे चित्त में डालकर अपने पास खींच लिया। बाद में वन में इतना विलास किया कि किसी प्रकार की कमी नहीं रही।

Nijanand App

कहे इंद्रावती आनंद, वालोजी रंगे गाए छे।
हजी रामतडी वृध, वसेके थाय छे रे।। १२ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि वालजी बड़े आनन्द में गा रहे हैं और इसलिए यह खेल और भी बढ़ता जाएगा।

।। प्रकरण ।। ३५ ।। चौपाई ।। ७१३ ।।

राग वेराडी चरचरी

रमत रास करत हांस, कान्ह मोहन वेल री।
कान्ह मोहन वेल, सखी कान्ह मोहन वेल री।। १ ।।

कन्हैया मोहन बेलि के समान रास की रामतें अति प्रसन्नता के साथ करते हैं।

रासमां विनोद हांस, हांसमा करूं विलास।
पूरतो अमारी आस, करे रंग रेल री।। २ ।।

रास के बीच में विनोद होता है। हंसी होती है। हंसी में विलास करती हूं और अपनी इच्छानुसार रंगरेलियां मनाकर मनोकामना पूरी करती हूं।

वालैयो वन विलासी, गयो तो अमथी नासी।
कठण करीने हांसी, दीधां दुख दोहेल री।। ३ ।।

वालाजी वन में विलास करके हम से भाग गए थे। उन्होंने ऐसी कठिन हंसी करके बहुत दुःख दिया।

सखियो करती मान, तेणे विरह ना कीधां पान।
विसरी सरीर सान, एवो कीधो खेल री।। ४ ।।

सखियों को जब अभिमान आया तो उनको विरह का रस पान कराया। जिससे उन्हें शरीर की सुध ही भूल गई, ऐसा खेल खिलाया।

मन तामसियो हरती, मान माननियो करती।
अंगे न विरह धरती, तो अम पर थई हेल री।। ५ ।।

तामसी सखियों ने मन को अपने वश में कर लिया। मानवन्ती (मानिनी) सखियां मान करती थीं। उनके अंगों में विरह का प्यार नहीं था, इसलिए हमको इतना कष्ट (जुदाएगी का) सहन करना पड़ा।

आतुर करी सर्वे जन, मीठडां बोले वचन।
हेतसूं हरतो मन, एवो अलवेल री।। ६ ।।

वालाजी इतने अलबेले (अलमस्त) हैं कि उन्होंने अपने प्यार भरे वचनों से सबको आतुर कर बड़ा प्यार देकर सखियों के मन को हर लिया है।

हवे न मूकूं अधखिण, धुतारो छे अतिघण।
पल न वालूं पांपण, भूलियो पेहेल री।। ७ ।।

अब मैं इसे आधे क्षण के लिए भी नहीं छोड़ूंगी। यह बड़ा छलिया है। अब पलक भी नहीं झपकाओ, क्योंकि पहले एक बार भूल कर चुके हैं।

Nijanand App

इंद्रावती कहे साथ, हवे न कीजे विस्वास।
खिण न मूकिए पास, एवी बांधो वेल री।। ८ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे मेरे साथजी! अब इनका बिलकुल विश्वास न करो। एक क्षण के लिए भी इनका संग न छोड़ो। मोहन बेलि की भांति इनसे चिपटे रहो।

।। प्रकरण ।। ३६ ।। चौपाई ।। ७२१ ।।

राग धोलनी चाल

जुओ रे सखियो तमे वाणी वालातणी, बोलेते बोल सुहामणां रे।
मीठी मधुरी वात करे, हूं तो लऊं ते मुखनां भामणां रे।। १ ।।

हे सखी! वालाजी के वचन देखो। यह कितने प्यारे बोल बोलते हैं। इनकी माधुरी वाणी पर मैं न्यौछावर हो जाऊं।

हावसुं भाव करे वालो हेते, गुण ने घणां वालातणां रे।
रामत करतां रंग रेल करे, झकझोल मांहें नहीं मणां रे।। २ ।।

वालाजी बड़े ढंग से हाव-भाव करते हैं। इस गुण में उनकी जरा भी कमी नहीं है। रामत करते समय बड़ा आनन्द करते हैं तथा छेड़छाड़ में निपुण हैं।

जुओ रे सखियो मारा जीवनी वातडी, मारा मनमा ते एमज थायरे।
नेंणा ऊपर नेह धरी, हूं तो धरूं वालाजीना पाय रे।। ३ ।।

हे सखियो! मेरे मन की एक बात देखो। ऐसा लगता है कि वालाजी के चरणों को अपने नेत्रों की पलकों पर धर लूं।

सुण सुंदरी एक वात कहूं खरी, ए ते एम केम थाय रे।
नेणां ऊपर केम करीस, ए तो नहीं धरवा दिए पाय रे।। ४ ।।

दूसरी सखी उत्तर देती है कि मैं स्पष्ट कहती हूं कि ऐसा हो ही नहीं सकता। वालाजी पलकों पर किसी तरह भी चरणों को नहीं धरने देंगे।

जो हूं एम करूं रे बेहेनी, मारा जीवनी दाझ तो जाय रे।
कोई विध करी छेतरूं वालो, तो मूने केहेजो वाह वाह रे।। ५ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे सखी! यदि मैं ऐसा कर लूं तो मेरे जीव की तड़प शान्त हो जाए। किसी प्रकार से वालाजी को ठग लूं तो मेरे को शाबासी देना।

सुणो रे वालैया वात कहूं, तमारा भूखण बाजे भली भांत रे।
लई चरणने निरखूं नेत्रे, मूने लागी रही छे खांत रे।। ६ ।।

हे वालाजी! सुनो, आपके आभूषण आवाज करते हैं। मेरी इच्छा है कि आपके चरणों को नैनों से निहारूं।

जुओ रे सखियो मारा भूखण बाजतां, झांझरिया ते बोले रसाल रे।
लेनी पग धरूं तुझ आगल, पण बीजी म करजे आल रे।। ७ ।।

वालाजी कहते हैं, सखियो! देखो, हमारे आभूषण बजते हैं। झांझरी की आवाज रस भरी है। मैं अपना पैर तुम्हारे आगे रख देता हूं। तुम कोई शरारत नहीं करना।

Nijanand App

लई चरण ने भेल्या नेणां, वाले जोयूं विचारी चित रे।
वटकी चरण ने लीधां वेगलां, जाणी इंद्रावती रामत रे।। ८ ।।

श्री इन्द्रावतीजी ने चरण को उठाकर नैनों से लगा लिया। वालाजी ने चित्त में यह विचार कर कि श्री इन्द्रावतीजी की यह रामत है, ऐसा जानकर अपने चरण को झटके से वापस खींच लिया।

वाले वेगे लीधी कंठ बांहोंडी, बेठा अंग भीडीने हेतमां रे।
नेह थयो घणो नेंणांसुं, दिए नेत्रने चुमन खांतमां रे।। ९ ।।

वालाजी ने तुरन्त गले में हाथ डालकर प्यार से चिपका लिया। श्री इन्द्रावतीजी के नैनों से बड़ा प्यार हो गया और आंखों को चूम लिया।

रंग रेल करी रस बस थया, सखी स्याम घणां अमृतमां रे।
लथबथ थई कलोल थया, ए तो कूपी रह्या बेहू चितमां रे।। १० ।।

आनन्द के रस में दोनों सराबोर (डूब गए) हो गए। अमृतमय आनन्द में विभोर होकर दोनों एकाकार हो गए।

कहे इंद्रावती सुणो रे साथजी, वाले सुख दीधां घणां घणां रे।
नवलो नेह वधार्यो रमतां, गुण किहां कहूं वालातणा रे।। ११ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, प्यारे सुन्दरसाथजी! वालाजी ने इस तरह बहुत घने सुख दिए। उनके गुणों की महिमा कहां तक गाऊं? वह नए-नए ढंग से खेलते-खेलते खेल में प्रेम बढ़ाते हैं।

|| प्रकरण || ३७ || चौपाई || ७३२ ||

राग केदारो

बलियामां दीसे बल, अंग आछो निरमल।
नेंणां कटाछे वल, पांपण चलवे पल, अजब अख्यात।। १ ।।

वालाजी में बड़ा उत्साह है। उनका शरीर बहुत अच्छा है, नेत्र तिरछे हैं, पलकें चलाते हैं, ऐसी अजब शोभा है।

जनम संघाती जाण्यो, मन तो ऊपर माण्यो।
सुंदरी चितसुं आण्यो, विविध पेर वखाण्यो, वालानी विख्यात।। २ ।।

वालाजी जन्म के साथी हैं। यह हमने मन से मान लिया है। हे सखियो! हमने तरह-तरह से वालाजी के गुणों का बखान किया, जिसे तुम चित्त में धारण करो।

वालोजी वसेके हित, चालतो ऊपर चित।
इछा मन जे इछत, खरी साथनी पूरे खंत, भलो भली भांत।। ३ ।।

वालाजी विशेषकर हमारे हितकारी हैं। चित्त के ऊपर चलते हैं। मन की इच्छा बड़ी चाह के साथ पूरी करते हैं।

इंद्रावती कहे खरूं, मूलनो संघाती वरूं।
ए धन रुदयामां धरूं, अंगथी अलगो न करूं, खरी मूने खांत।। ४ ।।

श्री इन्द्रावतीजी सत्य कहती हैं कि मूल के सम्बन्ध से मैं इन्हें पति बना लूं। इस अमूल्य निधि (न्यामत) को हृदय में धारण करूं। अपने से कभी जुदा न करूं, ऐसी मेरी चाह है।

Nijanand App

वरजीने दऊं वीड, भीडतां न करूं जीड।
अंग मांहें हुती पीड, काम केरी भाजूं भीड, जो जो मारी वात।। ५ ।।

वालाजी से जोर से मिलूं। मिलने में देर न करूं। हमारे अंग में (मिलन की) पीड़ा थी। काम की पीड़ा शान्त करने की इच्छा पूरी करूं। ऐसी हमारी बात को देखो।

बांहोंडी कंठमां घाली, एकी गमा लीधो टाली।
लई चाली अणियाली, सखी मुख हाथ ताली, जोई रह्यो साथ।। ६ ।।

उनके गले में हाथ डालकर एक ओर इशारे के साथ एकान्त में खींचकर ले गई और सब सखियां आश्चर्य की दृष्टि से देखती रह गईं।

रामत करती रंगे, चुमन देवंती वंगे।
उमंग आवियो संगे, भेली मुख भीडे अंगे, मूके नहीं बाथ।। ७ ।।

श्री इन्द्रावतीजी वालाजी के साथ आनन्द से खेलती हैं। फुदक-फुदक कर चुम्बन देती हैं। उमंग में आकर मुख से मुख मिलाती हैं और आलिंगन (जफ्फी कोहली, गोदी में लिपटना) नहीं छूटता।

रंगना करती रोल, झीलती मांहें झकोल।
करी मुख चकचोल, जोरावर झलाबोल, लेवा न दे स्वांस।। ८ ।।

श्री इन्द्रावतीजी लील में बड़े आनन्द के साथ शोर मचा रही हैं। झपटा-झपटी में आनन्द ले रही हैं। चंचल मुख से जोरदार शब्द बोलती हैं और अपनी रामत में वालाजी को दम भी नहीं लेने देती।

पिउना अधुर पिए, अमृत घूंटडे लिए।
सामा वली पोते दिए, देवंता मुख नव विहे, अंग प्रेम वास।। ९ ।।

श्री इन्द्रावतीजी वालाजी के अधरामृत के घूंट पीती हैं और वालाजी को पिलाती हैं। अंग में भरे हुए प्रेम से मुख में मुख देने में पीछे नहीं हटतीं।

वली इछा जुई धरे, फुंदडी फेरसूं फरे।
जोर अति घणो करे, इंद्रावती काम सरे, रमे पिउ रास।। १० ।।

फिर दूसरी इच्छा करती हैं। फूंदड़ी (चकरी, कीकली) फिर से घूमती हैं, जिसमें ताकत अधिक लगाती हैं। इस तरह से वालाजी और इन्द्रावतीजी रास रमती हैं। इसमें श्री इन्द्रावतीजी की इच्छाएं पूर्ण हो जाती हैं।

फुंदडी मेलीने हाथ, चटकासूं घाली बाथ।
रामत करे निघात, कंठ बांहोंडी फरे साथ, रंगे प्राणनाथ।। ११ ।।

फूंदड़ी (चकरी, कीकली) से हाथ छुड़ाकर फुर्ती से कोहली (अंक) भरती हैं। निडर होकर वालाजी के गले में हाथ डालकर खेलती हैं।

वली लिए हाथ ताली, फरती देवंती वाली।
बेठंती उठंती वाली, रामत वचे रसाली, विविध विलास।। १२ ।।

फिर से हाथ की ताली लेने देने वाली, उठने-बैठने वाली अनेक प्रकार से रसमयी रामतें खेलती हैं।

Nijanand App

छटके रामत मेली, वालाजी संघाते गेहेली।
आलिंघण लिए ठेली, चुमन दिए पिउ पेहेली, मुख आस पास।। १३ ।।

दीवानी श्री इन्द्रावतीजी खेल में वालाजी को छोड़ती हैं, फिर मिलती हैं, कोली भर लेती हैं, फिर छोड़ देती हैं। पहले चुम्बन देती हैं, फिर प्रियतम के मुख को इधर-उधर से चूमती हैं।

सर्वे जोवंता सुंदरी, रामत तो घणी करी।
पिउ कंठे बांहो धरी, इंद्रावती वाले वरी, जोइए कोण मुकावे हाथ।। १४ ।।

सब सखियों के देखते हुए भी श्री इन्द्रावतीजी ने बहुत रामतें कीं। वह वालाजी के गले में हाथ डालकर कहती हैं कि मैंने वालाजी को अपना बना लिया है। देखती हूं अब कौन सखी हमारा हाथ छुड़ाती है?

॥ प्रकरण ॥ ३८ ॥ चौपाई ॥ ७४६ ॥

केसरबाईनो झगडो

आवी केसरबाई कहे रे बेहेनी, सुणो वात कहूं तमसूं।
भली रामत वालासूं रंगे करी, हवे मूको रमे अमसूं।। १ ।।

श्री इन्द्रावतीजी के (प्रेम भरे अधिकार) की बात को सुनकर केसरबाई सखी आकर कहती है, हे बहन! तुमसे एक बात कहती हूं। तुमने बहुत रंगभरी रामतें वालाजी के साथ की हैं। अब वालाजी को छोड़ो, मैं खेलूंगी।

हूं तो नहीं रे मूकूं मारो नाहोजी, तमे जोर करो जथाबल।
आवी वलगो वालाजीने हाथ, आतां देखे छे सैयर साथ।। २ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मैं अपने वालाजी को नहीं छोडूंगी। तुम अपनी शक्ति आजमा लो। वालाजी को जरा हाथ तो लगाओ। सब सखियां देख रही हैं।

इंद्रावती कहे अमसूं रमतां, केसरबाई करो एम कांए।
तमे हाथ आवी वालाजीने वलगो, पण हूं नव मूकूं बांहें।। ३ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे केसरबाई! मेरे रस में तुम ऐसे क्यों विघ्न करती हो। तुम आकर वालाजी के हाथ को पकड़ो, लेकिन मैं इनकी बांहें नहीं छोडूंगी।

हूं कंठ बांहोंडी वालीने ऊभी, मारो प्राणतणो ए नाथ।
नेहेचे सखी हूं नही रे मूकूं, तमे कां करो वलगती वात।। ४ ।।

मैं वालाजी के गले में हाथ डाले खड़ी हूं। यह मेरे प्राणनाथ हैं। यह निश्चित है कि मैं नहीं छोडूंगी। तुम व्यर्थ में क्यों झगड़ती हो?

अनेक प्रकार करो रे बेहेनी, हूं नहीं मूकूं प्राणनो नाथ।
बीजी रामत जई करो रे बेहेनी, आतां ऊभो छे एवडो साथ।। ५ ।।

हे केसरबाई! तुम कुछ भी कर लो मैं अपने प्राणनाथ को नहीं छोडूंगी। तुम जाकर और खेल खेलो। यह सब सुन्दरसाथ खड़े हैं। (इनमें से किसी के साथ खेल लो)।

केम रे मूकूं कहे केसरबाई, तमने रमतां थई घणी वार।
हवे तमे केम नहीं मूको, मारा प्राणतणो आधार।। ६ ।।

केसरबाई कहती हैं, भला कैसे नहीं छोड़ोगी? तुम्हें वालाजी के साथ खेलते हुए बहुत देर हो गई है। अब तुम हमारे प्राणवल्लभ को भला क्यों नहीं छोड़ोगी?

Nijanand App

सुणो केसरबाई वात अमारी, इंद्रावती कहे आ वार।
लाख वातो जो करो रे बेहेनी, पण हूं नहीं मूकूं निरधार।।७।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि हे केसरबाई! इस बार हमारी बात सुनो। तुम लाख उपाय कर लो। मैं तो भी निश्चय करके नहीं छोडूंगी।

कहे केसरबाई अमसूं इंद्रावती, कां करो एवडूं बल।
एटला लगे तमे रामत कीधी, हवे नहीं मूकूं पाणीवल।।८।।

केसरबाई कहती हैं, हे श्री इन्द्रावतीजी! मेरे साथ जोर आजमाइश क्यों करती हो? इतनी देर से तुम रामत कर रही हो। मैं अब पलभर के लिए नहीं छोडूंगी।

बीजी सखी इहां नहीं रे बापडी, आंही तो इंद्रावती नार।
जोर करो जोइए केटलूं केसरबाई, केम ने मुकावो आधार।।९।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मैं इन्द्रावती हूं। कोई कमजोर सखी नहीं हूं। हे केसरबाई! देखती हूं, तुम कितना जोर लगाती हो और कैसे हमारे धनी को छुड़ाती हो?

एटला दिवस थया अमने रमतां, पण कोणे न कीधूं एम।
भोला ढालनी वात जुई छे, जोइए जोर करी जीतो केम।।१०।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि इतना समय मुझे खेलते हुए हो गया, पर किसी ने ऐसा नहीं किया। भोलेपन की बात अलग है। देखती हूं ताकत लगाकर कैसे जीतती हो?

वेढ देखीने वालोजी हँसिया, वलगे मांहोंमांहें नार।
कोई केने नमी न दिए, आतां बंने जाणे झुंझार।।११।।

वालाजी को दोनों की जिद देखकर हंसी आ गई कि यह दोनों आपस में कैसे लड़ रही हैं। दोनों में से कोई भी झुकने को तैयार नहीं है। यह तो दोनों ही अपने को जोरावर (शक्तिशाली) समझती हैं।

सिखामण दिए रे वालोजी, कोई न नमे रे लगार।
त्यारे रूप कीधां रंगे रमवा, संतोखी सर्वे नार।।१२।।

वालाजी समझाते हैं। फिर भी दोनों में से कोई जरा भी नहीं झुकतीं। तब वालाजी ने रामत को आनन्दमय बनाने के लिए, अपने अनेक रूप बना लिए, इससे सब सखियां सन्तुष्ट हो गईं।

केसरबाई जाणे अमकने आव्या, इंद्रावती जाणे अमपास।
सघलीसूं सनेह करी, वन मांहें कीधां विलास।।१३।।

केसरबाई ने समझा कि वालाजी मेरे पास आ गए हैं। श्री इन्द्रावतीजी जानती हैं कि वह मेरे पास हैं। वालाजी ने सबसे प्यार कर वन में आनन्द लिया।

इंद्रावती केसरबाई मलियो, बंने कहे एम।
ओसियाली थैयो मन मांहें, जुओ आपण कीधूं छे केम।।१४।।

श्री इन्द्रावतीजी और केसरबाई दोनों जब बाद में मिलीं, तो मन में शर्मिन्दा होकर कहने लगीं, देखो हमने ऐसा क्यों किया?

Nijanand App

भीडीने मलियो बंने उछरंगे, भाजी हैडानी हाम।
इंद्रावती कहे केसरबाई, वाले पूरण कीधां मन काम।। १५ ।।

बड़े हर्ष के साथ दोनों गले लगकर मिलीं और मन के मैल को दूर किया। अब श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे केसरबाई! वालाजी ने हमारी मनोकामनाएं पूरी की हैं।

।। प्रकरण ।। ३९ ।। चौपाई ।। ७६१ ।।

राग केदारो छंद

छेडो न छटके, अंग न अटके, भरे पांउं चटके, मानवंती मटके।। १ ।।

रास रामत में साड़ी का पल्ला कहीं खुल न जाए। कोई अंग अटक न जाए। पांव से चटकनी चाल से चलकर मानवन्ती (मानिनी) सखियां मटक-मटक कर रास खेलती हैं।

लिए रंग लटके, घुटावे अधुर घटके, वली वली सटके।
खांत घणी खटके, रमवा रंगे रास री।। २ ।।

लटक के साथ आनन्द करती हैं। अधर का रस पिलाती हैं। बार-बार खिसक जाती हैं। बड़ी प्रबल चाह रास खेलने की होती जाती है।

रमती रास कामनी, जामती चंद्र जामनी।
मली वल्लभे माननी, भलंती रंगे भामनी।। ३ ।।

कामिनी सखियां रास खेलती हैं। चन्द्रमा की चांदनी रात स्थिर हो जाती है और मानिनी सखियां प्रियतम से मिलती हैं तथा आपस में एक-दूसरे से मिलती हैं।

स्यामाजी संगे स्यामनी, बांहोंडी कण्ठे कामनी।
ताणती अंगे आमनी, मुख बीडी सोहे पाननी।
एम रमत सकल साथ री।। ४ ।।

श्यामाजी श्री श्याम के गले में हाथ डालकर अपनी तरफ खींचती हैं। मुख में पान का बीड़ा है। इस तरह से सब सखियां खेल रही हैं।

मारो साथ रमे रे सोहामणो, कांई रामत रमे रंग।
वालाजीसुं वातो, करे अख्यातो, उलट भीडे अंग।। ५ ।।

सब सखियां बड़े आनन्द के साथ सुहावने ढंग से रामत खेल रही हैं। वालाजी से बेशुमार बातें करती हैं और अंग में उमंग भरकर वालाजी से चिपट जाती हैं।

बांहोडी वाले भूखण संभाले, रखे खूंचे कोई नंग।
लिए बाथो वालाजी संघातो, उनमद बल अनंग।। ६ ।।

अपने आभूषण संभाल कर वालाजी के गले में बांह डाले हैं, ताकि कोई नग चुभ न जाए। वालाजी के साथ मस्ती तथा उनमद अंगों से कोहली भरती हैं।

छटके रमे पाखल भमे, रामत न करे भंग।
छेलाइए छेके अंग वसेके, सखी सर्वे सुचंग।। ७ ।।

फिर अलग होकर भमरी फिरती हैं तो भी खेल में कोई रुकावट नहीं आती है। सब सखियां सावधान हैं–विशेषकर चतुराई के साथ कूदने में।

Nijanand App

केटलीक सुन्दरी उलट भरी, आवी वालाजीने पास।
उमंग आणे आप वखाणे, विरह विनता गयो नास।।८।।

कुछ सखियां उमंग भरकर वालाजी के पास आती हैं और उमंग में ही बोलती हैं, अब हमारे विरह का दुःख मिट गया है।

गीत गाए रंग थाए, विविध पर विलास।
जुवती जोडे एकठी दोडे, मारा वालाजीसुं करवा हांस।।९।।

गीत गाती हैं। तरह-तरह से विलास के आनन्द हो रहे हैं। युवतियां जोड़ी-जोड़ी करके वालाजी से हंसी करने के लिए दौड़ती हैं।

वालैए विमासी अंग उलासी, देह धरया अनेक।
सखियो सघली जुजवी मली, मारा वालाजीसुं रमे विसेक। ।१०।।

वालाजी भी उमंग के साथ विचार करके अनेक देह धारण करते हैं। फिर सखियां भी एक-एक गोपी, एक-एक कान्हा के रूप में विशेष रामतें खेलती हैं।

अंगडा वाले नेंणां चाले, उपजावे रंग रेल।
बोले बंगे आवे रंगे, जाणे पेहेले भणियो पेस।।११।।

वे अंग को मोड़ती हैं। आखें चलाकर आनन्द बढ़ाती हैं। आनन्द में विभोर होकर अटपटे वचन बोलती हैं। ऐसा लगता है कि मानो इस कला को पहले सीखकर आई हैं।

अति उछरंगे वाध्यो संगे, उमंग अंग न माय।
वालाजीनी बांहे कंठ वलाय, रमतां तानी जाय।।१२।।

वालाजी के गले में हाथ डालकर बड़ी उमंग, जो उनके मन में समाती नहीं है, के साथ अपनी ओर वालाजी को खींच ले जाती हैं।

बांहोंडी झाली वनमां घाली, रामत रमे अति दाय।
वनमां विगते जुजवी जुगते, रंग मन इछा थाय।।१३।।

बांह पकड़कर वन में ले जाकर बड़ी अदाओं के साथ रामत खेलती हैं। मन में जैसी इच्छा होती है, वन में उसी प्रकार की अलग-अलग रामतें खेलती हैं।

एक निरत करे फेरी फरे, छेक वाले तेणे ताय।
एक दिए ठेक वली वसेक, रेत उडाडे पाय।।१४।।

एक जोड़ी नृत्य करती है। एक जोड़ी फेरी फिरती है। एक जोड़ी उसी समय कूदती है। एक जोड़ी विचित्र ढंग से धकेलते हुए पांव से रेत उड़ाती है।

एक घूमे घूमरडे कोइक दौडे, वचन गाए रसाल।
एक लिए ताली दिए वाली, साम सामी पडताल।।१५।।

एक जोड़ी घुमडले की, एक जोड़ी दौड़ने की, एक जोड़ी रस भरे वचन गाने की, एक जोड़ी ताली सामने लेने और देने की तथा एक जोड़ी अपने सामने आकर पड़ताल की रामत खेलती है।

Nijanand App

एक चढे वने इछा गमे, हींचे हिचोले डाल।
एक कोणियां रमे गाए गमे, प्रेमतणी दिए गाल।। १६ ।।

एक जोड़ी इच्छानुसार वन में पेड़ों पर चढ़कर डालियों से झूमती है। एक जोड़ी कोहनियां रमती है और प्रेम भरी गालियां देकर गाती है।

एक फरे फेरी कर धरी, बांहोंडी कंठ आधार।
एक फूंदडी फरे रामत करे, रंग थाय रसाल।। १७ ।।

एक जोड़ी कन्धे पर हाथ रखकर फेरी फिरती है और वालाजी के गले में बाहें डालती है। एक जोड़ी फूंदड़ी की रामत करती है। इससे आनन्द बढ़ जाता है।

मोरलिया नाचे रंग राचे, सब्द करे टहुंकार।
वांदरडा पाय ऊभा थाय, लिए गुलाटो सार।। १८ ।।

एक जोड़ी मोर बनकर नाचती है तथा मोर की बोली बोलती है। कुछ सखियां बन्दर बनती हैं और गुलाटियां लगाती हैं।

पसु पंखी वासे मन उलासे, आनंदियो अपार।
वन कुलांभे वेलो आवे, फूलडा करे बेहेकार।। १९ ।।

पशु-पक्षी उल्लास भरे मन से पीछे खड़े अपार आनन्द ले रहे हैं। वन में बेलें वृक्षों पर लिपटी हैं। उनके फूलों से वन महक रहा है।

चांदलियो तेंजे जुए हेजे, नीचो आवी निरधार।
जल जमुना ना वाध्यां घणां, आघा न वहे लगार।। २० ।।

चन्द्रमा तेजी से नीचे आकर बड़े प्यार से रास देखता है। यमुनाजी के जल का बहाव भी रुक गया है।

पडछंदा बाजे भोम विराजे, पडताले धमकार।
सघली संगे उमंग अंगे, अजब रमे आधार।। २१ ।।

पांव की पड़ताल से धमक की आवाज धरती पर घोष करती है। इस तरह सब सखियों के साथ उमंग भरकर निराली अदा (विचित्र मुद्राओं से युक्त) से वालाजी खेलते हैं।

भूखण बाजे धरणी गाजे, वृंदावन हो हो कार।
अमृत वा वाय लहेरों लिए वनराय, अंग उपजावे करार।। २२ ।।

आभूषण बजते हैं, जिससे धरती पर गर्जना होती है तथा सखियों की 'हो-हो की आवाज' वृन्दावन में गूंज रही है। अमृतमयी हवा की लहरों से वृन्दावन झूमकर अंग में आनन्द उपजाता है।

एम केटलीक भांते रमियां खांते, रामत रंग अपार।
कहे इंद्रावती एणी पेरे लीजे, वालो सुख तणो सिरदार।। २३ ।।

इस प्रकार से बड़ी चाहना के साथ अनेक तरह से बेशुमार रामतें खेलते हैं। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि ऐसे सुख देने वाले वालाजी सुख के सरदार (मालिक) हैं।

|| प्रकरण || ४० || चौपाई || ७८४ ||

Nijanand App

राग मारू

ऊभा ने रहो रे वाला ऊभा ने रहो, हजी आयत छे अति घणी।
रामत रमाडो अमने, उलट जे अमतणी।। १ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे वालाजी! खड़े रहो, अभी और चाह बाकी है। हमको खेल खिलाओ, जिसकी चाह हमारे मन में है।

अनेक रंगे रमाडियां, केटलां लऊं तेना नाम।
सखी सखी प्रते जुजवा, सहुना पूरण कीधां मन काम।। २ ।।

आपने अनेक तरह के खेल खिलाए हैं, जिनके नाम कहां तक लूं? आपने प्रत्येक सखी के साथ खेलकर सबकी मनोकामना पूर्ण की है।

आ भोमनो रंग उजलो, कांई तेज तणो अंबार।
वस्तर भूखण आपना, सूं कहूं सरूप सिणगार।। ३ ।।

इस भूमि का रंग बड़ा उज्ज्वल है। प्रकाश का तो मानो ढेर ही है। आपके वस्त्राभूषण, स्वरूप और शृंगार की शोभा कैसे कहूं?

नेहेकलंक दीसे चांदलो, नहीं कलातणो कोई पार।
उठे अलेखे किरणें, सहु झलकारों झलकार।। ४ ।।

चन्द्रमा निष्कलंक है। इसकी कलाओं का पार नहीं है। उसमें अपार किरणें उठती हैं और चारों ओर रोशनी की झलकार फैली है।

वन वेलडियो छाइयो, रलियामणां फूल कई रंग।
वाय सीतल रंग प्रेमल, कांई अंगडे वाध्यो उमंग।। ५ ।।

वन में वृक्षों पर बेलें छाई हैं, जिनमें कई रंग के सुन्दर फूल हैं। इनकी सुगन्धित ठण्डी हवा और रंग से अंग में उमंग बढ़ रही है।

वली रस वनमां छे घणों, मीठी पंखीडानी वाण।
ए वन मुकाय नहीं, रूडो अवसर ए प्रमाण।। ६ ।।

फिर से वनों में पक्षियों की मीठी आवाज गुंजार कर रही है जिससे रस और बढ़ गया। ऐसे सुन्दर अवसर में यह वन छोड़ा नहीं जाता।

अनेक विलास कीधां वनमां, मली सहुए एकांत।
ए सुखनी वातो सी कहूं, कांई रमियां अनेक भांत।। ७ ।।

वन में हम सबने मिलकर एकान्त में अनेक विलास किए हैं। इसके सुख की बातें कैसे कहूं? हमने अनेक प्रकार की रामतें खेली हैं।

हवे एक मनोरथ एह छे, आपण रमिए एणी रीते।
बाथ लीजे बंने बल करी, जोइए कोंण हारे कोंण जीते।। ८ ।।

हे वालाजी! अब एक इच्छा यह है कि हम दोनों इस प्रकार कोलियां भरकर जोर लगाकर खेलें और देखें कौन हारता और कौन जीतता है?

Nijanand App

झलके झीणी रेतडी, नहीं कांकरडी लगार।
थाय रूडी इहां रामत, आपण रमिए आधार।। ९ ।।

बारीक रेत चमक रही है। जरा भी कंकड़ नहीं हैं। यहां यह खेल अच्छा होगा, इसलिए हे वालाजी! आओ हम खेलें।

सखियो तमे ऊभा रहो, जेवुं होय तेवुं केहेजो।
बंने लऊं अमें बाथडी, तमे साख ते सांची देजो।। १० ।।

दूसरी सखियों से श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि तुम सब खड़े होकर जैसा देखो वैसा कहना। हम दोनों एक दूसरे के गले में बाहें डालते हैं। तुम सच्ची गवाही देना।

दोडी लीधी कंठ बांहोडी, बंने करी हो हो कार।
सखियो मनमां आनंदियो, सुख देखी थयो करार।। ११ ।।

दौड़कर 'हो हो की आवाज' में दोनों ने एक-दूसरे के गले में हाथ डाल दिए। देखने वाली सखियों को यह रामत देखकर सुख मिला। मन को करार आया।

चरण आंटी भुज बंध वाली, कोई न नमे रे अभंग।
बाथो लिए बंने बल करी, रस चढतो जाय रंग।। १२ ।।

वालाजी ने और श्री इन्द्रावतीजी ने पैर से पैर अड़ा लिए हैं। बाजुओं को पकड़ रखा है। दोनों में से कोई झुकता नहीं है। दोनों ने ही ताकत के साथ कोली भर रखी है, जिससे आनन्द बढ़ता जाता है।

वालो बलाका देवाने, नीचा नमाव्या चरण।
हो हो वालाजी हारिया, हंसी हंसी पडे सहु धरण।। १३ ।।

वालाजी ने चकमा देने के लिए थोड़ा पैर नीचे झुकाया, तो सभी सखियां 'हो-हो' करके चिल्लाने लगीं। वालाजी हार गए—वालाजी हार गए। हंस-हंसकर सब धरती पर लोट-पोट होती हैं।

सखियो कहे अमे जीतियो, सुख उपनूं आसाधार।
ताली दई दई हरखियो, लडथडे पडे सहु नार।। १४ ।।

सखियां कहती हैं कि हम जीत गई और उन्हें अपार आनन्द हुआ। ताली बजा-बजाकर बहुत खुश हो रही हैं तथा लड़खड़ा कर धरती पर गिर रही हैं।

अणची कां करो रे सखियो, हूं जाणूं छूं तमारू जोर।
जीत्या विना एवडी उलट, कां करो एवडो सोर।। १५ ।।

वालाजी कहते हैं कि हे सखियो! मैं तुम्हारी ताकत जानता हूं। तुम बेइन्साफी (अन्याय) क्यों करती हो? बिना जीते ही इतनी उमंग से इतना शोर क्यों मचा रही हो?

हारया हारया अमने कां कहो, आवो लीजे बीजी बाथ।
जे हारसे ते हमणां जोसूं, तमे सांची केहेजो सहु साथ।। १६ ।।

'हार गए, हार गए' मुझे क्यों कहती हो? आओ दुबारा गले में बाहें डालकर यही रामत करें। जो हारेगा उसे अभी देख लेंगे। तुम सब मिलकर सच्ची गवाही देना।

Nijanand App

आवो वली बाथो बीजी लीजिए, एक पूठीने अनेक।
हमणां हरावुं तमने, वली हंसावुं वसेक।। १७ ।।

आओ दूसरी बार, एक नहीं अनेक बार यही रामत करें और अभी तुमको हराकर सभी को हंसाएं।

कहे इंद्रावती हूं बलवंती, सुणजो सखियो बात।
नेहेचे तमने ऊंचूं जोवरावुं, वली रामत करूं अख्यात।। १८ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे सखियो! मेरी बात सुनो, मैं बलवान हूं और बिना शक इसी रामत का खेल खेलकर तुमको मैं जीतकर दिखलाती हूं। अब ऐसी रामत खेलूंगी, जिसे आज तक कोई जानता ही नहीं है।

।। प्रकरण ।। ४१ ।। चौपाई ।। ८०२ ।।

छंदनी चाल

एणे समे रामत गमे, वालो विलसी लिए सोसी।
अधुरी मधुरी, अमृत घूटें, छोले छूटे लिए लूटे।। १ ।।
लथ बथ, हथ सथ, अंग संग, रंग बंग चंग, चोली चूथी,
भाजी भूसी, हांसी सांसी, जाणी पाणी, नैणी माणी,
वदू वाणी, रहोजी होजी, माजी काजी, भाखूं जाखूं,
रंगे राखूं, समारूं सिणगार जी।। २ ।।
वली वसेखे, राखूं रेखे, लेऊं लेखूं, जोऊं जोखूं,
प्रेमे पेखूं घसी मसी, आवी रसी, हंसी खसी वसी,
भीसी रीसी खीसी, जरडी मरडी, करडी खरडी।। ३ ।।
खंडी खांडी, छांडी मांडी, मेली भेली, भूमी चूंमी, गाली लाली,
लोपी चापी, लाजी भाजी, दाझी काढी, आंजी हांजी,
जीती जोपे, रूडी रीते, उठी इंद्रावती आ वार जी।। ४ ।।

।। प्रकरण ।। ४२ ।। चौपाई ।। ८०६ ।।

राग धन्या छंद

छेल छंछेरीने लीधी बाथ जुगते, रामत कीधी अति रंग जी।
स्याम सुंदरी बंने सरखी जोड, जाणिए एकै अंग जी।। १ ।।
वली रामत मांडी एक जुगते, जाणिए सघली अभंग जी।
रामत करतां आलिंघण लेतां, लटके दिए चुमन जी।। २ ।।
रमतां भीडे कठण कुचसों, छबकेसूं रंग लेत जी।
अमृत पिए वालोजी रमतां, अधुर इंद्रावती देत जी।। ३ ।।
अधुर लई मुख मांहें मारे वाले, आयत कीधी अपार जी।
भूखण उठया उठया अंगों अंगे, रहो रहो समरथ सार आधार जी।। ४ ।।

Nijanand App

रम्या रम्या मारा मारा वाला वाला, पाछी पाछी रामत कोय न रही।
हवे ने हवे आधार, आयत पूरण थई।। ५ ।।

सम सम दऊं दऊं स्याम स्याम सुणो सुणो, मम मम भीडो एणी भांत जी।
बोली बोली न न सकूं बलिया रे बलिया, पूरी पूरी मारी खांत जी।। ६ ।।

दई दई सम सम थाकी थाकी तमने, कां कां करो भीडा भीड जी।
आयत आयत आवे रे अंगो अंगें, त्यारे न देखो पीड जी।। ७ ।।

मन मन मनोरथ पूरया पूरया वाला वाला, वली वली लागूं पाय जी।
केही केही पेरे पेरे कहूं कहूं तमने, स्वांस स्वांस हैडे मुझाय जी।। ८ ।।

कर कर जोडी जोडी कहूं कहूं वाला वाला, वली वली मानज मांगूं जी।
मेलो मेलो मुखथी वात कहूं, नमी नमी चरणे लागूं जी।। ९ ।।

जेवी अमने आयत हुती, तमे तेवा रमाड्यां रंग जी।
साथ सकलमां एम सुख दीधां, इंद्रावती पामी आनंद जी।। १० ।।

।। प्रकरण ।। ४३ ।। चौपाई ।। ८१६ ।।

नोट—प्रकरण ।।४२।। और ।।४३।। श्री राजजी महाराज (पारब्रह्म अक्षरातीत) की स्वलीलाएं अद्वैत हैं, जिनका वर्णन करना या टीका लिखना शक्ति और बुद्धि से बाहर की बात है। अपनी आत्मा को जागृत बुद्धि के ज्ञान से परमात्मा में विलीन कर परमधाम की लीला का अनुभव करें। जिस लीला को अक्षर ब्रह्म ने मांगा था कि परमधाम के अन्दर की प्रेम लीला, जो अपनी रूहों से धनी करते हैं और जिसे वह आपसे करती हैं, उसे दिखाओ यह वह लीला है। इस संसार की संशय भरी बुद्धि और मन इसके पात्र ही नहीं हो सकते।

राग मलार

सखी सखी प्रते स्याम, वालेजीए देह धरया।
कांई वल्लभसूं आ वार, आनंद अति करया।। १ ।।

वालाजी ने एक-एक सखी के लिए एक-एक तन धारण किया है, जिससे इस बार आनन्द अत्यधिक हो गया।

मारा पूरण मनोरथ जेह, थया वरसूं मली।
कांई रही नहीं लवलेस, वालाजीसूं रंग रली।। २ ।।

वालाजी के मिलने पर हमारी चाहना पूर्ण हो गई है और वालाजी से आनन्द लेने की अब इच्छा शेष नहीं रही।

अमे जेम कह्यूं वाले तेम, कीधी रामत घणी।
हाम हुती हैडा माहें, वाले टाली अमतणी।। ३ ।।

हमने वालाजी से जैसा कहा, उन्होंने वैसा खेल खिलाया और हमारे हृदय की इच्छाओं को पूर्ण कर दिया।

Nijanand App

एणे समे जे सुख, थया जे साथमां।
कां जाणे वल्लभ, कां जाणे मारी आतमा।। ४ ।।

इस समय में जो सुख सखियों को मिला उसे वालाजी जानते हैं या मेरी आत्मा जानती है।

जेहेना मनमां जेह, उछाह हुता घणां।
सुख दीधां तेहेने तेह, पार नहीं तेहतणां।। ५ ।।

जिसके मन में जितनी उमंग थी, उसी के अनुसार वालाजी ने उसको वैसे ही बेशुमार सुख दिए।

एम रामत कीधी वन मांहें, रमीने आवियां।
ए सुख आ वन मांहें, भला भमाडियां।। ६ ।।

इस तरह से वन में रामतें खेलकर वापस आए (यमुना तट वापस आए)। इस वृन्दावन में अच्छे-अच्छे सुखदायी खेल खिलाए।

कहे इंद्रावती साथ, एणी वातो जेटली।
न केहेवाय कोटमों भाग, मारे अंग एटली।। ७ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि हे सुन्दरसाथजी! वालाजी की जितनी बातें मेरे अंग में हैं, उनका करोड़वां भाग भी वर्णन नहीं हो सकता है।

।। प्रकरण ।। ४४ ।। चौपाई ।। ८२३ ।।

राग गोडी–झीलणां

अणी हरि झीलण रंग सोहांमणां रे, आपण झीलसूं वालाजीने साथ।
रामत रमीने सहु आवियां, कांई पूरण थयो रंग रास।। १ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे सखियो! झीलने का आनन्द बड़ा सुहावना है। हम सब वालाजी के साथ झीलना करेंगे। रास पूरी हो गई है और हम सब रामतें खेल के आए हैं।

श्री राज कहे स्यामाजी सुणो, कांई तमारा मनमां जेह।
साथ सहुने मनोरथ, कांई रह्यो छे एक एह।। २ ।।

श्री राजजी कहते हैं, हे श्यामाजी! सुनो, तुम्हारे मन में तथा समस्त साथ के मन में, यह एक इच्छा बाकी है।

अंगे उमंग उपाइने, भेला नाहिए ते भली भांत।
झीलणां कीजे मन गमतां, खरी पूरूं तमारी खांत।। ३ ।।

अंग में उमंग भरकर हम अच्छी तरह से मिलकर नहाएं। आपके मन की इच्छा के अनुसार आपकी चाहना को झीलना करके मैं पूर्ण करूं।

वेलडिए कुसम प्रेमल, कांई वन झलूबे वाए।
फले रस चढया कै भांतना, भोम सोभा वाधंती जाए।। ४ ।।

बेल और फूलों की सुगन्ध से वन हवा में झूम रहे हैं। फल कई तरह के रसों से भरे हैं। इस तरह से इस धरती की शोभा बढ़ती जाती है।

Nijanand App

जल उछले उछरंगमां, लेहेरडियो लेहेर तरंग।
पसुपंखीना सब्द सुहामणां, कांई उलट पसरयो अंग।। ५ ।।

यमुनाजी का जल उछल रहा है। लहर पर लहर की तरंगें आ रही हैं। पशु-पक्षियों के शब्द सुहावने हैं। इस तरह से सब सखियों के अंग-अंग में पूरी मस्ती भर गई है।

साथ मलीने भेलो थयो, आव्यो ते आनंद मांहें।
अमें सखियो त्रट ऊपर, वालाजीनी ग्रही बांहें।। ६ ।।

सब सुन्दरसाथ मिलकर एकत्र हुए तथा आनन्द में आए। यमुनाजी के किनारे के ऊपर आने पर हम सखियों ने वालाजी की बांह पकड़ी।

वागा वधारीने कांठे मूकियां, कांई वस्तर पेहेरया झीलण।
सखी एक बीजीने आनंदमां, जल मांहें लागी ठेलण।। ७ ।।

वागा (पोशाक) वस्त्र उतार कर किनारे पर रख दिए और नहाने के वस्त्र पहन कर सखियां एक-दूसरे को बड़े आनन्द के साथ जल में धकेलने लगीं।

त्रट जोईने जलमां संचरया, साथ वालो स्यामाजी संग।
परियाणीने थया सहु जुजवा, जल मांहें कीजे आनंद।। ८ ।।

सब सखियों, श्यामाजी और वालाजी ने यमुनाजी के किनारे को देखकर जल में प्रवेश किया तथा जल में आनन्द करने के लिए सलाह करके सब अलग-अलग हो गए।

एकीगमां साथ स्यामाजी, कांई बीजी गमां प्राणनाथ।
क्रीडा कीजिए जलमां, विलसिए वालाजीने साथ।। ९ ।।

एक तरफ सखियां और श्यामाजी और दूसरी तरफ केवल श्री प्राणनाथ वालाजी। अब श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं—चलो, वालाजी के साथ जल में खेल का आनन्द लें।

जल उछाले उछरंगसूं, सहु वालाजीने छांटे।
वालोजी छांटे एणी विधसूं, त्यारे सर्व नासंतियो कांठे।। १० ।।

सखियां उमंग के साथ जल को वालाजी के ऊपर उछालती हैं। वालाजी इस तरह से जल उछालते हैं कि सब सखियां किनारे पर भागती हैं।

वली सामी थाय सखियो, जल छांटतियो छोले।
वालोजी उछाले जल जोरसूं, त्यारे नासंतियो टोले।। ११ ।।

सखियां फिर सामने आकर जल उछालती हैं। फिर से वालाजी इतनी जोर से जल उछालते हैं कि सखियां टोली-टोली होकर भागती हैं।

वली आवतियो उमंगसूं, वालो वीट्यो ते चारे गंम।
सूझे नहीं कांई जल आडे, आंखे आवी गयो छे तम।। १२ ।।

फिर से उमंग में भरकर सखियां आती हैं और वालाजी को चारों ओर से घेर लेती हैं। उछाले हुए जल की आड़ में सबकी आंखों के सामने अंधेरा हो गया और कुछ दीखता नहीं है।

Nijanand App

एणे समे हवे जे थयूं, बाई इंद्रावतीनूं काम।
विध विध विलसी वरसूं, भाजी हैडानीं हाम।। १३ ।।

इस समय श्री इन्द्रावतीजी ने वालाजी के साथ तरह-तरह के आनन्द करके हृदय की कामना पूर्ण की।

एम जल क्रीडा करी, पछे नाह्या ते पिउजी।
घणां रस लीधां अंग चोलतां, वालैयाने विलसी।। १४ ।।

तरह-तरह से जल के खेल करने के बाद वालाजी ने स्नान किया। श्री इन्द्रावतीजी ने वालाजी को मल-मलकर नहलाने का आनन्द लिया।

स्यामाजीने नवराविया, पेरे पेरे ते घणी प्रीत।
साथ सहु एणी विधे, कांई नाह्यो छे रूडी रीत।। १५ ।।

इसी तरह से श्यामाजी को तरह-तरह से बड़े प्यार से नहलाया। सब सखियों ने भी इस प्रकार अच्छी रह से नहाया।

सुंदरबाई इंद्रावती, कांई रत्नावती संग।
लालबाई पेहेले निसर्यां, सिणगार कीधां सर्वा अंग।। १६ ।।

सुन्दरबाई, इन्द्रावती, रतनावती तथा लालबाई पहले निकलीं और अपना श्रृंगार किया।

वस्तर भूखण स्यामाजीने, पेहेराव्या भली भांत।
अधवीच आवीने वालैए, वेण गूंथी करी खांत।। १७ ।।

इन चारों सखियों ने श्यामाजी को वस्त्राभूषण अच्छी तरह से पहनाए। इसी बीच में वालाजी ने आकर श्यामाजी की चोटी गूंथी।

सिणगार सर्वे सजी करी, स्यामाजी घणूं सोहे।
दरपण लईने हाथमां, मन वालानूं मोहे।। १८ ।।

इस तरह से पूरा श्रृंगार सजने पर श्यामाजी अति शोभायमान हैं। वह हाथ में दर्पण लेकर वालाजी का मन मोहती हैं। चोटी गूंथने के समय वालाजी तथा श्यामाजी का मुख दर्पण में दिखाई देता है।

आसबाई कमलावती, कांई फूलबाई मल्या।
चंपावती चारे मली, सिणगार कीधां भेला।। १९ ।।

आसबाई, कमलावती, फूलबाई और चम्पावती इन चारों ने मिलकर एक साथ अपना श्रृंगार किया।

चार सखी मली श्रीराजने, कराव्या सिणगार।
वस्तर भूखण विधोगते, कांई सोभ्या ते प्राण आधार।। २० ।।

इन चारों सखियों ने मिलकर श्री राजजी को श्रृंगार कराया। वस्त्राभूषण पहन कर श्री राजजी महाराज शोभायमान हैं।

एक बीजीने कराविया, सिणगार ते सर्वे एम।
चितडू दईने में जोइयूं, कांई साथनो अतंत प्रेम।। २१ ।।

सखियों ने एक-दूसरे को इस प्रकार से श्रृंगार कराया। श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि मैंने ध्यान से सुन्दरसाथ के अत्यन्त प्रेम को देखा।

Nijanand App

परसेवे वस्तर साथना, नाहवा समे उतारया जेह।
श्री राज बेठा तेह ऊपर, तमे प्रेम ते जो जो एह।। २२ ।।

सुन्दरसाथ ने नहाते समय पसीने के जो वस्त्र उतारे थे, श्री राजजी महाराज उनके आसन पर विराजमान हुए। श्री राजजी महाराज के इस प्रेम को तो देखो।

जमुनाजीने कांठडे, कांई द्रुमवेलीनी छांहें।
साथ सहु मलीने सामटो, कांई आव्यो ते आनंद मांहें।। २३ ।।

यमुनाजी के किनारे पेड़ों और लताओं की छाया में सब सखियां आनन्द भरी इकट्ठी हुईं।

बेठा मली आरोगवा, कांई सोभित जुजवी पांत।
सो सखी सों इंद्रावती, थया प्रीसने भली भांत।। २४ ।।

इसके बाद अलग-अलग पंक्तियों में आरोगने के लिए बैठ गईं तथा श्री इन्द्रावतीजी सौ सखियों के संग परोसने के लिए तैयार हो गईं।

।। प्रकरण ।। ४५ ।। चौपाई ।। ८४७ ।।

राग वेराडी-भोग

फरतण फेर बाजोटिया, रंग पाकी परवाली।
कांबी पडगी जे कांगरी, जाणे रहिए निहाली।। १ ।।

पहलदार पक्के मूंगिया रंग की चौकी है, जिसके किनारे पर कांगरी की शोभा ऐसी बनी है, जो देखते ही बनती है।

चारे गमां वाल्या चाकला, बेठां वाली पलाठी।
सोभा मारा वालाजीनी सी कहूं, जे आतमाए दीठी।। २ ।।

चारों तरफ चाकला (आसन) बिछे हैं। जिस पर वालाजी पालथी (चौकड़ी) मारकर बैठे हैं। अपने वालाजी की शोभा जो मैंने अपनी आत्मा से अनुभव की, वह कहने में नहीं आती है।

श्रीठकुराणीजी श्रीराजसों, भेलां बेसे सदाय।
आसबाई सुंदरबाई, बेठा एणी अदाय।। ३ ।।

श्री ठकुरानीजी श्री राजजी के साथ सदा ही बैठती हैं। ऐसी अदा से आसबाई, सुन्दरबाई बैठी हैं।

हाथ पखाल्या पात्रमां, जुजवी जुगते।
पासे साथ बेठो मली, सहु कोय एणी विगते।। ४ ।।

एक पात्र के अन्दर विशेष युक्ति से उनके हाथ धुलवाए, पास में जो सखियां बैठी थीं, सभी ने इस तरह से हाथ धोए।

ऊपर वन रंग छाइयो, जाणे मंडप रचियो।
प्रीसणे साथ जे हुतो, ते तो रंग मांहें मचियो।। ५ ।।

ऊपर वन की छाया इस प्रकार छाई है जैसे मण्डप बना हो। परोसने वाले सुन्दरसाथ आनन्द में आ गए (तैयार हो गए)।

Nijanand App

थाली धात वसेकनी, जुगते अजवाली।
लाल जडाव लोटे जल, लई प्रेमे पखाली।। ६ ।।

थाली वहां विशेष धातु की है। इसे अच्छी तरह से साफ किया गया है। लाल नगों से जड़े लोटे में जल है, जिससे बड़े प्रेम से थाली धोई।

वाटका फूल कचोलियां, ते तो जुगते जडिया।
अजवालीने पखालिया, थाली माहें मलिया।। ७ ।।

फूल (कांसा) की धातु का वाटका (कटोरा) और कटोरी हैं। यह नगों से जड़ी हैं। इनको धोकर थाल में रखा।

वली नितारी अजवालिया, रूमाल संघातें।
प्रीसे छे सारी सूखडी, विध विध कई भांते।। ८ ।।

बर्तनों में लगे पानी को गिराकर रूमाल से पोंछा और कई कई प्रकार से मिठाई (सुखडी) परोसती हैं।

बाई भागवंती भली पेरे, प्रीसे सूखडी सारी।
कहूं केटली घणी भांतनी, सर्वे मूकी संभारी।। ९ ।।

भागवन्तीबाई, भली-भांति अच्छी सुखडी परोसती है। सुखडी कई किस्म की हैं, जिन्हें संभाल कर परोसती है।

पकवान सर्वे प्रीसी करी, साक मूक्यां छे घणां।
कंदमूल भांत भांतनां, अलेखे अथाणां।। १० ।।

विविध प्रकार के पकवान परोस कर, बहुत से साग (सब्जियां) जिनमें तरह-तरह के कन्दमूल हैं तथा बहुत प्रकार के अचार हैं।

साक ते सूकवणी तणां, कई सेक्यां सुतलियां।
विध विध मेवा वन फल, अति उत्तम गलियां।। ११ ।।

कई साग सूखे हैं, कई साग तले हैं तथा कई साग सेके हैं। तरह-तरह के मेवा, पके हुए वन फल परोसे।

आरोग्या अति हेतसों, राज साथ संघाते।
प्रीसंतां प्रेम जो में दीठो, ते न केहेवाय भांते।। १२ ।।

श्री राजजी तथा सब सुन्दरसाथ ने प्रेम से आरोगा। परोसने में जो प्रेम देखा वह कहने में नहीं आता।

कंचन रंग झारी भरी, जल विच मांहें लीधो।
श्री इंद्रावतीजी ने कोलियो, श्री राजे मुख मांहें दीधो।। १३ ।।

सोने के रंग की झारी पानी से भरी है, जिससे अधबीच में जल पिया तथा श्री राजजी ने अपने हाथ से एक (गिराही, गिरास) कौर श्री इन्द्रावतीजी के मुख में दिया।

हरख थयो जे एणे समे, साथे सहु कोइए दीठो।
हसियां रमियां साथसो, घणो लाग्यो छे मीठो।। १४ ।।

इस समय सबको बड़ी हंसी आई और सभी ने देखा। सबके साथ हंसते-खेलते बड़ा अच्छा लगा।

Nijanand App

आरोग्या आनंदसों, जेणे जे भाव्यां।
दूध दधी ते ऊपर, लाडबाई लई आव्यां।। १५ ।।

जिसको जो कुछ अच्छा लगा, सभी ने आनन्द से आरोगा। इसके बाद दूध और दही लेकर लाडबाईजी आ गईं।

ते लीधां चल्लू कराविया, बेठा वांसे तकियो दई।
थाल बाजोट उपाडियां, लोयुं मुख रुमाल लई।। १६ ।।

उन्होंने आकर चुल्लू कराया। तब सब तकियों का सहारा लेकर बैठ गए। थाली व चौकियां उठा ली गईं तथा रूमाल से मुख पोंछा।

फोफल काथो चूना जावंत्री, केसर कपूर घाली।
ऊपर लवंग दई करी, पान बीडी वाली।। १७ ।।

सुपारी, कत्था, चूना, जावित्री, केसर, कपूर तथा ऊपर से लौंग लगाकर पान के बीड़े लगाए।

बीडी ते लई आरोगिया, वली लीधी सहु साथ।
साथ हुतो जे प्रीसणे, सखियोने प्रीसे प्राणनाथ।। १८ ।।

श्री राजजी महाराज ने पान बीड़ा आरोगा। सब सुन्दरसाथ ने भी पान बीड़ा लिया। जो सुन्दरसाथ परोस रहे थे, उनको अब प्राणनाथ स्वयं परोस रहे हैं।

आरोग्या सहु अति रंगे, बीडी लीधी श्री मुख।
बेठा मली वातो करवा, वाणी लेवा सुख।। १९ ।।

सब सखियों ने बड़े आनन्द से आरोगा और पान बीड़ा लिया। इसके बाद सब मिलकर बातें करने बैठे और वचनों का आनन्द लेने लगे।

कहे इंद्रावती साथजी, वाले विलास जो कीधा।
चढी आव्या अंग अधिका, वचे व्रह जो दीधा।। २० ।।

इन बातों में विलास और बीच में जो वियोग अन्तर्ध्यान का हुआ था, श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, वह याद आ गया।

।। प्रकरण ।। ४६ ।। चौपाई ।। ८६७ ।।

राग श्री गोडी रामग्री

वाला वालमजी मारा, जीरे प्रीतम अमारा।। टेक ।।
तमे रामत रंगे रमाडियां, पण सांभलो मारी वात।
अम ऊपर एवडी, तमे कां कीधी प्राणनाथ।। १ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं कि हे मेरे प्यारे वालाजी! आपने हमें बड़े आनन्द से रामतें खिलाईं, परन्तु हमारी बात भी सुनो। आपने हमारे साथ ऐसा क्यों किया?

अवगुण एवडा अमतणां, किहां हुता वालम।
एम अमने एकलां, मूकी गया वृंदावन।। २ ।।

हे धनी! इतना बड़ा अवगुण हमारे में कहां था? जिससे आप हमें वृन्दावन में अकेला छोड़कर चले गए।

Nijanand App

तमे अमथी अलगां थया, त्यारे व्रह थयो अति जोर।
तमे वनमां मूकी गया, अमे कीधा घणां बकोर॥ ३ ॥

जब आप हमसे अलग हुए थे तो आपका विरह बहुत बढ़ गया। आप तो हमें वन में छोड़कर चले गए, पर हम बहुत रोए-चिल्लाए।

तम विना जे घडी गई, अमे जाण्यां जुग अनेक।
ए दुख मारो साथ जाणे, के जाणे जीव वसेक॥ ४ ॥

हे वालाजी! आपके वियोग में हमारा एक-एक पल अनेक युगों की तरह बीता। इस दुःख को मेरा जीव ही जानता है तथा हमारी सब सखियां जानती हैं।

ए दुखनी वातो केही कहुं, जीव जाणे मन मांहें।
जे अम ऊपर थई एवडी, त्यारे तमे हुता क्यांहें॥ ५ ॥

हे वालाजी! इस दुःख की बात कैसे कहूं? मेरा जीव मन में अनुभव करता है। हमारे ऊपर ऐसी बीती, उस समय आप कहां थे?

हवे न मूकूं अलगो वाला, पल मात्र तमने।
तमारा मनमां नहीं, पण दुख लाग्युं अमने॥ ६ ॥

हे वालाजी! अब आपको एक पल के लिए नहीं छोड़ूंगी। आपके मन में तो कुछ नहीं है, परन्तु हमें तो दुःख हुआ है।

पालखी अमे करूं रे वाला, तमे बेसो तेहज मांहें।
अमें उपाडीने चालिए, हवे नहीं मूकूं खिण क्यांहें॥ ७ ॥

हे वालाजी! हम बांहों की पालकी बनाते हैं। उसमें आप बैठ जाइए। हम उठाकर चलेंगे और तुम्हें एक पल के लिए भी छोड़ेंगे नहीं।

हूं अलगो न थाऊं रे सखियो, आपणी आतमा एक।
रामत करतां जुजवी, कांई दीसे छे अनेक॥ ८ ॥

वालाजी ने कहा, मैं किसी भी तरह से सखियों से अलग नहीं होता हूं। अपनी आत्मा एक है, खेलने में हम अलग-अलग दिखाई देते हैं।

सखियो वात हूं केही कहुं, जीव मारो नरम।
वल्लभ मारा जीवनी प्रीतम, अलगी करूं हूं केम॥ ९ ॥

हे सखियो! मैं तुमसे क्या बात कहूं? तुम मेरे प्राण के प्रीतम हो। मेरा जीव भी अति कोमल है। मैं तुमसे अलग कैसे हो सकता हूं?

तमथी अलगो जे रहुं, ते जीव मारे न खमाय।
एक पलक मांहें रे सखियो, कोटानकोट जुग थाय॥ १० ॥

वालाजी कहते हैं, यदि मैं तुमसे अलग रहूं तो मेरा जीव यह सहन नहीं कर सकता। वियोग का एक पल करोड़ों युगों के समान होता है।

Nijanand App

विरह तमने दोहेलो लागे, मूने तेथी जोर।
मुख करमाणां नव सहुं, तो केम करावुं बकोर।। ११ ।।

हे सखियो! तुमको मेरा वियोग दुःखदाई लगा। मुझे तो उससे भी अधिक दुःखदाई लगा। मैं तो तुम्हारे मुरझाए मुख को भी नहीं सहन कर सकता, तो इतने जोर से कैसे रुलाऊंगा?

जेम कहो तेम करूं रे सखियो, बांध्या जीव जीवन।
अधखिण अलगो न थाऊं, करार करो तमे मन।। १२ ।।

हे सखियो! तुम जैसा कहो, वैसा करूं। मेरा जीव तुम्हारे जीवन से बंधा है। मन में विश्वास रखो कि मैं आधे पल के लिए भी तुमसे जुदा नहीं हो सकता।

एवडा दुख ते कां करो, हूं दऊं एम केम छेह।
तमे मारा प्राणनां प्रीतम, बांध्या जे मूल सनेह।। १३ ।।

हे सखियो! तुम इतना दुःखी क्यों होती हो? मैं तुम्हें ऐसे कैसे छोड़ दूंगा? हमारा तुम्हारा सम्बन्ध मूल से है। तुम तो मेरे प्राणों की प्यारी हो।

प्राणपे वल्लभ छो मूने, एम करूं हूं केम।
में वृंदावन मूक्यूं नथी, तमे कां कहो अमने एम।। १४ ।।

हे सखियो। तुम तो मेरे प्राणों से भी प्यारी हो। मैं ऐसे कैसे कर सकता हूं? मैंने तो वृन्दावन छोड़ा ही नहीं, तुम मुझे ऐसा क्यों कहती हो?

चित ऊपर चालूं रे सखियो, तमे मारा जीवन।
जेम कहो तेम करूं रे सुन्दरी, कां दुख आणो मन।। १५ ।।

हे सखियो! तुम मेरा जीवन हो। तुम्हारी इच्छा के अनुसार ही चलता हूं। अब जैसा कहो, वैसा मैं करूं। तुम मन में दुःख क्यों लाती हो?

आतमना आधार छो मारा, जीवसूं जीव सनेह।
करूं वात जीवन सखी, मुख मांहेंथी कहो जेह।। १६ ।।

हे सखियो! तुम मेरी आत्मा के आधार हो। मेरा जीव तुम्हारे जीव के साथ प्रेम से बंधा है। इसलिए, हे जीवन सखी! तुम मुख से जो कहोगी वह बात मैं करूंगा।

में तां एम न जाण्यूं रे वाला, करसो एम निघात।
नाहोजी हूं तो नेह जाणती, आपण मूल संघात। १७ ।।

सखियां कहती हैं, वालाजी! हमने तो ऐसा नहीं समझा था कि आप हमको ऐसी ठेस लगाओगे। हे प्रीतम! मैं तो अपने मूल का सम्बन्ध जानकर ही प्यार करती थी।

एम आंखडी न चढाविए तेने, जे होय पोतानो तन।
जाणिए मेलो नथी जनमनो, उथले रास वचन।। १८ ।।

जो अपना ही तन हो उसके ऊपर आंख नहीं चढ़ानी चाहिए। ऐसे लगता है हमारा और आपका जन्म का सम्बन्ध नहीं था। तभी तो आपने उलाहना के वचन कहे।

Nijanand App

अमे तूंने जोपे जाणूं, बीजो न जाणे जंन।
अमसूं छेडा छोडीने ऊभा, जाणिए नेह निसंन।। १९ ।।

आपको हम अच्छी तरह जानते हैं। दूसरा कोई नहीं जानता। आप हमसे वैसे पल्ला छुड़ाकर ऐसे खड़े हो गए, जैसे बालक खेल में प्रेम तोड़ देते हैं।

सांभलो सखियो वात कहूं, में जोयूं मायानूं पास।
केम रमाय रामत रैणी, मन उछरंगे रास।। २० ।।

हे सखियो! मैं एक बात कहता हूं, सुनो। मैंने देखा था कि तुम्हारे अन्दर माया का असर तो नहीं है, अन्यथा मन में उमंग भरकर रात में रास कैसे खेलते?

ते माटे बोल कह्या में कठण, जोवाने विस्वास।
नव दीठो कोई फेर चितमां, हवे हूं तमारे पास।। २१ ।।

तुम्हारा विश्वास आजमाने के लिए ही मैंने कठिन वचन बोले थे। तुम्हारे मन में किसी प्रकार का बदलाव नहीं देखा। अब मैं तुम्हारे पास ही हूं।

एनो तमे जवाब दीधो, केम रोतां मूक्यां वन।
नहीं विसरे दुख ते विरह ना, अमने जे उतपन।। २२ ।।

हे वालाजी! आपने हमें रोता हुआ वन में क्यों छोड़ा? इसका आपने जवाब दे दिया है, किन्तु हमें जो वियोग का दुःख हुआ, वह नहीं भूलता है।

घणूज साले विरह वालैया, जे दीधूं तमे अमने।
केटली वात संभारूं दुखनी, हवे सूं कहूं तमने।। २३ ।।

हे वालाजी! विरह का दुःख जो आपने हमें दिया, वह बहुत ही सताता है। दुःख की बातें मैं आपसे कितनी याद करके कहूं?

कां जाणो एवडो अन्तर, हूं अलगो न थाऊं।
तमने मेली वनमां, हूं ते किहां जाऊं।। २४ ।।

वालाजी कहते हैं कि आपको छोड़कर भला मैं कहां जाऊंगा? तुमने इतना अन्तर क्यों समझ लिया है? मैं अलग नहीं होऊंगा।

विरह तमारो नव सहूं, गायूं तमारूं गाऊं।
अंग मारूं अलगूं न करूं, प्रेम तमने पाऊं।। २५ ।।

वालाजी कहते हैं कि जो तुमने हमसे कहा है, वही मैं तुमसे कह रहा हूं कि तुम्हारा वियोग मेरे से भी सहन नहीं होता। मैं अपने आपको तुमसे कभी अलग न करूंगा और तुम्हें प्रेम करूंगा।

अमे ठाम सघला जोया रे वाला, क्यांहें न दीठो कोय।
जो तमे हुता वनमां, तो विरह केणी पेरे होय।। २६ ।।

हे वालाजी! हमने सारी जगह देखा और कहीं कोई दिखाई नहीं दिया। यदि आप वन में होते तो हमको बिछुड़ने का दुःख क्यों होता?

Nijanand App

वन वेलडियो जोई सर्वे, घणे दुखे घणूं रोय।
घणी जुगते जोयूं तमने, पण केणे न दीठो कोय।। २७ ।।

हमने वन की सभी बेलों को देखा और बड़े दु:ख के साथ रोए। बड़ी युक्ति से आपको ढूंढ़ा, पर आप किसी को दिखाई नहीं दिए।

तमे कहो छो वनमां हुता, तो कां नव लीधी सार।
अमे वन वन हेठे विलखियो, त्यारे कां नव आव्या आधार।। २८ ।।

आप कहते हो कि मैं वन में था, तो आपने हमारी खबर क्यों नहीं ली? हम वन में भटक-भटक कर रोते रहे, फिर वालाजी! आप क्यों नहीं आए?

जो तमे न होता वेगला, तो कां नव सुणी पुकार।
अमने देखी रोवंतां, केम खम्या एवडी वार।। २९ ।।

जब आप हमसे अलग नहीं थे, तो आपने हमारी आवाज क्यों नहीं सुनी? हमको रोता देखकर इतनी देर तक आपने सहन कैसे किया?

बोल्यो ते सर्वे वात झूठी, वनमां न हुता निरधार।
नेहेचे जाणूं नाहोजी, तमे झूठा बोल्या अपार।। ३० ।।

हे वालाजी! आप निश्चित ही वन में नहीं थे। आपकी सब बातें झूठी हैं। मैं अच्छी तरह जानती हूं कि आप अधिक झूठ बोल रहे हो (बहुत झूठे हो)।

जो विरह अमारो होय तमने, तो केम बेसो करार।
तम विना खिण जुग थई, वन भोम थई खांडा धार।। ३१ ।।

हे वालाजी! यदि आपको हमारे वियोग का दु:ख होता, तो आप चैन से नहीं बैठते। आपके बिना एक पल एक युग के समान बीता और यह धरती तलवार की धार बन गई।

दाझ घणी थई देहमां, लागी कालजडे झाल।
जाणूं जीव नहीं रेहेसे, निसरसे तत्काल।। ३२ ।।

हे वालाजी! हमारे हृदय में आग (विरह की) लगी थी, जिससे हमारा शरीर झुलस रहा था। लगता था कि जीवन नहीं रहेगा। तुरन्त प्राण निकल जाएंगे।

एवो विरह खमी रह्यो, में जाणूं जीवनी नाल।
आसा अमने नव मूके, नहीं तो देह छाडूं तत्काल।। ३३ ।।

हे वालाजी! हमने आत्मा का मूल सम्बन्ध जानकर ही आपका इतना वियोग सहन कर लिया। हमको आशा नहीं छोड़ रही थी (मिलने की आशा थी), अन्यथा तुरन्त शरीर छोड़ देते।

तमे केहेसो जे एम कहे छे, नेहेचे जाणो जीव माहें।
तमारा सम जो तम विना, एक अधखिण में न खमाए।। ३४ ।।

हे वालाजी! तुम कहोगे कि ऐसे कहते हो। इस बात को निश्चित रूप से आप जीव में जानें कि आपके वियोग का आधा क्षण भी सहन नहीं होता। मैं आपकी कसम खाकर कहती हूं।

Nijanand App

सखियो तमे साचूं कह्युं, ए वीती छे मूने वात।
तमने विरह उपनूं मारो, हूं कहूं तेहेनी भांत।। ३५ ।।

वालाजी कहते हैं कि सखियो! तुमने सत्य कहा है। ऐसी मुझ पर भी बीती थी। तुमको हमारे वियोग का दु:ख लगा। उसकी हकीकत बताता हूं।

आपण रंग भर रमतां, बिरिख आडो आव्यो खिण एक।
तमे प्रेमे जाण्यूं कई जुग वीत्या, एम दीठां दुख अनेक।। ३६ ।।

वालाजी कहते हैं कि हम जब आनन्द में खेल रहे थे, तब हमारे तुम्हारे बीच में एक पल के लिए पेड़ आ गया। तुमने जाना अनेक युग बीत गए और इस तरह से बहुत दु:ख देखे।

ज्यारे पसरी जोगमाया, में इछा कीधी तमतणी।
हूं वेण लऊं तिहां लगे, मुझपर थई घणी।। ३७ ।।

जैसे ही योगमाया का विस्तार हुआ, मुझमें भी तुम्हें पाने की लालसा ने बल पकड़ा। बंसी को हाथ में लेने तक जितनी देर लगी, क्या कहूं मुझ पर क्या बीती? इसमें इतना समय बीत गया।

एक पल मांहें रे सखियो, कलप अनेक वितीत।
ए दुख मारो जीव जाणे, सखी प्रेमतणी ए रीत।। ३८ ।।

हे सखी! प्रेम की यही रीति है। प्रेम में एक पल के वियोग में अनेक कल्प बीत गए, ऐसा लगता है। इस दु:ख को मेरा जीव ही जानता है।

भीडी ते अंग इंद्रावती, सखी कां करो तमे एम।
जीवन मारा जीवनी, दुख करो एम केम।। ३९ ।।

वालाजी ने तुरन्त श्री इन्द्रावतीजी को चिपटा लिया और कहा कि सखी! तुम ऐसा क्यों करती हो? तुम तो हमारे जीव का जीवन हो। ऐसे क्यों दु:खी होती हो?

चित चोरी लीधूं दई चुमन, सखी कहो करूं हूं तेम।
मारा जीव थकी अलगी नव करूं, जुओ अलवी थैयो जेम।। ४० ।।

वालाजी ने श्री इन्द्रावतीजी को चुम्बन देकर चित्त को हर लिया और कहा, सखी! तुम जैसा कहो मैं वैसा ही करूंगा। देखो, हम कैसे अलग हो गए थे।

सखियो मारी वात सुणो, कां करो ते एवडो दुख।
पूरूं मनोरथ तमतणां, सघली वाते दऊं सुख।। ४१ ।।

हे सखियो! मेरी बात सुनो। ऐसा दु:ख क्यों करती हो? मैं तुम्हारी मनोकामनाओं को पूर्ण करूंगा तथा हर प्रकार से सुख दूंगा।

मारूं अंग वालूं तमतणे, वचन वालूं जिभ्या मुख।
बोलावुं ते मीठे बोलडे, जोऊं सकोमल चख।। ४२ ।।

मैं अपने अंग तुम्हारी तरफ झुकाता हूं तथा जिह्वा और मुख से कहे वचनों को वापस लेता हूं। आगे मधुर बोली बोलूंगा और प्यार भरे नैनों से देखूंगा।

Nijanand App

हवे वाला हूं एटलूं मांगूं, खिण एक अलगां न थैए।
जिहां अमने विरह नहीं, चालो ते घर जैए।। ४३ ।।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे वालाजी! मैं इतना ही मांगती हूं कि आप हमसे एक पल के लिए भी अलग न हों और जहां हमें आपके बिछुड़ने का दुःख न हो उस घर में ले चलें।

मांगी दुख सुखनी रामत, ते वाले कीधी आवार।
मन चित रंगे रमाड्यां, कांई आपणने आधार।। ४४ ।।

हमने (परमधाम में) सुख और दुःख का खेल मांगा था। उसे वालाजी ने इस बार दिखाया तथा मन-चित्त से अपने वालाजी ने खेल खिलाया।

वृंदावन देखाड्यूं, रास रमाड्यां रंग।
पूर्व जनमनी प्रीतडी, ते हमणां आणी अंग।। ४५ ।।

वृन्दावन दिखाया तथा आनन्द से भरी रास रामतें खिलाईं। मूल सम्बन्ध अब यहां आकर पूरा किया।

इंद्रावती कहे अमने वाला, भला रमाड्यां रास।
पछे ते घर मूलगे, वालो तेडी चाल्या सहु साथ।। ४६ ।।
वाला वालमजी मारा, जी रे प्रीतम अमारा।

श्री इन्द्रावतीजी कहती हैं, हे वालाजी! आप हमारे प्रीतम हैं। आपने अच्छी रास रामत खिलाई। इसके बाद सखियों को बुलाकर वालाजी अपने मूल घर (परमधाम) को ले चले हैं।

|| प्रकरण || ४७ || चौपाई || ९१३ ||

।।रास-इंजील सम्पूर्ण।।

Nijanand App